



भूमिका ।

श्रीमद्दुगडगोत्रस्यपुण्ययशो धीरदासाभिधस्य पुत्रोमहनीयकीर्त्तिबुधसिंहनामधेयआसीत् " तत्सूनुर्गुणवा न्वहान्यश्रीप्रतापसिंहोभवत्,, तस्यचभार्याद्वतस्त्रआसन्,, तासुचयाकनीयसीसती, तस्या कनीयान्सुतो ऽ सर्कोतिधार्मिकाग्रणीर्धीमान् दातागुणग्रामणी रायबहादुरेतिसुप्रसिद्धोधनपतिसिंहोवरीवर्त्ति ,, सचलोकोपकृ त्यैशुभस्य जैनागमसङ्ग्रहस्य मूलानि पठचग्रतपुस्तका समुद्राप्यित्वा तावत्सुबस्थलेषु तावन्त्येवपुस्तकाग्रा णि आर्पितवान्, येन सत्साधव श्रावका अनायासेन पठन पाठन च कुर्वन्तु, जिनशासनं वसुधायां स्थि रतिष्ठतु, विज्ञानद्धिरस्त्वसौच्छ्रया, तस्य जैनागमसङ्ग्रहस्य चतुर्विंशिभागप्रारम्भत्रयस्त्रिंशभागपर्यन्तो दशभि र्गोंगे संयुतो दशपयन्नाभिधआगम मूलाक्षरैःसोप्रकाक्षरैःसंशोध्यसमुद्रित , अस्यभागाश्चेमे, तन्दुलवयालो २४ देविंदत्थव २५ गणिविज्ज २६ चउसरण २७ संथार २८ आउर पच्चक्खाण २९ महापरिन्नान ३० चंद वि‍ज्झ ३१ महापच्चक्खाण ३२ मरणसमाहि‍सत्तका ॥

॥०॥ॐ॥ नम ॥ निज्जरियजरामरणं वंदित्ता जिणवरं महावीरं । वुच्छं पइन्नगमिणं तंदुलवेयालिगनाम ॥ १ ॥
सुणह गणिए दसदसावासस याउस्स जह विभज्जति संकलिए वोगसिए जंथायसेसं पहोइ ॥ २ ॥ जत्तियमित्ते दिवसे अंति
वराहं मणुस्साणं गब्भंमि वसइ जीवो आहारविहिं च वुच्छामि ॥ ३ ॥ दोन्नि अहोरत्तसए सपुन्ने सत्तहत्तरिं चेव गब्भं
मि वसइ जीवो अद्धमहोरत्तमन्नं च ॥ ४ ॥ एए उ अहोरत्ता नियमा जीवस्स गब्भवासंमि हीणाहिया उ इत्तो उवघायवसे
ण जायंते ॥ ५ ॥ अट्ठसहस्सा तिन्नि उ सया मुहुत्ताण पन्नवीसाए गब्भगओ वसइ जीवो नियमा हीणाहिया इत्तो ॥ ६ ॥
तिन्नेव य कोडीओ चउदस य हवंति सयसहस्साइं दस चेव सहस्साइं दोन्नि सया एपन्नवीसाए ॥ ७ ॥ उस्सासा निस्सासा इ
त्तिय मित्ता हवंति संकलिया जीवस्स गब्भवासे नियमा हीणाहिया इत्तो ॥ ८ ॥ आउसो इत्थीए नाभिहिट्ठा सिराजुगं
पुप्फनालियागारं तस्स य हिट्ठा जोणी अहोमुहा संठिया कोसा ॥ ९ ॥ तस्स य हिट्ठा चूयस्स मंजरी तारिसा उ मंसस्स ते
रिउकाले फुडिया सोणियलवया विमोयंति ॥ १० ॥ कोसायारा जोणी संपत्ता सुक्कमीसिया जइया तइया जीवुववाए जो
ग्गा भणिया जिणिंदेहिं ॥ ११ ॥ बारस चेव मुहुत्ता उवरिं विद्धंसं गच्छई सा उ जीवाण परिसंखा लक्खपुहुत्तं च उक्कोसं ॥ १२ ॥
पणपन्नाय परेणं जोणी पमिलायए महिलियाणं पणसत्तरीय परउ पाएण पुमं भवे बीउ ॥ १३ ॥ वाससयाउयमेयं परेण
जा होइ पुव्वकोडीओ तस्सद्धे अमिलाया सव्वाउयवीसभागो उ ॥ १४ ॥ रत्तुक्कडा य इत्थी लक्खपुहुत्तं च बारस मुहुत्ता पिउसं

सस्ससयमुक्कस्सं बारसवासाउगब्भस्स १५॥ दाहिणकुच्छीपुरीसस्सहोइ वामायइत्थियज्जाएहोउभयंतरेनपुंसेतिरिएअठ
वरिसाइ १६॥ इम्मोखलुजीवो अम्मापियोसयोगे माउउयंपिउसुक्कंततदुभयसंसठकलुसंकिब्बिसतप्पढमयाए १७॥
आहारआहारित्तागब्भत्ताए वक्कमइ सत्ताहकललहोइ सत्ताहहोइअब्बुयं अब्बुयाजायए पेसीपेसीउविघणभवे १८॥
सोपढमेमासेकरिसं ऊणपलंजायइ बीएमासेपेसीसंजायएघणातइए मासेमाउएडोहलजणइ ॥ १९ ॥ चउत्थेमासे
माऊए अंगाइपीणइ पंचमेमासपंचपिंडियाउपाणिपायसिरचेवनिव्वतेइ ॥ २० ॥ छठेमासपित्तसोणिय उवचि
णेइ सत्तमेमासेसत्तसिरासयाइं पंचपेसीसयाइ नवधमणीउनवनउयंचरोमकूवसयसहस्साइनिवत्तेइ ॥ २१ ॥
विणकेसमंसुणाअद्धकेसमसुणा अद्धुठाउरोमकूवकोडिउनिवत्तइ अठमेमासेवित्तीकप्पोहवइ ॥ २२ ॥ जीवस्सणं
भंत । गब्भगयस्ससमाणस्स अत्थिउच्चारेइवा पासवणेइवा खेलेइवा सिंघाणेइवा वंतेइवा पत्तेइवा सुक्केइवा
सोणिएइवा नोइणठेसमठे सेकेणठेणं भंत! एवं वुच्चइ जीवस्सणं गब्भगयस्ससमाणस्स नत्थिउच्चारेइवा जाव सो
णिएइवा गोयमा ! जीवेणं गब्भगएसमाणे जं आहारमाहारेइ तं चिणाइ सोइंदियत्ताए चक्खिदियत्ताए घा
णिंदियत्ताए जिब्भिंदियत्ताए फासिंदियत्ताए अट्ठिमज्जकेसमंसुरोमनहत्ताए से एएणं अठेणं ॥ गोयमा ! एवं
वुच्चइ जीवस्सणं गब्भगयस्ससमाणस्स नत्थिउच्चारेइवा जावसोणिएइवा से गब्भगएसमाणेपहूमुहेणं कावलियं

आहार आहारित्तए गोयमा ! नोइणट्ठे समट्ठे सकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जीवेण गब्भगएसमाणे नोपहूमुहेणं
कावलिय आहार आहारित्तए गोयमा ! जीवण गब्भगएसमाणे सव्वओआहारेइ सव्वओपरिणामेइ सव्वओऊससइ सव्वओनी
ससइ अभिक्खणआहारेइ अभिक्खणपरिणामेइ अभि०ऊससइ अभि०नीससइ आहच्चआहारेइ आहच्चपरिणा
मेइ आहच्चऊससइ आहच्चनीससइ माउजीवरसहरणी पुत्तजीवरसहरणी माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा तम्हा
आहारेइ तम्हापरिणामेइ अवरावियणं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा तम्हाचिणाइ तम्हाउवचिणाइ से एएणं
अट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवेण गब्भगएसमाणे नोपहूमुहेण कावलियं आहारं आहारित्तए जीवेणं गब्भगए
समाणेकमाहारं आहारेइ गो० ! जंसेमायानाणाविहाउरसविगइ तित्तकडुयकसायंबिलमहुराइंदव्वाइं आहारेइ
तउएगदेसेण ओयमाहारेइ तस्सफलविंटसरिसाउप्पलनालोवमाभवइ नाभीरसहरणीए जणणीएसयाइ नाभिएप
डिबद्धानाभिएपडिबद्धा गब्भठसयंआईयइ अण्हयवीएतय एनीपगब्भोवियवुड्ढइ जावजाउत्ति कइणं भंते ! माउअंगा
पन्नत्ता ? गोयमा ! तउमाउअंगा पन्नत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगे कइणं भंते ! पिउअंगा पन्नत्ता ? गो
यमा ! तउपिउअंगा पन्नत्ता ? तंजहा अट्ठिअट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहा जीवेणं भंते ! गब्भगएसमाणेनरएसु
उववज्जेज्जा गोयमा ! अत्थेगईए उववज्जेज्जा अत्थेगईए नो उववज्जेज्जा सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवेणं

गब्भगएसमाणेनरएसु उववज्जिज्जा अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नोउववज्जिज्जा ? गोयमा ! जेण जीवे गब्भगएसमाणे
सन्नीय पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विउव्वियलद्धि
पत्ते पराणीयआगयं सुच्चानिसम्मएएसेनिच्छुहइ निच्छुहित्तायिउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ समोहणित्ताचाउरंगिणिं
सिंन्नसन्नाहइ सन्नाहित्ताएराणीए सिद्धिसगामसगामइ सेणजीवेअत्थकामए रज्जकामए भोगकामए रज्जकंखि
ए रजकंखिए भोगकंखिए कामकखिए अत्थपिवासिय रजपिवासिए भोगपिवासिए कामपिवासिए अत्थपिवा
सिए तच्चित्ततमाणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणेत्तयाहाववउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविएएय सिवण
अतरसिकालकरिज्जा नेरइएसुववज्जिज्जा से एएण एव वुच्चइ गोयमा। जीवेण गब्भगएसमाणे नरइएसु अत्थेगइए
उववज्जिज्जा अत्थेगइए नो उववज्जिज्जा जीवेण भंते ! गब्भगएसमाणे देवलोएसु उववज्जिज्जा गोयमा ! अत्थ
त्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगईए नोउववज्जिज्जा सेकणठेण भंते ! एव वुच्चइ अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेग
इए नोउववज्जिज्जा गोयमा ! जेण जीवेगब्भगएसमाणेसन्नी पंचिंदिए सव्वाहिपज्जत्तीहि पज्जत्तए विउव्विए
लद्धीए वीरियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए नहारूयस्ससमणस्सवा माहणस्सवा अंतिए एगमविआरिय धम्मियसुवय
णं सुच्चानिसम्मतउसेभवइ तिव्वसवेगसजायसड्ढे तिव्वधम्माणुरायरत्ते सेण जीवे धम्मकामए पुन्नकामए सग्गकामए

आहारं आहारित्तए गोयमा ! नोइणट्ठे समट्ठे सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवेणं गब्भगएसमाणे नोपभूमुहेणं
कावलियं आहारं आहारित्तए गोयमा । जीवेणं गब्भगएसमाणे सव्वओआहारेइ सव्वओपरिणामेइ सव्वओऊससइ सव्वओनी
ससइ अभिक्खणआहारेइ अभिक्खणपरिणामेइ अभि०ऊससइ अभि०नीससइ आहच्चआहारेइ आहच्चपरिणा
मेइ आहच्चऊससइ आहच्चनीससइ माऊरजीवरसहरणी पुत्तजीवरसहरणी माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा तम्हा
आहारेइ तम्हापरिणामेइ अवराविअणं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा तम्हाचिणाइ तम्हाउवचिणाइ से एएणं
अट्ठेणं गोयमा । एवं वुच्चइ जीवेणं गब्भगएसमाणे नोपभूमुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए जीवेणं गब्भगए
समाणेकिमाहारं आहारेइ गो० । जंसेमायानाणाविहाओरसविगइओ तित्तकडुयकसायंबिलमहुराइंदव्वाइं आहारेइ
तओएगदेसेणं ओयमाहारेइ तस्सफलविंटसरिसाउप्पलनालोवमा भवइ नाभीरसहरणीए जणणीएसयाइ नाभीएप
डिबद्धानाभीएपडिबद्ध गब्भजीवआईय इयाथतीएउय एनीपगब्भोविवट्टइ जावजाओत्ति कइणं भंते ! माउअंगा
पन्नत्ता ? गोयमा ! तउमाउअंगा पन्नत्ता तंजहा मंससोणिए मत्थुलुंगे कइणं भंते ! पिउअंगा पन्नत्ता ? गो
यमा ! तउपिउअंगा पन्नत्ता ? तंजहा अट्ठिअट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहा जीवेणं भंते ! गब्भगएसमाणेनरएसु
उववज्जिज्जा गोयमा ! अत्थेगइएउववज्जिज्जा अत्थेगइएनोउववज्जिज्जा सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवेणं

गब्भगएसमाणेनेरएसु अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नोउववज्जिज्जा ? गोयमा ! जेणं जीवे गब्भगएसमाणे सन्नीय पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वेउव्वियलद्धीए वेउव्वियलद्धि पत्ते पराणीअं आगयं सुच्चा निसम्मपएसेनिच्छुहइ निच्छुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ समोहणित्ता चाउरंगिणिं सिन्नं सन्नाहेइ सन्नाहित्ता पराणीएण सद्धिं संगामं संगामेइ से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए अत्थकंखि ए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए अत्थपिवासिय रज्जपिवासिए भोगपिवासिए कामपिवासिए अत्थपिवा सिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविएएयंसि णं अंतरंसि कालं करिज्जा नेरइएसु उववज्जिज्जा से एएणं एवं वुच्चइ गोयमा । जीवेणं गब्भगएसमाणे नेरइएसु अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नो उववज्जिज्जा जीवेणं भंते । गब्भगएसमाणे देवलोएसु उववज्जिज्जा गोयमा ! अत्थे गइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नोउववज्जिज्जा सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेग इए नोउववज्जिज्जा गोयमा ! जेणं जीवे गब्भगएसमाणे सन्नी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वेउव्विए लद्धीए वीरियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवय णं सुच्चा निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे तिव्वधम्माणुरायरत्ते से णं जीवे धम्मकामए पुन्नकामए सग्गकामए

मुस्ककामए धमाकांक्षिए पुन्नकंक्षिए सग्गकंक्षिए मुक्खकंक्षिए धमपिवासिए पुत्रपिवासिए सग्गपिवासिए मुक्ख
पिवासिए तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदप्पियकरणे तदट्ठोवउत्ते तब्भावणाभाविए एय सेण
अंतरंसि कालं करेज्जा देवलोगएसु उववज्जेज्जा से एएण अट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ अत्थेगइए उववज्जेज्जा
जीवेण भंते ! गब्भगए समाणे उत्ताणए वा पासिल्लए वा अंबुखुज्जए वा अत्थेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुय
ट्टेज्ज वा आसएज्ज वा सएज्ज वा माउए सुयमाणीए सुवइ जागरमाणीए जागरइ सुहियाए सुहिए भवइ दुहियाए
दुक्खिए भवइ हंता ? गोयमा ! जीवेण गब्भगए समाणे उत्ताणए वा जाव दुक्खियाए दुक्खिए भवइ थिरजायं पि
दुक्खेइ सम्मं सारक्खइ तउ जणणी सवाहइ तुयट्टइ रक्खइ अप्पाणं गब्भं अणुसुयइ सुयंतीए जागरमाणीए जागरइ
सुहियाए होइ सुहिए दुहियाए दुक्खिए होइ २ उच्चारेण सवणे खेलासिंघाणउ वि सेनत्थि अट्ठीमिंजनहाकेसमंसुरोमेसु प
रिणामो ३ एव बुंदिमइगए गब्भसवसइ दुक्खिउ जीवो परमतमसंधयारे अमिज्झभरिए पएसंमि ४ आउसो तउ नवमे
मासे तीए वा पडुप्पन्ने वा अणागए वा चउण्हं माया अन्नयरं पयायइ तं ५ इत्थिं वा इत्थिरूवेणं पुरिसं वा पुरिसरूवेणं नपु
सगं वा नपुंसगरूवेणं बिंबं वा बिंबरूवेणं अप्पसुक्कं बहुउयं इत्थी तत्थ जायइ अप्पउयं बहुसुक्कं पुरिसो तत्थ जायइ
दुण्हंपि रत्तसुक्काणं तुल्लभावे नपुंसउ इत्थीउय समाउत्ते बिंबं तत्थ जायइ अह णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा

आगच्छइसमागच्छइ तिरियमागच्छइ तिरमागच्छइ विणिघायमावज्जइ केइपुणपावकारीयारससवच्छराइं उक्कोसे
अत्यइतंगभ्भवासे अमुइप्पभवेअसुइयमि जायमाणस्स जदुक्खमरणमाणस्सवापुणो तेणदुक्खेणसमूढोजाइं सरइनअ
प्पणोविससर रसतोसोजोणीमुहाउनिप्फिडइ माउएअप्पणोयियवेयणमउलजणेमाणे गभ्भघरयमिजीवो कुम्भीपाक
मिनरयसकसे वुत्थेअमिझमझेअमुइप्पभवेअमुइयमि पत्तस्सयसिज्जस्सयसुक्कस्सय सोणियस्सविझमझे मुत्तसपुरीस
स्सय जायइजहवच्चकिमिउव्वस इदाणिसोयकेरणकेरिसयहोइ तस्सजीवस्स सुक्काहिरागराउजस्सु पत्तीसरीरस्स ए
आरिसेसरीरेकलमलज्जारिएय मिझसन्नूणनियय विगणिज्ज तासायमयकेरिसत्तस्सआउ सो एव जायसजतुस्सकमेण
दसदिसाउ एव माहिज्जति तजहा बाला १ किड्डा २ मंदा ३ बलाय ४ पन्नाय ५ हायणि ६ पवंचा ७ पभ्भारा
८ मुनमुही ९ सायणीय १० दसमायकालदसा १ जायमित्तस्सजतुस्सजासापढमिआदसा नतत्थयुंजिउञोएजइ
सेआत्थियघरे धुवो ३ बीयाएकिहुयानामजनरोदसमस्सिउ किड्डारमणभावण तुलहगमइनरज्जय २ तइयाएमदया
नामजनरोदसमस्सिउ मदस्समोहभावेण इत्थीभागेहमुत्थिउ चउथीउबलानाम जनरोदसमस्सिउ समत्थोबलदरिसे
उजउसोजवेनिरवद्दाया ५ पंचमीहदसपत्ताआणुपुव्वीइ जोनरो समत्थोअत्थचिंते उकुडुबचाभिगच्छइ ६ छट्ठीमु
हायणीनामजनरोदसमस्सिउ विरज्जइअकामेसुइदिएसुपहायइ ७ सत्तमीयपवंचाउज नरोदसमस्सिउ निच्छुभ

इयिक्षण खेलस्रासइयस्कपेसणो ८ सकुइस्प्रयलीवम्मोसपत्तोस्तठमिंदस नारीस्त्रंचस्राणिठोयजरापयरिणामिउ ९ नयमीमुस्मुइीनामजंनाराद्समास्सिठ जराघरेयिणस्सत्तेजीग्रोधसइस्सुकामठ १० हीणाजिस्समारोधीणोविवरीउविधि सठ वुाइलोइुसिउसुयइसपस्रोदसमीदस ११ दसगस्सउघस्कुचोवीसइयरिसाज्ञइाविज्ञा जोगयत्तीसगसाधयन्ना छीसत्मवलमेव १२ विन्नाणपन्नासयचरकुइायइ साहिसइस्रुयाज्ञमलं जोगायसत्तरिस्रुसीयविन्नाण १३ नउपनमी इसरीरत्रासस‌एजीविस्रुयइ कित्तिउस्यसुहोन्नागो दुहोन्नागोयकिसिठ १४ जीयाससयजीवइसुहीजोगेय जुज्जइ सम्मा विसेत्रिउसेठधम्मोयजिणदेसिठ १५ किपुणसयसुधाए जोनरोनिच्चदुरिकठ सुठुयरंतेणकायव्वो धम्मोयजिण देसिठ १६ नदमाणेघरेघसछस्मयरमेलठसरंजाव स्रणदमाणोविघरे मासेपावतरज्जवे १७ नविजाइकुलंवाविविज्जा वाविसिुस्किया तारेइनरंवनारिवासवपुस्राइयहइ १८ पुन्नेहिंहायमाणेहिंपुरीसगारोयिहायठ पुस्राहियहुमाणेहिं पुरीसगारोयिवहइ १९ पुत्नाइखलुस्राउसोकिम्राइकरणिज्जाइं पीइकराइंयन्नकराइं जमकराइं किंत्तिकराइं नोयखलु स्राठसोएयं चिंतेयव्वंएसतिखलुयज्जवेसमया स्रावलियाखणास्राणा पाणूथोवाठवामुहुत्ता दिवसा अहोरत्ता पक्खा मासाठिऊअयणा सयच्छराजगायासयावाससहस्सा वाससयसहस्सा वासाकोडीठ वासकोडाकोडीठ जत्यण स्रा म्हयइसीलाइं गुणाइंवेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं पडिवज्जिस्सामो एठावेस्सामोकरिस्सामो

किमत्थश्राम्रसो नो एव चिंतेयवन्नवइ श्रंतराइ यक्नलेखलुश्रयं जीविए इमेयघहवेवाईयपित्त श्रसिंनियसंनिवो
इया त्रिविहारोगाथका फुसतिजीयिश्च श्रासीयखलुश्राउ सापुत्रिमणुयाश्रवगया रोगयकाश्रक्नवासत्तयसहस्सजी
विणो तजहा जयलधम्मिश्रा श्ररिहताश्र चक्कवहीवा बलदेवावा वासुदयावा चरणाविज्जाहए तेगमणुयाश्रणाइवरं
सामश्रारकूया नोगा नमा नागुलस्कणधरा सुजायसव्वगमुदरगारतुप्पलपउमकरचण कामलगुलितला नगरगरमग
रसागर चक्कक यरकलरकण कियम्नलासुपइयिपकुम्मचारुचलणा श्रणुपव्वि सुजायएवरगुलीश्रा उन्नयतणुत्तयनिद्ध
नहा सठिश्रमिलिहगूढगुप्फाएणी कुरुविदावत्तवट्टाणुपुव्विजया सामुगनिमग्गरमूढजाणूगयदसणसुजासनिभोरूश्र
रया रणमम्तनुल्लविक्कमायिसालनीइ सुजायवरतुरयगुम्झदेसोश्राइन्नहयव्वनिरुवलया मुइश्रवरमरसीहश्रइरेगवट्टय
कडी साहीश्रसायदसलदप्पणनिश्रारपश्रकणगसरि सश्ररवइरवलिश्रमज्झा गगामवन्नपयाहिणायत्ततरं गत्नगुरवि
किरणबोहिय उक्कोसाययमउपग मोरविश्रहनालाउज्झयस मसाहियमुजायमसंसणु किसिणनिद्धयाए जलरुहमुकु
मालमउ यरमणिज्जारामराइ ऊसविहगसुजायपीणकुत्थी ऊ वायरायसुविश्रहनाला सगयपासा सनयपासा सु
दरपासा सुजायपासामि श्रमाइयपीणरइयपासा श्रकरंडुयकणग गरुयनिम्मलसुजाय निरुवहयदेहधारी पसत्थय
त्तीसकलस्कणधरा कणगसिलाय लुज्जलएसत्थ समतलउयचियवच्छिन्नपिहलवत्था सिरिवत्थकियवत्था पुस

रत्तयविरजुया नुयगीसरविउलजोग आयाणफलिह वत्थूढदीहबाहू जगसानिजपीण रइअपीवरपउट्ठसंठिय
उयचियपीवरसुबद्ध सुसिलिट्ठपुमसंधी रत्ततलोवचियमउयमंसलरत्तणपसत्थ अत्थिदृजालपाणी पीवरवट्टीयसु
जायकोमल बरंगुलीअत्तवयलनिलिण सुइरुइ रनिरुहनखो चंदपाणिलेहारपाणिलेहा सगपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा
सत्थिपाणिलेहा ससिरवियसंखचक्का सत्थिदपाणिलेहा वरमहिसवराहसीहसद्दूल उसभनागवरा उलपमउदक्खंधा
चउरंगुलसुप्पमाणकंबु वरसरिच्छगीवा अवट्ठियसुविभत्तमंसू मंसलसंठियपसत्थ सद्दूलविउलहणुया नुयाविय
सिलप्पवाल बिंबफल संनिभाधरुट्ठा पंडुरससिसगलविमल निम्मलसंखगोखीर कुंदगरयमुणालिया धवलदंत
सेढी अखंडदंत अफुडियदंता अविरलदंता सुनिद्धदंता सुजायदंता एगदंतसेढीविव अणेगदंता हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा गरुलायय उज्जुतुंगनासा अवदालियपुंडरीयनयणा कोकासियधवलपुंडरियपत्तलच्छा आनामियचावरुइलकिण्हब्भराइसुसंठिय संगयआययसुजायतणुकसिणनिद्धभुमया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमंसलकवोलदेसभागा अचिरुग्गयबालचंदसंठियपसत्थविच्छिन्नसमनिडाला उडुवइपडिपुन्नसोमवयणा छत्तागारुत्तमंगदेसा घणनिचियसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारनिभपिंडियग्गसिरा हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्ज केसंतकेसभूमी सामलबोंडघणनिचियछोडिय
मिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगनीलकज्जलपहट्ठभमरगणनिद्धनिकुरुंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया

पयाहिणावत्तमुद्धसिरया लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमगा
रकंतापियदंसणा सब्भावसिंगारचारुरूवा पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा छतेणमणुयाउहस्सरा
मेहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा नंदिस्सरा नंदिघोसा सीहस्सरा सीहस्सघोसा मंजस्सरामंजघोसा सुस्सरासुस्सर
घोसा अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणीकवोयपरिणामा सउणी पोसपिठंतरोरुपरिणया पउमुप्पलसुगंधीनीससासुर
भिवयणत्थयानिरायकाउन्नमए सत्थसुद्धसंसनिरुमतणू जल्लमलकलंकसेयरय दोसवज्जियसरीरा निरुवलेवा छा
याउज्जोयाउज्जोवियगमगा वज्जरिसहनाराय संघयणा समचउरंस संठाणसंठिया छधणुसहस्साइंउट्ठउच्चत्तेण पन्न
त्ता तेण मणुयादोत्यप्पन्न पिट्ठकरंडुगसया पन्नत्ता समणाउसो तेण मणुयापगइभद्दया एगइयविणीया पगइउ
वसंतापगइभद्दया पगइविणीया पगइउवसंतापगइपयणु कोहमाणमायलोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीणाभद्दवा अ
प्पिच्छा असंनिहिसंचया अचंडा असिमसि किसिवाणिज्जविवज्जया विडिमंतरनिवासिणो इच्छियकामका
मिणो गेहागाररुक्खकयनिलया पुढवि पुप्फफला हारातेण मणुयागया पन्नत्ता आसीयसमणाउसो पुच्छिमणुयाण
छव्विहेसंघयणे तंजहा वज्जरिसहनारायणसंघयणे रिसहनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायणसंघयणे
कीलियासंघयणे छेवट्ठसंघयणे संपइखलु आउसोमणुयाण छेवट्ठसंघयणे वट्टइ आसीयवाउसो पुच्छिमणुयाण

चौथे सठाणे तजहा समचउरंसे १ निग्गोहमंडले २ सादि ३ खुज्ज ४ वामणे ५ हुंडे ६ सपइसत्तसु आउसोमणु
याण छसठाणे वट्टइ संघयणसठाणमुच्चत्त आउयसमणुयाण अणुसमयपरिहायइ उसप्पिणिकालदोसेण १ को
मायलोभाउ सत्तवड्डइयमणुयाण कूडतुलकूडमाणाविणणु माणेणसव्वति २ विसमाअज्जतुलाहोविसमाणियजणव
एसुमाणाजि विसमरोमकुलाइतणउविसमाइयासाइ ३ विसमेसुयवासेसुहांति असाराइउसहियलाइ उसहिवुआउ
णपच्चाउपरिहायइनराण ४ एयपरिहायमाणेलोपए वुच्चकालपरकंमि जेधम्मियामणूसासुजीवियजीवियतोसे ५
आउसोसेजहानाम एकेइपुरीसेण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्तेसिरसिन्हाए कंठेमालकडे आविद्ध
मणिसुयण्ण अहियसुमहघयवत्थपरिहिए चदणोकिण्णगायसरीरे सरससुरहिगंधगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते सुइमाला
वन्नगविलेवणा कप्पियहारद्धहार तिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जअंगुलिज्जगललिय
गयललियकयाभरण नाणामणिकणगरयणकडगतुडियथंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलुज्जोवियाणण सउ
रुदिसमरए दारुण्यसुकय रइयवच्छे पालंबपलंब माणसुकयपडिउत्तरिज्जे मुद्दियापिंगलंगुलीए णाणामणिकणग
रयण विमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसिंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठआविद्धवीरवलए किंबहुणाकप्परुक्खएविवअलंक
कियविभूसिए सुइपयए जिन्ना अम्मापियरो अभिवादइजा तएणंसे पुरिसं अम्मापियरो एवं वइज्जा जीव

१ [illegible]

पुन्नायाससयाति तपिच्छाहतस्सनोयझयन्नयइ कन्दावाससयजीवतोत्रीस जगाइ जीवइ वीसजगाई जीवतोत्रीञ्य
णसयाइ जीवइ दोच्छयणसयाइ जीवतोछउऊ सयाइ भीवइ छउऊसयाइजीवस्तो थोरसमासयाइ जीवइ यारस
मासयाइ जीवताव उत्रोसणससयाइ जीवइ चउवीसपक्कसयाइ जीवंतोछत्रीस राइदिच्छसहस्साइजीवई छवी
सराइदियसहस्साइजीवता दसच्छसियाइमुक्कस्स सयसहस्साइजीवइ दसाच्छमीच्छाइ मुक्कससयसहस्साइजीवतोच
त्तारिऊसासकोडिसणसत्तयकोडि च्छदयालीसयसयसहस्सा इवऊसालीसवऊसासहस्सइजीवइ चत्तारियऊसास
कोडिसए जावचन्नालीसऊमाससहस्साइजीवतो च्छहतावसतदुलवाहेतुजइ कहमाउसोच्छहतवीसतदुलवाहेतुजइ
गो०। दुव्वलाए खंडियापवलियाणछडियाण खाइरमुसलपच्चाइयाण ववगयतुसकणियाण च्छखंडाण च्छपडियाण
फलगमारियाण इक्किक्कायियाण च्छद्वात्तेरसवालियाण पच्छणसन्नियणपत्थए मागहए कल्लपत्थे१ मायपत्थे२ वउसट्ठि
साहस्सीउ मागहउपत्यावमाहस्सिणकवलेणबत्तीसकवलापुरिसस्सच्छाहारो च्छठावीसइत्थियाए चउवीसपडगस्स
एवामेवच्छाउसोएयाण गणणापठाच्छसइउ पसइदोपसइपसइयाहाइ चत्तारिसइयाकुलठचत्तारिउलयपिठो यत्ता
रिपत्याच्छाढगाण जहनणकुन च्छसीइच्छाढयणमाज्ञिमेकुन्ने च्छाढगसय उक्कोसणकुन्ने च्छठेवयच्छाढगसयाणिवाहे एए
णवाहप्पमाणण च्छठतेवीसतंदुलवाहेतुजइ तेवणाणिविठा तचारियकोडिसयासठिसेवयहमासिकोडीउ०च्छसा

ढंवतंदुलसयसहस्साणिहवंति समरकाय तंएवस्थठतेवीसतउलवाहेनुजतो स्थठठेमुग्गकुज्जुजइ ठत्तीसलयणपल
सहस्साइनुजताठष्यफसाफगसयाइनियंसईदोमसिण्ण परिस्थइपणवावरियहेणथरसपफसाफगसया इनियसेइ ए
वामेतस्थाउसोवाससया उवस्सहगुगणिस्थतुलिस्थमविहाने हलधाणस्थायणपिएयगाणियप्पमाण दुविहजणिपमहरि
साहि जस्सत्यितस्सगणिज्जई जस्सनस्थि तस्सकिंगणिस्थइ ववहारगणिदिठ सुज्ञमनिस्यपगयमुणेयज्ञ जहएष्पंन
यिएयविसनागणणामुणेयमा १ कालोपरमनिरुद्धो स्थविज्जुज्जो तं तुजाणसमयंतु समयायस्थसंखिज्जाहवंतिहे स्सा
सनिस्सासे २ हहस्सस्थणवगल्लस निरुवकिठस्सजंतुणो पगेउसासनिसकेए सपाणुत्तिवज्जइ ३ सत्तपानुणिसोथोवे
सत्त थोवाणिसेलवे लयाणसत्तहत्तरी एएसमुज्ञत्ते वियाहिए ४ एगामगम्मेणं नंते ! मुहुत्तस्सके वइयाऊसासा
वियणीहिया गोयमा ! तिन्नि सहस्ससत्तयसयाइंते वत्तारिथठमासा एसमुज्ञत्तो जणिठ सवेहिं स्थणतनाणी
हि ५ दोनालियामुज्ञत्तो सठिंपुणनालियास्थहोरत्तो पन्नरसस्थहोरत्तोपरेकाए रेकादुवेमासो ६ दाडिमपुप्फगास
लोहमहनालिआउकायव्वा हीसेतलमित्थिदपिदप्पमाणमुणोवारयं७ ठम्मठम्पुत्यवाला तिवासजायाएगोतिहूणीए
समवालियाग्ह्मपनायवंनालियालिहुं ८ स्थहयाठपुठवाला दुवासजायापगयफेरणए दोवालोतत्थजगानोयवंनए
लियाहिहुं ९ स्थहआसुवणमासा वत्तारिसुसाहियाघणामई मुडुरंगलप्पमाणं नायव्वंमालियाठहु १० ववगस्स

नालियपञ्चानवंति दोञ्चादयाउपरिमाण उदगभन्नाणियपजारिसयतपुणोमुणं ११ उदगंखलुनायपुंकाय यद्रूसपद
परिपूय मेहादगएसन्नसार ञ्चयञ्चागिरिनईए १२ बारसमासासअत्थारोउथस्काय पेडचवीसतिन्नोयपसाहि सया
हवतिराइदिञ्चाणव १३ एगघयसहस्सतेरसघेअयजवेसहस्साइ एगचसयतअयं हवंतिराइदिअमासा १४ तिन्निसय
यसहस्सा पचापउहजवेसहस्सहइ सत्तयसयाञ्चपूणाहवति मासेणउसासा १५ चत्तारियकोडीउसतेयपञ्चतिसयसह
स्साइ ञ्चडयालीससहस्सा चतारिसयायवरिसेण १६ चत्तारियकोडिसयास तपक्काडिउञ्चतिञ्चवराइ ञ्चडयाल
सयसअन्नालिस सहस्सा १७ वाससयाउस्से०उस्साइतियामुणेयञ्चा पित्यहञ्चाउस्सखयञ्चाहानिसभिमूदमाणस्स
१८ राइदिएणतीसतमुहुत्तालवसपाउमामेणहायतियमन्ना णञ्चयणञ्चहहाथियाणति १९ तिन्निसहस्सेमगलेत्यञ्च स
यउमुयराहरहञ्चाउ हमतेगिम्हसुपदासामुयहोइनायञ्च२० वाससयपरमाउहतोपन्नासहरहनिहाए हन्नोबीसहहाय
हवालञ्चयुहन्नावेय २१ सीउण्ह०पगमणेरखुहापिया सातयअसोगाय नारायिहायएगोहय तीतासाइएत्यहे २२ ए
वपचासीहनञ्चा पनरसमेयजीवति जेञ्चतिञ्चाससहनयमु लहाञ्चाससयजीञ्ची २३ एवनिस्सा रमाणुसत्तणेजीयिए
ञ्चहियञ्चतनकरहचरणधम्म पत्योपत्याणुञ्चापिहइ २४ तुहमिसयमोहजीणेहिं वरधम्मासित्यमगास्स ञ्चाणयनया
णाइ हजायाकंमञ्चूमीए २५ नहवेगसमचवलजीविय जोवणंचकुसुमसम सुक्खंचजसानियञ्च तिन्निवितुरमाणञ्चुया

हुंचतंदुलसयसहस्साणिहवति समस्काय तएवधुठतेवीसतउलवाहेनुजतो छठठठेमुग्गकुनजुजइ ठसीसलयणपल
सहस्साइनुजतोठप्पफसाठगसयाइनियसईदोमसिण्ण परिश्रुटुण्णधावरियद्देणथरसपफसाठगसया इनियसेइ ए
वामेतघ्याउघोवाससया उयस्सहुगणिघ्यतुलिघ्यमविहाने इलवाणस्यायणपिएफगणियप्पमाण तुविहूनागयमहरि
साहि जस्सत्यिसस्सगणिजाई जस्सनस्थि तस्सकिंगणिधुइ ववहारगणिदिठ सुक्कमनिस्यपगयमुणेयव्व जइएयंन
यिएमयिसमागणणामुणेयव्वा १ कालोयरमनिरुद्धो अविनुजो तं तुजाणसमयतु समपायव्वसखिज्जाइवतिठ स्सा
सनिस्सासे २ हट्टस्सघ्यणवगल्लस निरुवकिठस्ससंतुणो पगेउसासनिसकेए सपाणुत्तिवव्वइ ३ सत्तपानुणिसोथोवे
सत्त थोवाणिसेलवे लयाणसत्तहत्तरी एएसमुहुत्ते वियाहिए ४ एगामगस्मेणं भंते ! मुहुत्तस्सके वइयाऊसासा
वियणीहिया गोयमा ! तिन्नि सहस्ससत्तयसयाइते वत्तारिषठमासा एसमुहुत्तो भणिठ सव्वेहिं अणतनाणी
हि ५ दोनालियामुहुत्तो सठिपुणनालियाअहोरत्तो पन्नरसअहोरत्तोपरेकाए रेकादुवेमासो ६ दाडिमपुप्फगारा
लोहमइनालिआउकायव्वा तीसेतलमित्थिइ पिदप्पमाणंपुणोवोच्छं७ छन्नउइपुत्थवाला तिवासजायाएगोतिहाणीए
घसवलियाउज्जयनायव्वनालियाच्छिहुं ८ अहवाठपुठवाला दुवासजायापगमक्कीरेणए दोवालाउम्मजगानोयव्वंनाा
लियाच्छिहुं ९ अहवासुवणमासा चत्तारिसुमहियाघणामूई चउरंगुलप्पमाण नायव्वं नालियाच्छिहुं १० उदगस्स

णासिरमुवागयाणं जाउरसहरणी उत्तिमुवंति जाणंसिनिरुवघाखेणं चरकुसीयघाणजीहायलंनवइ जाणसिउवं
घाएण चरकुसोयघाण जीहायलउवहम्मइ आउसोइमम्मिसरीरए सठंसिरासयं नाभिप्पनवाण अहोगामिणीण
पायतलमुवगयणे जाणसिनिरुवघाएण जघायलभवइ नाणचेव सेउवघाएण सीसावयणा अवसीसवेयणामेत्य
यञ्जले अत्थीणि अंधिअंति आउसो इम मिसरीरए सठसिरासयं नाभिप्पनवाण तिरियगामिणाण हत्थतलमु
दगयाण जाणसिनिरुवघाएण याञ्चयलहवइ ताणचेवासउवघाएण पासवयणा पुठावयणा कुछिवेयणा कुत्थि
मूलेनवइ आउसोइमस्स जतुस्ससठसिरासय नाभिपनवाण अहोगामिणीण गुदपयिठाण जाणसिनिरुवघाएणंमु
त्तपुरीसयवउकम्मंपवत्तइ ताणचेव उवघाएण मुत्तपरीसवाउनिरोहेण अरिसाउखुज्झंति पंडुरोगोनवइ आउसो इ
मस्सजतुस्सपणवीससिराउ सघधारीणीउणवीसंसिराउ पित्तधारिणीउदससिराउमुक्कधारिणीउ सत्तसिरासयाइं पु
रिसस्सती मुणाइ इत्थियाएविमूणाइं पिंडगस्सआउसो इमस्सजतुस्सरुहिरस्सआढयवसाए अठाढयमठुलुगस्स पा
त्थामुत्तस्सआढयं पुरिसस्सपत्थापित्तस्स कुडवोसिंभस्सकुलवोसुक्कस्स अठकुलवोजजाहेदुठनवइ तंताहेअहप्पमा
णनवइ पंचकोठपुरीसो सकोठाइत्थियानवसाएपुरिस इक्कारससोयाइत्थिया पचपेसीसयाइ पुरीसस्सतीमूणा
इं इत्थियाए वीमूणाइपठगस्स अझंतरसेकुणमंजोपरीयत्तेउ याहिरकुज्जातं अस्सुइंहुणसयायज्जणणीदुगंछिज्जा भा

हुं २६ एयंसुत्ररामरणपरिखित्रह घमाराबमयञ्जूह नयणपित्यहएग्रसंमूढामोहजालेण २७ ञ्जाठसोसोळपिडम
सरीरकूठं पियकतमणुणमणाममणत्रिराम थिडाग्रसासियसमयघञ्जमय ञ्जुणुमयत्नठकरंडगसमाण रयणकरंडउवि
ग्रमुमा गात्रियंत्रलापायित्र सुमपरिगृहंतिप्रपेळायिग्रमुसगात्रिय माणउष्ह माणसीयं माणखुहा माणपियासा मा
पयारा माणग्रला माणदसा माणमसगा माणग्राडयपित्रियासंत्रियसंनित्राइय त्रिविहारागायकाफसतिस्त्रिकहु
णघोंपियाइञ्जुभुग्रञ्जानिय यग्रुमासयघउ वसडयंत्रिप्पणामघम्मपत्याग्रपुरावञ्जस्सत्रिपचडय हुपयस्साचियाइ ञ्जाउ
सो ञ्जुनुग्रेण ञ्जठारसपोपठकरळगसंधीउ ग्रारसपामुलिकरंळत्यप्प सुलिणकडाहेंत्रिहहिग्रयाकुत्थी घउरंगुलोञ्जा
गीग्राघउपलिञ्जा जिञ्जाउपलियाणिग्रञ्जियिणि घउकयालंसी रंयग्रीसदंग्रा सग्रंगुलियाजीहाञ्जठुह पलियंहेपयए
णवीसपलाइ कालिघंदोञ्जसापंघग्रामा पन्नसा तजहा यामेगसेदाहिणेणामय तत्यणजेसयामेपा सेसुहपरिणामे
तत्यणंजेम तणयतसेणपामग्रणेपरिणमइ दोणमापघग्रामा पन्नमा तजहा यामेणसेदोहिपोणसेय-तत्थणंजेसयारोञ्जा
सेसुह परिणामेतत्यणअसे दाहिणेपासेदुहपरिणामे ञ्जाउसोइमेसरीरएसठिस सत्रिसयंसतुंतरसंसिये तिन्निञ्जाहि
ग्रमसयाइं नवञ्जारुयसयाइं सग्रसिरासयाइ पघायसीसपाइनयघमणीउ नग्रनउइंयरोमकूवसयसहस्सइ [illegible]
समसुणञ्जइहकेसमसुणाधिठूठाइ ग्रोमकूवकोडी उग्राउसोइमंमिसरीरएसुठिग्रसिरासयंताजियन्नयाणउहगामे णी

णपरिणवंती फुसंनीलुप्पलयणंच ५ किमिस्थमि तोवन्नेश्वमिस्रनश्यंमिवज्ञसघाए रागोज्ञनकायस्रोयिरागमूलेस्रीरं मि ६ किमिकुलसयसकिस्रेश्वसासयमसारे सेयमलपुसमोनिस्रंयंश्व्रहसरीरे ७ दंतमलकणघूसस्रिघाणमलेयलासल यक्कले एयारीसवीजत्थेजुगलणिज्ज मिकोरागो ८ कोसक्रणपक्रणविकिरिणविद्धसणवयण मरणघम्मंमिदेहस्रिस्थही लासा कुहियक्रणकठनूणमि ९ कोकागसुणन्नगेस्वा किमिकुलजसेयवाहिजसेय देहभिमवुननेसुसाणजम मिकोरागो १० श्वसुइछमिस्रमुतकुणिमकालेवर कुहिपरिश्वसति श्वागतुयसठवियनश्वछिदुमसासयजाण ११ पित्थसिमुहंस तिलयसविसेस रायणश्वहरेण सकक्रसकसवियारतरलस्यजावणत्थाए १२ पितासिश्वाहिरमठनापिसीउस्रंकलि मलस्स मोहेणनश्वयनोसीसघक्रीकिंजियपियस्रि १३ सीमघक्रीनिगोलजनिठुइमादुगुस्रसीजंत्र तचेश्वरागरसोमूढोस्थ इमुत्थिन्तापियसि १४ पूइयसीसकवालपूइयनासचपूइयदेहत्त पूइश्वत्थिदुविछिदुपूइश्वचम्मेणडपिणद्ध १५ श्वज पागुणसुश्चियद्धन्नागवहणगुणाहिंसुकुमाल पुप्फम्मीसिपकेसजणइथालस्सतंराग १६ जसीसपुरउतिश्वप्फुप्फाइन्नणति मद् धिन्नाणा पुप्फाश्रविश्वता सोसस्सयपूरयसुणह १७ मेउवसायरसियाखेलसिघाणएयठुंजणश्च श्वस्रसीसन्नरउ न्नानियणसरीरमिसाहीणा १८ सोकिरपुप्फाइपूराश्वज्ञकुसीरुप्पुयाजश्वयिम्माल क्राऊश्वठिश्वगधविठित्याश्वाठजणो श्च इमुछियपयिंहो १९ जंमेमरगरासी श्वयवासेउणगूढमुस्रठि दंतमलचिक्कणगंसीसगक्रीकजियंपियसि २० दंतमुसठे

णसयसरीरंपुष्टयमसससुक्कष्ठठेण परिसठविधंसोहइ सुक्कायणगधमल्लेण इमचेवयसरीरसीसघमीमेयमज्जमसठिय
सठलुग सोणीसुवालुऋयवम्मा कोसनासियसिघाणोयधीम लालयसुमणुणगसीस घमीजांभयंगठतनयणक्कागोठ
गऋथालुयंसुवालुयासिय चिक्कणाविलियदंतमलमइलथी भत्यदरिसणिज्जसुजवाज्जलगयगुल।ये गुठगनइसधि
सघायसधियमय मज्जरसिधगार नालसघत्यिराभुणेगऋसयज्ञधमणिसधि यद्ठंपागऋउदरकयाल करकानिकुऋ
कक्कगकलिसुरतं सुठिषमणिससाभसतय सम्मुउसमतापपरिसघतच रोमकूवेहिंसयसुसुइसत्ताथउ परमदुगधि
कालिज्जयसुलविय जरादियगोफसाफुफसापिलिइोवर गुरुकुणिमनशठिदुधियिधिविचि यतहियपदुराहिपिसाविं
भमुमो सहायपणसठ्ठठसहायपसमुउदुरमगुम्मोरुजाणुजघा पायसघियसुसुइकुणिमगधि एव चिंतिज्जमाण थीजत्य
वरिसणिज्ज सुघुंसुनियपसुसासय समणपऋणविद्धंसणधम्मं पत्थायपुरासुवस्सयइयवानि उसुठुजाणइएवसुउ
मिइपपरि ससइमणुयाणदेह एसयरमत्यउसरयाचो सुक्कमिसोणियमितूउजण णिकुत्यिमसुमितंचेसुमिसुर सनय
माउघुठिरससो १ जोणीमुहनिप्फिऋिवणगठिरेणयहिउआठ पगासुमिसुमइठ कइदेहाघोडउसक्कोपन्न्सासुअसु
इसमुप्पन्नयानिगाया यरोमयंयदारेण सइपमोइपसइयारमतिवात्येसस्सुइदारसि[illegible]करहसइ
एउ हिसुपरिठवेमि[illegible]वन्निवाइअमुइपिउजपणतिसकऋमूढेहिं २ रागेणन[illegible]

गंधाकयरोतेअप्पणोगंधो ३६ अत्थिमलोकत्तमतो खेलोसिंघाणउअपूउअ असुहमुत्तपुरीसोएसोतेअप्पणोगंधो
३७ जाउविअपूमाउ इत्थियाउअणेगे हिंकइवरसहस्सेहिं विविहपासपडिबधेहिं कामरागमोहेहिं वन्नियाउ
ताउविपरिसाउ तजहा—एगइविसमाउ पियवयणवल्लरीउकइयवपेमगिरितडीउ अवराहसहस्सघरिणीउपभवो
सोगस्सविणासोबलस्स सूणापुरीसाणनासोलज्जाए संकराअविणयस्स निलउनिअडीण खणीवइरस्स सरीरसो
गस्सभेउमज्जायाण आसउरागस्स निलउदुच्चरियाण माइएसमोहोखलणनाणस्स चलणसीलस्सविएयाधम्मस्स
अरीसाहूणं दूसणआयार पक्खाण आरामोकम्मरयस्स फलिहामुक्खमग्गस्स भवणदारिद्दस्स अविआइयाउ आ
सीविसोविकुवियाउ मत्तगउविवमयएरवसाउ वग्घीविवदुट्ठहिअयाउतेणत्थसकूवोविवअप्पगासहिअयाउ मा
याकारउविवया रसधणपउत्ताउ आयरियसविधपिअक्कभ्यसज्झाउ फुफयाविवअतोदहणसीलाउ नगामगो
विवअणवठियचित्ताउ अंतोदुट्ठघणो विअविवलस्सजाउ मत्योविवदुपरियमणसीलाउ वानरोविवचलचित्ताउ
मच्चुविवनिव्विसेसाउकलाविवनिरणुकपाउ वरुणोविवपासहत्थाउसलिलमिवनिन्नगामिणाउ किवणोविवउत्ताण
हत्थाउ नरउविवउत्तासणिज्जाउ खरोइवदुस्सीलाउ दुट्ठसोविवदुद्दमाउ बालोइवमुहुत्तहिअयाउ अधकारमिवदु
प्पवेसाउ विसवल्लीविवअणल्लियणिज्जाउ दुट्ठगाहाइववावीअणवगाहाउ ठाणभट्ठोविवईसरोअप्पससणिज्जाउ

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| एव मृदुलघुगुण भी अनन्त है, और इनका अ स्पबहुत्वादि | ४२६ | अस्पृष्ट रूप देखे, स्पृष्ट गन्ध लेवे अस्पृष्ट गन्ध लेवे, इत्यादि रस स्पर्श भी कहना जैसे पहले कहा तैसे कहना | ४२९ |
| एव अप् यावत् वनस्पतिकाय विशेष यह के बुदबुदे ऐसा है, तेजस्काय शूचीकलापसस्थान सस्थित है, वायु पताका सस्थान, वनस्पति नानासस्थान सस्थित है | ४२६ | एव जैसे स्पृष्ट तैसे प्रविष्ट, श्रोत्रेंद्रिय का विषय अगुल के असख्यात भाग मे उत्कृष्ट बारह यो जनसे छिन्न पुद्गल स्पृष्ट शब्द सुणे | ४३० |
| बेइंद्रिय के दो इंद्रिय सर्व अधिकार पूर्ववत् कहा | ४२७ | चक्षु इंद्रिय का विषय जघन्य अगुल का सख्यात भाग उत्कृष्ट सातिरेक योजन सहस्र अच्छिन्न पुद्गल अस्पृष्ट अप्रविष्ट रूप देखे | ४३० |
| त्रीन्द्रिय के घ्राण स्तोक है, चतुरिन्द्रिय के चक्षु स्तोक | ४२८ | | |
| पचेंद्रिय तिर्यच और मनुष्य के जैसे नारकी कहा | ४२८ | घ्राणेंद्रिय का जघन्य अगुल असख्यात भाग उ त्कृष्ट नव योजन से गन्ध ग्रहण करे, एव जि व्हाभी कही, स्पर्शनेंद्रिय भी इसीतरह है, | ४३१ |
| वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकु– मार कहा | ४२८ | | |
| स्पृष्ट शब्द सुणे अस्पृष्ट सुणे, स्पृष्ट रूप देखे | | अनगार भावितात्मा मारणातिक समुद्घात से सम | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| उस्के देश प्रदेश से नही है आकाशास्तिकाय से स्पृष्ट नही है इस्के देश और प्रदेश से स्पर्श किये है, त्रसकाय से कदाचित् स्पृष्ट अस्पृष्ट है, काल के देश से स्पर्श किए है | ४३७ | देश प्रदेश से स्पृष्ट है, पृथिवी से स्पृष्ट नही काल से स्पृष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अनन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाश स अनन्त जागो न है | ४४० |
| जम्बूद्वीप नही धर्मास्तिकाय स इस्के देश प्रदेश से स्पृष्ट एव अधर्म और आकाशास्तिकाय से भी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पर्श किये है, त्रस काय से कदाचित् है | ४३८ | ॥ १५ वा पद का १ उद्देशा पूर्ण ॥ इन्द्रिय उपचय इत्यादि अर्थ सग्रह गाथा २ | ४४० |
| एव लवण समुद्र, धातकी खण्ड आदि भी कहा सो गाथा है | ४३८ | कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का इन्द्रिय भेद से | ४४० |
| लोक किस्से व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशाधिगल कहा, अलोक नही धर्म अधर्म और आकाशास्ति काय स किन्तु आकाशास्तिकाय के | | नारकी को पाचो इन्द्रिय का उपचय कहा, एव वैमानिक पर्यन्त सर्व दण्डक मे कहना भेद यही के जिस्को जितनी इन्द्रिय उतनाही का उपचय कहना, एव इन्द्रिय की निर्वर्त्तना भी पाच तरह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| उस्के देश प्रदेश से नही है आकाशास्तिकाय से स्पृष्ट नही है इस्के देश और प्रदेश से स्पर्श किये है, त्रसकाय से कदाचित् स्पृष्ट अस्पृष्ट है, काल के देश से स्पर्श किए है | ४३७ | देश प्रदेश से स्पृष्ट है, पृथिवी से स्पृष्ट नही काल से स्पृष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अनन्त अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाश से अनन्त भागो न है | ४४० |
| जम्बूद्वीप नही धर्मास्तिकाय से इस्के देश प्रदेश से स्पृष्ट एव अधर्म और आकाशास्तिकाय से भी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पर्श किये है, त्रस काय से कदाचित् है | ४३८ | ॥ १५ वा पद का १ उद्देशा पूर्ण ॥ | |
| | | इद्रिय उपचय इत्यादि अर्थ सग्रह गाथा २ | ४४० |
| एव लवण समुद्र, धातकी खण्ड आदि भी कहा सो गाथा है | ४३८ | कितने प्रकार इद्रियोपचय कहा, ५ तरह का इद्रिय भेद से | ४४० |
| लोक किस्से व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशथिगल कहा, अलोक नही धर्म अधर्म और आकाशास्ति काय से किन्तु आकाशास्तिकाय के | | नारकी को पाचो इद्रिय का उपचय कहा, एव वैमानिक पर्यन्त सर्व दण्डक मे कहना भेद यही के जिस्को जितनी इद्रिय उतनाही का उपचय कहना, एव इद्रिय की निर्वर्त्तना भी पाच तरह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्राक | विषय और प्रश्नादि | पत्राक |
| --- | --- | --- | --- |
| वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एव असुरकुमार यावद्वैमानिक एव२४ दडक, नारकी अनन्तरागत अन्तक्रिया करे परम्परागत अन्तक्रिया करे | ५७५ | मनुष्य दश मनुष्यणी वीश वानव्यतर दश व्यतरी पाच जोतिषी वीस इत्यादि | ५७६ |
| तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अन्तक्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय मे जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश अन्तकिया करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनतरागत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया एव असुरकुमार कुमारी प्रश्न | ५७५ | नारकी नरक से निकल नरक मैं उपजे नही नारकी नरक से निकल असुरकुमार मे उपजे नही यावत् चउरींद्रिय | ५७६ |
| अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार एव अप्कायिक भी वनस्पति कायिक छ पचेद्रिय तीयञ्च दश तीयञ्चणी दश | | नारकी नरक से निकल पञ्चेद्रिय तिर्यञ्च मैं उपजे इत्यादि | ५७७ |
| | | नारकी नरक से निकल व्यतर जोतिषी वैमानिक मैं उपजे नही असुरकुमार असुरकुमार से निकल नारकी मे उपजे नही असुरकुमार मर के असुरकुमार मैं उपजे नही एव यावत् स्तनितकुमार | ५७९ |
| | | असुरकुमार मरके पृथिवीकाय मैं उपजे कदाचित् | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| कायिकी आदि पाच क्रिया कही, नारकी को पाचो क्रिया है, एव वैमानिक पर्यन्त, जिस जीव का कायिकी क्रिया है उस्को अधिकरण की है जिस्का अधिकरण की तिस्को कायिकी है इत्यादि | ६१५ | जीव जिस समय कायिकी आधिकरणकी प्राद्वेषिकी क्रिया म स्पृष्ट उस समय प्राणातिपात स भी स्पृष्ट, इत्यादि पूर्ववत् १ वचन बहुवचन से कहना | ६१८ |
| जिम समय मे जीव का कायिकी क्रिया है उस समय मे अधिकरण की जिस समय अधिकरण की तिस समय कायिकी एव पांचो क्रिया के सूत्र कहे | ६१६ | पाच क्रिया कही, आरम्भिकी पारिग्रही माया प्रत्यया अप्रत्याख्यान मिथ्यादर्शनप्रत्यया, आरम्भिकी आदि किस्को है, प्रमत्त सयत को, सयतासयत अप्रमत्तसंयत अप्रत्याख्यानी मिथ्यादृष्टी को क्रम से है | ६१९ |
| जिस देश में जीव को कायिकी तिस देश में अधिकरण की जिस्मे अधिकरण की तिस्मे कायिकी इत्यादि, प्रदेश में भी एव कहा, ५ क्रियापे आयोजिक की २४ दडक से ए आयकारे | ६१७ | नारकी को पाच क्रिया यावद्वैमानिक पर्यन्त, जिस्को आरम्भिकी तिस्को पारिग्रहिकी इत्यादि निर्णय | ६२० |
| | | है जीव को प्राणातिपात विरमण, काहे से जीव | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्राक | विषय और प्रश्नादि | पत्राक |
|---|---|---|---|
| | | प्ररूपणाधिकार | ७५८ |
| कितने प्रकार पज्ञ्यत्ता कही २, साकार पज्ञ्यत्ता ६ प्रकार, अनाकार पज्ञ्यत्ता तीन प्रकार है एव जीव को कहना | ७५६ | केवली इस रत्नप्रभापृथिवी को आकार हेतु उपमा दृष्टान्त वर्ण संस्थान प्रमाण से जिससमय जाणे उससमय देखे इत्यादि प्रश्न | ७६० |
| नारकी को २ पज्ञ्यत्ता, साकार पज्ञ्यत्ता ४ अनाकार २ एव स्तनितकुमार पर्यन्त | ७५७ | ( ३० पद समाप्त हुआ ) | |
| पृथिवीकाय को १ साकारपज्ञ्यत्ता एव वनस्पति पर्यन्त | ७५७ | ॥ ३१ कहते हैं ॥ | |
| द्वीन्द्रिय को १ साकार पज्ञ्यत्ता सो २ तरहकीहै एव त्रीन्द्रिय जो चक्षुरिन्द्रिय को २ साकार पज्ञ्यत्ता जैसे द्वीन्द्रिय को अनाकारपज्ञ्यत्ता १ कही, मनुष्य को जैसे जीवो को शेष जैसे नारकी यावद्वैमानिक | ७५८ | जीव सज्ञी असज्ञी के नो सज्ञी नो असज्ञी इत्यादि प्रश्न निर्णय | ७६२ |
| जीव साकारपज्ञ्यी है के अनाकार इत्यादि | | पृथिवी काय प्रश्न, एव यावच्चतुरिन्द्री मनुष्य जैसे जीव, पचेंद्रिय तिर्यच वानव्यन्तर जैसे नारकी जोतिषी वैमानिक सज्ञी, | ७६३ |
| | | ( ३१ वा पद कहा ) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| असंख्यात द्वीप | ७६९ | नीचे का चरमान्त, तिरछा असंख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर स्वविमान | ७७० |
| सौधर्म देव जघन्य अंगुल असंख्यातभाग उ०—नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा असंख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान। एवं ईशानदेवभी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे शर्करा का नीचला चरमान्त, एवं माहेन्द्रदेव भी, ब्रह्म लान्तकदेव सिर्फ नीचे तीसरी का नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्रार चौथीके नीचे का चरमान्त, आनतप्राणत आरण अच्युत देव नीचे पाचमी धूमप्रभा के नीचे का चरमान्त, नीचे मध्यम ग्रैवेयकदेव नीचे छठी के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैवेयक देव ज० अंगुल असंख्यात भाग उ० सातमी के | | अनुत्तरोपपातिक देव संभिन्नलोक नाड़ी जाणे, नारकी का अवधि त्रप्राकार, असुरकुमार या वत् स्तनितकुमार का पल्यक के आकार, पंचेंद्रिय तिर्यंच का नानाकार है, मनुष्य का भी एवं, वानव्यन्तर का पटहाकार, ज्योतिषी का झालराकार। सौधर्म देव का ऊर्ध्वमृदंगाकार एवं अच्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैवेयकदेव का पुष्प चंगेरीसमान, अनुत्तरदेव का जवकी नाली के आकार | ७७१ |
| | | नारकी यावत् स्तनितकुमार अवधि के भीतर है के बाहिर, भीतर है, पंचेंद्रिय तिर्यंच बा | |

॥ चतुर्थ उपांग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥

॥ समाप्त ॥

ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेण । वंदामिजिणवरिंद तेलोक्कगुरुंमहावीरं ॥ १ ॥
सुयरयणनिहाणंजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण । उवदंसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाण ॥ २ ॥
वायगवरवंसाओ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविएऊण जेणसुयरयणमुत्तमदिन्नं । सीसगणस्सभगवओ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणचित्तं सुयरयणदिट्ठिवायणीसंद । जहवन्नियभगवया अहमवितहवन्नइस्सामि ॥ ५ ॥ पन्नवणा १ ठाणाइं २, बहुवत्तव्व ३ ठिई ४ विसेसाय ५ । वक्कंती ६ उस्सास, ७ सन्ना ८ जोणीय ९ चरिमाइं १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२ परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ पओगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २० ॥ २ ॥ ओगाहणसंठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बंधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबंधए २६ वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवओगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ संजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४

---

व्यपगतजरामरणभयान सिद्धानभिवन्द्य त्रिविधेन । वन्दे जिनवरेन्द्रं त्रैलोक्यगुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ श्रुतरत्ननिधानं जिन वरेण भव्यजननिर्वृतिकरेण । उपदर्शिता भगवता प्रज्ञापना सर्वभावानाम् ॥ २ ॥ वाचकवरवंशेन त्रयोविंशतितमेन धीरपुरुषेण । दुर्धरधरेण मुनिना पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिना ३ ॥ श्रुतसागरादुद्धीयित्वा येनश्रुतरत्नमुत्तमं दत्तं । शिष्यगणाय भगवते तस्मै नम आर्यश्यामाय ॥ ४ ॥ अध्ययनमिदं चित्रं श्रुतरत्नं दृष्टिवादनिस्यन्दं । यथा वर्णितं भगवता अहमपि तथा वर्णयिष्यामि ॥ ५ ॥ प्रज्ञापना स्थानानि बहुवक्तव्यं स्थितिर्विशेषाश्च । व्युत्क्रान्तिरुच्छ्वास संज्ञा योनिश्चचरमाणि ॥ ६ ॥ भाषा शरीर परिणामः कषाय इन्द्रियं प्रयोगश्च । लेश्याकायस्थितिर्वा सम्यक्त्वमथान्तक्रियाचैव ॥ ७ ॥ अवगाहनासंस्थान क्रियाकर्मोपशमश्चः । बन्धको वेदकश्चैव बन्धवेदकश्च ॥ ८ ॥ वेदवेदकआहार श्चोपयोगोऽपि दर्शनम् । संज्ञावशश्चसंयमश्चैवा अवधिप्रविचारणा ॥ ९ ॥ वदेषाय समुद्घात पद्धि

॥ चतुर्थ उपांग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥

॥ समाप्त जाते ॥

परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जे रसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जे संठाणपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउरंससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया॥ जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरितावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहु

---

तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता। ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणता कषायरसपरिणता आम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता। ये स्पर्शपरिणता स्ते ऽष्टविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुस्पर्शपरिणता गुरुकस्पर्शपरिणता लघुकस्पर्शपरिणता शीतस्पर्शपरिणता उष्णस्पर्शपरिणता स्निग्धस्पर्शपरिणता रूक्षस्पर्शपरिणता। ये संस्थानपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा परिमण्डलसंस्थानपरिणता वृत्तसंस्थानपरिणता त्र्यस्रसंस्थानपरिणता चतुरस्रसंस्थानपरिणता आयतसंस्थानपरिणता। ये वर्णतः कालवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुकस्पर्शपरिणता

वे, यणा ३५ यतम्रोसमुग्घाए ३६ ॥ १ ॥ से किं त पन्नवणा ? पन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तजहा—जीवपन्नव णाय अजीवपन्नवणाय। सकित अजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता, तजहा—रूविअजीवपन्नवणा अरूवि अजीवपन्नवणाय। सेकित अरूविअजीवपन्नवणा ? अरूविअजीवपन्नवणा दसविहा पन्नत्ता तजहा—धम्मात्थिकाए धम्मात्थिकायस्सदेसे धम्मात्थिकायस्सपएसा, अधम्मात्थिकाए अधम्मात्थिकायस्सदेस अधम्मात्थिकायस्सपएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए १० सेत्तअरूविअजीवपन्नवणा॥ सकित रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तजहा—खधा खधदेसा खधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासओ पचविहा पन्नत्ता, तजहा—वन्नपरिणया गधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया सठाणपरिणया। जेवन्नपरिणया त समासओ पचविहा पन्नत्ता, तजहा—कालवन्न

---

कृत्स्नमित्यर्थम्। अथ प्रज्ञापना कस्मात् द्विधा प्रज्ञापनामता ॥ १० ॥ तद्यथा जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना च। सा कतिविधा अजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापना अरूप्यजीवप्रज्ञापना च अथ कतिविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना, अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा धर्मास्तिकायः धर्मास्तिकायस्य देशः धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः अधर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकायस्य देशो ऽधर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशाः, अद्धासमयः १ सैषा अरूप्यजीवप्रज्ञापना। अथ सा का रूप्यजीवप्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—स्कन्धाः स्कन्धदेशाः स्कन्धप्रदेशाः परमाणुपुद्गलाः ; ते समासतः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा वर्णपरिणताः गन्धपरिणताः रसपरिणताः स्पर्शपरिणताः संस्थानपरिणताः। ये वर्णपरिणता स्त समासतः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणताः शुक्लवर्णपरिणताः। ये गन्धपरिणता स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता

परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अम्बिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ
कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिण
तावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिण
तावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि ।
जवण्णओ हालिद्दवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणता
वि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खड
फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास
परि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंसस
ठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जेवण्णओ सुक्किल्लवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंध

---

म्लपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता
अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि
उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता
अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतः शुक्लवर्णपरिणताः ते गन्धतः सुरभिगन्ध
परिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता कटुकरसपरिणता कषायरसपरिणता अम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता अपि ।
स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्ण

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जे वण्णओ नीलवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे वण्णओ लोहियवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरस

---

अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतो लोहितवर्णपरिणता ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये वर्णतो हारिद्रवर्णपरिणता ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभि

चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जे गधओ दुब्भिगधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरस परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमंडलसठाणपरिणतावि वट्टसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जे रसओ तित्तरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहियवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्ण परिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप

---

अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये गन्धतो दुरभिगन्धपरिणता स्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरस परिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतस्तिक्तरसपरि णतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्ध तः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि

परिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अम्बिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लहुयफासपरिणतावि सीयफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे गंधओ सुब्भिगंधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणयावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि

---

स्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये गन्धतः सुरभिगन्धपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि । रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता

हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ अंबिलरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि। संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ महुरपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्ण०

---

हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतोऽम्लरसपरिणता ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता

रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, सठाणओ परिमण्डलसठाणपरिणतावि वट्टसठा णपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि। जेरसओ कडुयरस परिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किलवण्णपरिणतावि, गधओ सुब्भिगधपरिणतावि दुब्भिगधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासप० मउयफा सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिण तावि, सठाणओ परिमण्डलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप रिणतावि। जे रसओ कसायरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालि

---

लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परि मण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कटुकरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्ल वर्णपरिणता अपि। गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरु स्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयत संस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कषायरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारि

फासपरिणतावि, सठाणत्तं परिमंडलसठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि। जे फासत्तं मउयफासपरि० ते वन्नत्तं कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्न परि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गधत्तं सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्तं तित्त रसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासत्तं गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, सठाणत्तं परि मंडलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाण० आयतसठाणपरिणतावि। जे फासत्तं गरुयफासपरिणता ते वन्नत्तं कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलव न्नपरिणतावि, गधत्तं सुब्भिगधपरि० दुब्भिगधपरिणतावि, रसत्तं तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस

---

यता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो मृदुस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो गुरुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटु

लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणता
वि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण
फासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंसस
ंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासओ कक्खडफासपरि० ते वन्नओ कालव
न्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किलवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि०
दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण
तावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख

---

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिण
ता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,
स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्श
परिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्र
संस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता
अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुर
भिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिण
ता अपि, गुरुलघुशीतोष्णस्निग्धरूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरि

लवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधप
रिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि,
फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासप
रिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयत
संठाणपरिणतावि । जे फासओ उसिणफासपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णप०
हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि०
कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफा

---

अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्ण
परिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता
अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुरर
सपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्श
परिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि च
तुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः उष्णस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अ
पि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत

परि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ लहुयफासपरि णता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलर सपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ सीतफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नी

---

कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो लघुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणप० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जंसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहि

---

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाण परि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ णिद्ध फासपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णप रिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुय फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंस संठाणपरि० चउरससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासओ लुक्खफासपरिणता ते वण्णओ काल वण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधप०

---

कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतः स्निग्धस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण ताथि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण फासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणप० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहित वन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, र सओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खड फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास परि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वन्नओ कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहि

---

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुक स्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्ण वर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरि णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

तवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो तंससंठाणपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि०

---

धुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो चउरससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि०

---

स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतश्चतुरस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्श

तवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि। जे संठाणतो तंससंठाणपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि०

---

मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्श परिणता अपि

गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा? परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तंजहा–अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, सेत्तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्तं असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा? एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा–पुढविकाइया

---

गृहलिङ्गसिद्धाः १५। सैषा अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अप्रथमसमयसिद्धाः द्विसमयसिद्धाः त्रिसमयसिद्धाः चतुःसमयसिद्धाः यावत् संख्येयसमयसिद्धाः असंख्येयसमयसिद्धाः अनन्तसमयसिद्धाः सैषा परम्परसिद्धसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। सैषा असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा–एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा–पृथिवीकायिकाः, अप्कायिकाः, तेजःकायिकाः वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः पृथिवीकायिकाः? । पृथ्वीकायिका

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लहुयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि ॥ सत्त रूविअजीवपन्नवणा ॥ सेत्त अजीवपन्नवणा ॥ से किंत जीवपन्नवणा ? जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तजहा—संसारसमावन्नजीवपन्नवणाय असंसारसमावन्नजीवपन्नवणाय । से किंत असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तजहा—अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंत अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नरसविहा पन्नत्ता, तजहा—तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२

---

परिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि ॥ सैषा रूप्यजीव प्रज्ञापना ॥ सैषा अजीव प्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा जीवप्रज्ञापना ? । जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? । अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा तीर्थसिद्धाः १ अतीर्थसिद्धाः २ तीर्थकरसिद्धाः ३ अतीर्थकरसिद्धाः ४ स्वयंबुद्धसिद्धाः ५ प्रत्येकबुद्धसिद्धाः ६ बुद्धबोधितसिद्धाः ७ स्त्रीलिङ्गसिद्धाः ८ पुरुषलिङ्गसिद्धाः ९ नपुंसकलिङ्गसिद्धाः १० स्वलिङ्गसिद्धाः ११ अन्यलिङ्गसिद्धाः १२ गृहिलिङ्गसिद्धाः १३ एकसिद्धाः १४

गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा? परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तंजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, सेत्तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्तं असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा? एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया

---

गृहलिङ्गसिद्धाः १३ ... एकसिद्धाः १४ अनेकसिद्धाः १५। सैषा ऽनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अप्रथमसमयसिद्धाः द्विसमयसिद्धाः त्रिसमयसिद्धाः चतुःसमयसिद्धाः, यावत् सङ्ख्येयसमयसिद्धाः असङ्ख्येयसमयसिद्धाः अनन्तसमयसिद्धाः सैषा परंपरसिद्धसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। सैषा ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? । एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-पृथिवीकायिकाः, अप्कायिकाः, तेजःकायिकाः वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः पृथिवीकायिकाः? । पृथ्वीकायिका

आउक्काइया तेउक्काइया वाउक्काइया वणस्सइकाइया। से किं तं पुढविकाइया? पुढविकाइया दुविहा प०, तंजहा—सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया। से किं तं सुहुमपुढविकाइया? सुहुमपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइया य, सेत्तं सुहुमपुढविकाइया। से किं तं बादरपुढविकाइया? बादरपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सण्हबादरपुढविकाइया य खरबादर पुढविकाइया य। से किं तं सण्हबादरपुढविकाइया? सण्हबादरपुढविकाइया सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किल्लमत्तिया पंडुमत्तिया पणगमत्तिया। सेत्तं सण्हबादरपुढविकाइया। से किं तं खरबादरपुढविकाइया? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे। अय तंब तउय सीसय रुप्प सुवण्णे य वइरे य ॥ १ ॥ हरियाले हिंगुलुए मणोसिला सा

---

द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः बादरपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः?। सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः। त एते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधा बादरपृथिवीकायिकाः?। बादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः खरबादरपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधाः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः?। श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—कृष्णमृत्तिकाः नीलमृत्तिकाः लोहितमृत्तिकाः हारिद्रमृत्तिकाः शुक्लमृत्तिकाः पाण्डुमृत्तिकाः पनकमृत्तिकाः। त एते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधाः खरबादरपृथिवीकायिकाः?। खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—पृथिवी शर्करा वालुकाः उपलाः शिला लवणमूषम्। अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानि वज्राणि ॥ १ ॥ हरितालहिङ्गुलके मनःशिला सीसकमञ्जनप्रवालम्। अभ्रपटलाभ्रवालुकाः बादरपृथिवीकायेऽभिभेदाः ॥ २ ॥ गोमेयक

गजणपवाले। छाब्रपकलम्रवालुय घादरकाएमणिविहाणा ॥२॥ गोमेज्जएयरुयए छाकेफालिहेयलोहियक्खेय। मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइदनीलेय ॥ ३ ॥ चदणगरुयहंसे पुलएसोगधिएययोघद्वे। घदप्पभवेरुलिए जलकंतेसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयाघन्नेयतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय छापज्जत्तगाय, तत्थण जेते छापज्जत्तगा तेण छासपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसि वण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ संखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगाणिस्साए छापज्जत्तगाय क्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा छासंखेज्जा। सेत्त खरबादरपुढविकाइया। सेत्तबादरपुढविकाइया॥ सेत्तपुढविकाइया ॥ से किंत छाउक्काइया ? छाउक्काइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा—सुहुमछाउक्काइयाय बादरछाउक्काइयाय। से किंत सुहुमछाउक्काइया ? सुहुमछाउक्काइया दुविहा पन्नत्ता, तजहा—पज्जत्तसुहुम

---

चन्द्रकान्त स्फटिकलोहिताक्षास्तु ॥ मरकतमसारगल्लो भुजमोचकइन्द्रनीलो च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिकहंसा पुलकसौगन्धिकचयाद्व्यो ॥ चन्द्रप्रभवैडूर्यो जलकान्त सूर्यकान्तश्च ॥ ४ ॥ ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च तत्र ये एते ऽपर्याप्तकास्ते असम्प्राप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एत वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्रागशो विधानानि संख्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति यत्रैकस्तत्र नियमः असंख्येया । त एते खरबादरपृथ्वीकायिका । त एते बादरपृथ्वीकायिका । त एते पृथ्वीकायिका ॥ अथ कतिविधाः अप्कायिका ?। अप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूक्ष्माप्कायिका बादराप्कायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्माप्कायिका ?। सूक्ष्माप्कायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकाः । एते सूक्ष्माप्कायिकाः ॥ अथ कतिविधा बादराप्कायिकाः ?। बादराप्कायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अवश्याय, हिम महिका, करको

आउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय ॥ सेत्त सुहुमआउकाइया ॥ से किंत बादरआउकाइया ? बादर आउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा उसा हिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नतहप्पगारा तेसमा सत्ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय, अत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेते पज्जत्ता एएसिणवण्णादेसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा । सेत्त बादर आउकाइया ॥ सेत्त आउकाइया ॥ से किंत तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमतेउ काइयाय बादरतेउकाइयाय, से किंत सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्त

---

हरतनु' शुद्धोदकं, शीतोदकम् उष्णोदकं क्षारोदकम् ईषदम्लोदकम् अम्लोदकं लवणोदकं वारुणोदकं क्षीरोदकं, क्षोदोदकं, रसोदकं, ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये एते अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः । तत्र ये एते पर्याप्तास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि । योनिप्रमुखानि [illegible] पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः । तदेते बादराप्कायिकाः । [illegible] कायिकाः ? । तेजः कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सूक्ष्मतेजः कायिका [illegible] । [illegible] सूक्ष्मतेजः कायिकाः ? । सूक्ष्मतेजः कायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । तदेताः सूक्ष्मतेजःकायिकाः । अथ कतिविधाः बादरतेजःकायिकाः । बादरतेजःकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अङ्गारः, ज्वाला, मुर्मुरः, अर्चिः, अलातं शुद्धाग्निः, उल्का, विद्युत्, अशनिः, निर्घातः, संघर्षसमुत्थितः, सूर्य

गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुहुमतेउकाइया । से किंत बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणिस्सिए, जयावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एएसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखिज्जा ॥ सेत्त बादरतेउकाइया ॥ सेत्त तेउकाइया ॥ से किंत वाउकाइया ? वाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंत सुहुमवाउकाइया ? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय । सेत्त सुहुमवाउकाइया । से किंत बादरवाउकाइया ? बादरवा० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा पाईणवाए पडीणवाए दाहि

---

कास्तमविप्रभृतः ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये एते अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः । तत्र ये पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि । योनि प्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः । तदेते बादरतेजस्कायिका । तदेते तेजस्कायिका ॥ अथ कतिविधा वायुकायिकाः ? । वायुकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा सूक्ष्मवायुकायिका बादरवायुकायिकाश्च । अथ कतिविधा सूक्ष्मवायुकायिका ? । सूक्ष्मवायुकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ता । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकाश्च । तदेते सूक्ष्मवायुकायिका । अथ कति विधा बादरवायुकायिका । बादरवायुकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्राचीनवायु, प्रतीचीनवायु, दक्षिणवायु उदीचीनवायु, ऊ

णवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामे वाउक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता, तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा एएसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरवाउकाइया ॥ सेत्तं वाउकाइया ॥ से किं तं वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०, तंजहा सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया २ दुविहा पन्नत्ता, तं० पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय । सेत्तं सुहुमवणस्सइकाइया । से किं तं

---

र्ध्ववायुः अधोवायुः तिर्यग्वायुः विदिग्वायुः, वातोद्भ्रामः, वातोत्कलिका, वातमण्डली' उत्कलिकावातो, मण्डलिकावातो: गुञ्जावातो झञ्झावातो संवर्तवातो, घनवाततनुवातः शुद्धवात ये चान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पर्याप्तका' अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये एते अपर्याप्तकास्ते असम्प्राप्ताः । तत्र ये एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्यातानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैक एव नियमा असंख्येयाः । सेत्तं बादरवायुकायिकाः । तदेते वायुकायिकाः ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिकाः ? । वनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका बादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः ? । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः तदेते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा बादरवनस्पतिकायिकाः ? बादरवनस्पतिकायिकाः द्विविधाः

बादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पन्नत्ता, तजहा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरबादरव णस्सइकाइयाय, से किंत पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पन्नत्ता, तजहा रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंत रुक्खा२ दुविहा पन्नत्ता, तजहा एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंत एगट्ठिया२ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा निंबंबजंबुकोस बसालअंकोल्लपेलुसेलूया । सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवयरिट्ठे विभेल एहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरिणि बोधव्वेधायइपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरए सण्हातहसीसवायअसणेय । पुन्नागनागरुक्खे सिरिवन्नीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणमूलाविअसंखिज्जजीविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगट्ठिया ॥

प्रज्ञप्ता । तद्यथा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका ? । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा वृक्षा गुच्छा गुल्मालता वल्ल्य पर्वगाश्चैव ॥ तृणवलयपर्वहरितौषधिजलरुहकुहणाश्च बोद्धव्या ॥ १ ॥ अथ कतिविधा वृक्षा ? । वृक्षा द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा एकास्थिका बहुबीजकाश्च । अथ कतिविधाः एकास्थिका ? । एकास्थिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा निम्बाम्रजम्बुकोशम्ब शालाङ्कोठपालुश्लेष्माख्या ॥ शल्लकीमोचकमालुकबकुल पलाशकरञ्जेरात् ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिष्ठा विभीतकहरीतकभल्लातक ॥ उम्बेभरिकाक्षीरणी बोद्धव्यौधातकीप्रियालौ ॥ २ ॥ पूतिकनिम्बकरञ्जाः श्लक्ष्णशिंशपाशनकास्तु ॥ पुन्नागनागवृक्षौ श्रीपर्णीतथाशोकः ॥ ३ ॥ येपि चान्य तथाप्रकारा एतेषा मूलानि असंख्यजीवकानि । कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पाण्यनेकजीवकानि । फलान्येकास्थिकानि । फलो एकास्थिकाः ।

णवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामे वाउक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं असंपत्ता, तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा एएसि णं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बायरवाउकाइया ॥ सेत्तं वाउकाइया ॥ से किं तं वणस्सइकाइया? वणस्सइकाइया दुविहा प०, तंजहा सुहुमवणस्सइकाइया य बायरवणस्सइकाइया य, से किं तं सुहुमवणस्सइकाइया? २ दुविहा पन्नत्ता, तं० पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया य अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया य। सेत्तं सुहुमवणस्सइकाइया। से किं तं

---

र्ध्ववातः अधोवातः तिर्यग्वातः विदिग्वातः, वातोद्भ्रामः, वातोत्कलिका, वातमण्डली, उत्कलिकावातो, मण्डलिकावातो। गुञ्जावातो, झञ्झावातो संवर्तवातो, घनवातस्तनुवातः शुद्धवातः ये चान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तका च। तत्र च एते अपर्याप्तकास्ते असम्प्राप्ताः। तत्र च एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति। यत्र एकस्तत्र नियमादसंख्येयाः। तदेते बादरवायुकायिकाः। तदेते वायुकायिकाः ७ अथ के ते वनस्पतिकायिकाः? वनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका बादरवनस्पतिकायिका ८ अथ के ते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः? सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः तदेते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः। अथ के ते बादरवनस्पतिकायिकाः? बादरवनस्पतिकायिकाः द्विविधाः

ना ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअडूरुसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपिरिली गयमारिणिकुव्वकारियाभंडी । जावइकेयइतहगंज पाडलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं गच्छा ॥ से किं तं गुम्मा२ अणगविहा पन्नत्ता, तंजहा सेरियणोमालिय कोरिंटय बंधुजीवगमणोज्जा । पीइयपाणकणइर कुज्जायतहसिंदुवारय ॥१॥ जाईमोग्गरतहजूहियायतहमल्लियायवासंती । वत्थुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचंप ॥२॥ चपगजाइणवणी इयायकुंदतहामहाजाई । एवमणेगागारा हवंतिगुम्मामुणयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्तं गुम्मा ॥ से किं तं लयाओ लयाओ अणगविहाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पउमलयानागलया असोगचंपयलयाचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं लयाओ ॥ से किं तं वल्ली२ अणगविहाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—पूसफलीकालिंगी तुंबीतपुसीय

---

[illegible] करवीररावणमहास्था ॥ ४ ॥ जाउलतमालपिरलीगज मारकुब्बकारिकाभिण्डी ॥ यावककेतकिगुंजी गवडपाटलादास्यंकोल्लाः ॥ ५ ॥ ये चान्य तथाप्रकारास्ते गुच्छाः । अथ कास्ते गुल्मा ? गुल्मा अनेकविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा सेरिकानवमालिका कोरण्टकबन्धुजीवकमनो[illegible] ॥ पीतकरवीरकणेरकरवीरकुब्जकीसिन्दुवारो ॥ १ ॥ जातीमुद्गरयूथिका मल्लिकावासन्ती ॥ वस्तुलकच्छुलसेवालग्रंथिमगदन्तिका[illegible] ॥ २ ॥ चम्पकजातीनवमल्लिका कुन्दस्तथा महाजाति ॥ एवमनेकाकारा भवन्ति गुल्मा अनेकाधा ॥ ३ ॥ तदेते गुल्माः ॥ अथ कास्ता लता लता अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पद्मलतानागलता अशोकचम्पकलताचूतलता । वनलतावासन्तीलता अतिमुक्तककुन्दश्यामलता ॥ १ ॥ याश्चान्यास्तथाप्रकारास्ता लताः । अथ कास्ता वल्ल्यः वल्ल्योऽनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पुंसफलीकालिङ्गी तुम्बीत्रपुसीएर्वालुकी । वालुकीपटोली पञ्चाङ्गुलिकानालीच ॥ १ ॥ कङ्गुलतावल्लुकी कक्कोटकाकारिका सुभगा । कुयवावायसुक्तीस्वा [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

सेत्त एगट्ठिया ॥ से किंत बहुबीयगा? अणेगविहा प०, तं० अत्थियतेंदुकविठे अंबाडगमाउलिंगबिल्ले य
आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ णग्गोहणंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलक्खरुक्खेय । काउंबरि
कुत्थुंभरि बोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएछत्तो हासिरीसेसत्तवण्णदहिवन्ने । लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकु
डगकयंबेय ॥३॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखिज्जजीविया, कंदावि खंधावि तयावि सालावि
पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फाय अणेगजीविया, फला बहुबीया, सेत्त बहुबीयगा॥ सेत्त रुक्खा ॥
से किंत गुच्छा? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—वाइंगणिअल्लइपुंड इयतहकच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढ
इणीली तुलसीतहमाउलिंगाय ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अतसीबिल्लीयकायमाईय । चच्चुपडोलाकंदलि
पाउव्वावत्थुलबदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे । णिग्गुंडिअक्कतूवरि अट्टईचेवतलउड

---

यत्र वर्त्तिविधा बहुबीजकाः ।। बहुबीजका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता । तद्यथा अस्तिकतिन्दुककपित्थ आम्रातकमातुलिङ्गबिल्वाश्च ॥ आमलकपनस
दाडिम अश्वत्थोदुम्बरवटाश्च ॥ १ ॥ न्यग्रोधनन्दिवृक्षो पिप्पलीशतरीप्लक्ष ॥ काकोदुम्बरि कुस्तुम्बरी बोद्धव्या देवदाली ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible]

री हियसिग्गुयबेयव्वीपुरुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविभंगूय । महुरतणलुणयसिप्पिय बोधव्वे सुंकलितणय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं तणा ॥ से किंतं वलया? वलया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—ताले तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजावतिकेयइ, कदलितहचम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं वलया । से किंतं हरिया? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अज्जोरुहवोडाणे, हरितगतहतंदुलेज्जगतणेय । वत्थुलपोरगमज्जार, पोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणिज्जअज्जएयभूयणए । चोरगदमणगमरुयग सतपुप्फिंदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं हरिया । से किंतं ओसहीओ? ओसहीओ अणेगविहाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—सालीवीहीगोहुमजवजवकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ आलिसंदसतीणपलिमंथा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोदूसा । सणसरिसवमूलबीया जेयावन्ने तहप्प

---

तिर्बोद्धव्यः ॥ पूगफलखर्जूरं बोद्धव्यो नालिकेरश्च ॥ २ ॥ येऽप्यन्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः । हरितका अनेकविधाः । तद्यथा अध्यारुहवोडा हरिततण्डुलीयकतृणानि ॥ वस्तुलपोरगमार्जार पोइवल्लीपालक्या ॥ दकपिप्पलिकादर्वी स्वस्तिकशाक[illegible] ॥ १ ॥ मूलकसर्षपाम्लशाकजयन्तकश्चैव ॥ तुलसीकृष्णाराली फणिज्जार्जकभूतनकम् ॥ चोरकदमनकमरुचक शतपुष्पीन्दीवरंचतथा ॥ येऽप्यन्ये तथाप्रकारास्ते हरिताः ॥ अथ काता औषधयः । औषधयोऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । शालिव्रीहिगोधूमा यवयवकलमसूरतिलमुद्गाः ॥ माषनिष्पावकुलत्थाः आलिसन्दकसतीनपलिमन्थाः ॥ १ ॥ अतसीकुसुम्भकोद्रव कङ्गुरालकमाषकोद्रवकाः ॥ शणसर्षपमूलकबीजाः येऽप्यन्ये तथाप्रकारास्ताश्च

एलवालुकी । घोसातईपफोला पचगुलिण्णायणालीय ॥ १ ॥ कगूलयाकवुइया कक्कोफइकारियल्लईसुभगा । कुययायत्रागलीपा वावल्लीसइदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोया अइमुत्तय नागलयाकण्हसूरवल्लीय सघट्टसुमिण सात्रिय जासुमणकुविंदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअम्बावल्ली वीरविरालीजियंतिगोवाळी । पाणीसामावल्ली गुंजा वल्लीपयस्याणी ॥ ४ ॥ ससविंदुगोत्तफुसिया गिरिकण्णइमालुयाय अंजणई । दहफुल्लयकोगलिमा गलीयतह अक्कवोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त वल्लीओ ॥ स किंत पव्वगा २ अणगविहा पन्नत्ता, तजहा इक्खूयाइक्खुवाडये वीरुणातइक्कडेफमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कक्का वसेपवयवसेय । उदएकुडएविमए कंडावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्त पव्वगा ॥ से किंत तणा ? तणा अणगविहा पन्नत्ता, तजहा—सेडियमतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोडइला । अज्जुणअसाढए

---

तिमुक्तक नागलतेकष्णसूरवल्ली च । सघट्टसुमनसोपिच जासुमना कुविन्दवल्लीकाः ॥ ३ ॥ मुद्रिकाम्बावल्ली वीरविरालीजयन्तीगोपाली । पानी यश्यामावल्ली गुञ्जावल्लीवत्सादनी ॥ ४ ॥ शशबिन्दुगोत्रस्पृष्टा गिरिकर्णिकामालुकाञ्जनकी । दधिपुष्पकाकोदली च तथैव अर्कबोन्दीका ॥ ५ ॥ या चान्यास्तथा प्रकारास्ता वल्ल्यः । अथ के ते पर्वकाः पर्वका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—इक्षुरिक्षुवाटिका वीरणा इत्कडो माषश्च । सुण्ठः शरो वेत्रस्तिमिरः शतपोरकनलश्च ॥ १ ॥ वंशोवेणुः कनकः कर्कावंशः चापवंशश्च । उदकः कुटजो विमकः कण्डावेलुककल्याणः ॥ २ ॥ ये चान्ये त थाप्रकाराः पर्वकाः । अथ कानि तृणानि तृणानि अनेकविधानि प्रज्ञप्तानि । तद्यथा—सेटिका भक्तिका होत्रिका दर्भः कुशः पर्वकश्च पोटकीला । अर्जुनाषाढक ... रोहिषकः ... ॥ १ ॥ ... यानि चान्यानि तथा प्रकाराणि तानि तृणानि । अथ के ते वलया । वलया अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—ताल तमाल तक्कली ... ॥ १ ॥ ...

री हियसिसुयवेयस्सीरजुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविभंगूय । महुरतणलुणयसिप्पिय बोधव्वे सुंकलितणय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं तणा ॥ से किंतं वलया? वलया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—ताले तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजायतिकेयइ, कदलितहधम्मरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं वलया । से किंतं हरिया ? हरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अज्जोरुहवोडाणे, हरितगतहतंदुलेज्जगतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणिज्जअज्जएयभूयणए । चोरगदमणगमरुयग सतपुप्फीदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं हरिया । से किंतं ओसहीओ ? ओसहीओ अणेगविहाओ पण्णत्ताओ, तंजहा—सालीवीहीगोहुम जवकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ आलिसिंदसतीणपलिमंथा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोदूसा । सणसरिसवमूलबीया जेयावन्ने तहप्प

---

तिबोद्धव्य ॥ पूगफलखर्जूर बोद्धव्योनारिकेलश्च ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः । हरितका अनेक विधा । तद्यथा अध्यारुहोवोडा हरिततण्डुलीयतृणानि ॥ वस्तुलपोरगमार्जार पोईवल्लीपालकिका ॥ दकपिप्पलिकादर्वी स्वस्तिकाशाकमण्डूकी ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्लिक शाकजीवन्तकश्च ॥ तुलसीकृष्णोरालो फणिज्जकार्जकभूतृणं ॥ चोरकदमनकमरुवक शतपुष्पीन्दीवराश्च तथा ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते हरिताः ॥ अथ कास्ता ओषधयः । ओषधयो अनेकविधा प्रज्ञप्ताः । शालीव्रीहीगोधूमा यवकलममसूरतिलमुद्गाः ॥ माषनिष्पावकुलत्थाः आलिसन्दसतीनपरिमन्थाः ॥ १ ॥ अतसीकुसुम्भकोद्रव कङ्गूरालकमासकोद्रवकाः ॥ शणसरिसवमूलबीजाः येचान्ये तथाप्रकारास्ताओ

एठयालुकी । धोसातइंपफ़ोला पथगुलिख्रायणालोय ॥ १ ॥ कगुलयाकवुइया फक्षोकइकारियइंइ सुनगा । कुयधायवागठीपा धायझीलइदेयदालीय ॥ २ ॥ ख्रप्फोख्राण्डमप्रप नागलपाकएहमूरथझीप सयहसुमिण सायिप जासुमणकुयिदयझीया ॥ ३ ॥ मुद्यिखंयाग्रझी धीरयिरालीजियांतगोयाळो । पाम्मीमामायझी गुआ यझीपयख्याणी ॥ ४ ॥ ससयिदुगाम्रफुसिया गिरिकयाहमाफुपायख्रजगर्इ । दहफुझपफागरिमा गठीपतह ख्रफ्ऋयोंदीया ॥ ५ ॥ जेयायपो तहप्पगारा सेत्त यझीठ॥ म फित पह्रगा २ ख्रणगांग्रहा पणाना , तजहा ह्रएकूपाइक्रुयरूपे धीरुणातइइक्राऋपमासय । सुठेसरपयत्ते निमिरसतपोरगणाले ॥ १ ॥ पसयेलूफणए फका घंसेंपयधयसेय । उदएफुफ़एथिमए फकाधेलूपफ़ाण ॥ २ ॥ जेपायपां तहप्पगारा सेह्र पह्रगा ॥ से फित्त वणा-१ वणा ख्रणगयिहा पयापा , त जहा—घफ़ियगतियहांश्यिप वस्रफुउपह्रएपपोफ़हला । ख्रउ्ुणख्रसावए

---

[illegible] गृणइतेकमपूरवास्ती च । पंपयेमूमणसोपिच भातमुमका कुविम्मणीकाः ॥ १ ॥ पुद्विकाख्याकझरी धीरविरालीजपश्रीपीपाती । पाधी यमोमा[illegible] [illegible]पयख्यापी ॥ ४ ॥ ओपवतीयहिणीया पुरसीमिरिफर्विमासुकाण्डतकी । ह्निपुम्मतागलिमोमरी तधिडयाम्राफुयोदीका ॥ ५ ॥ मर[illegible] संकाराच्छा वक्ष्या । पम वे ते पर्वगा पर्वेमा पनेकविपा प्रपमा[illegible]—इक्षुपाइसुवादिका [illegible] सुरुठी सुरुपवेक्रा[illegible]पोरनयासाव ॥ १ ॥ पंपीवेतूकचका [illegible] ॥ २ ॥ पेपाम्ये त पाम[illegible] पर्वमोनि [illegible]ाणि मवाणि पनाणि [illegible] (प्रकीतानि) [illegible]—पत्वरी कुमार्य: वरवथुकठोलवाविकपूच । कपुरतवप् [illegible] सानिवानानि तथा प्रकारापि ताणि मवाणि । पच कतिविधा: भवपा:? । भवपा: बनेकविधा: प्रमाप्ता: । [illegible] वासकमालवकसो वत्सारिवधारिकाबारकसाका । वरवर्तानिवीविवरो [illegible] ॥ १ ॥ पूनवपीविकूपको [illegible]

साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ छणेगविहा पन्नत्ता, तजहा—छावए पणए सेवाले लोहिणी निहू त्थिभगा छस्सकन्नी सिइकन्नी सिउंढातन्नोमुसढीय ॥ १ ॥ रुरुकुएहरियाजारु, छीरविरालीतहेवकिहीया हलिद्दासिगवरेय, छालुग्गमूलएइ यकठूय कणकञतूमञ्जपोगलइतहेव मञ्जसिगी विरुहा सप्पसुगधा छिन्नरुहा चेव वायरुहा पाढामियवालुकी मञ्जररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दंति चण्डिकिहाति यावरा मासपणी मुग्गपण्णि जीवियरसिके य रेणुया चेव काञ्जुली खीरकाञ्जुली तया नगाणहाईयाकिमिरा सिन्नहुमुत्याणगलइपेलुगाइय किरह पउले य हठेहरतणुया चेव लोयाणी कराहकदेवज्जे सूरणक तहेय खल्लूङ एए छणतजीवा जेयावन्ने तहाविहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलित्तियावरे । ससेज्ज मसंखिज्जा बोधह्वा छणतजीवाय ॥१॥ सिघाङगस्सगुच्छो छणेगजीवाउ होति णायव्वा। पत्ता पत्तयजिया दोरिणयजीवाढ फले

---

तथाथा पनक पनक सेवाल लोही थीहू स्तिवका । अश्वकर्णी सिंहकर्णी सवंढि ततो मुसुंढी ॥ १ ॥ तरुकन्दकुन्दरिविलवीरविराली तथाथाता । हारिद्रशृङ्गवेर आलूमूलीकन्दु कन्दकन्दमधुपासेव ॥ २ ॥ मधुशृङ्गीविरुढी सवसुगन्धिच्छिन्नरुहा । वसनरुहावालाली मधुररसाथराजलता ॥ ३ पद्मामाठरिदान्ती चण्डीकिधातिकावरामासपर्णी । मद्गपर्णीजीवरसिका रेणुकाकाकोलीक्षीरकाकोली ॥४॥ भृङ्गाकमरीहिमाधा गुल्मापसवमुथा च । लघपीसइयदकन्दी तथाहरतनुलोपाली ॥ ५ ॥ कृष्णकन्दवज्रकन्दौ सूरणकन्द खल्लूक । एते अनन्तजीवा ये चाप्यन्ये तथापूनाः ॥ ६ ॥ तृणमूलकन्दमूला वशीमूलास्तथापरे । सल्येया असङ्ख्येया बोद्धव्यानन्तथापरे ॥ १ ॥ शृङ्गाटकस्सगुच्छोप्य नेकजीवोभवतिविज्ञेय । पत्रा प्रत्येकजीवा द्वौद्वौजीवोफलविशेषी ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यभग्नस्य समोभङ्गस्तुदृश्यत ॥ अनन्तजीवास्तन्मूले येवाप्यन्येतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्त मूले यवाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवा

गारा सेत्त हसहीह । से कित जलरुहा २ अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा—उदए अवए पणए सेवाले कलं-
हढे कसेरुया कच्छभाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुभगे सोगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयपत्ते सह-
स्सपत्ते कल्हारे कोकणदे अरविंदे तामरस भिस भिसमुणाले पोक्खल पोक्खलत्थिभुए जेयावण्णे तहप्प-
गारा सेत्त जलरुहा । से कित कुहणा ? अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा—आए काए कुहणे कुणक्के
दव्वहलिया सप्फाए सज्झाए छत्तोए वंसीणहिया कुरए १ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्त कुहणा । णाणाविहसं-
ठाणा रुक्खाणएगजीवियापत्ता । खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसवाण सिलेस-
मिस्साणवट्टियावट्टी । पत्तेयसरीराण तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पडिया बहुएहिंतिलेहिं
संहतासंती । पत्तेयसरीराण तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइया । से किंतं

अथ कतिविधा जलरुहाः ? । जलरुहा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—उदके अवके पनके शैवाले कलम्बुके हढे ॥ कसेरुक[illegible]
उत्पलपद्मकुमुदानि ॥ १ ॥ नलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीक [illegible] सहस्रपत्र[illegible]तामरस बिसबिसमृणाल पुष्कर पुष्करास्ति-
भेदाः । ये चान्ये तथाप्रकारास्ते जलरुहाः । अथ कतिविधाः कुहणाः । कुहणा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः [illegible] कुहणे
[illegible] द्रव्यहलिका, [illegible] सज्जाक, छत्राक, वंशीनहिका [illegible] कुहणाः । नानाविधसंस्थाना वृक्षा
[illegible] । प्रत्येकशरीराणां [illegible]
[illegible] । प्रत्येकशरीराणां तथा भवन्ति शरीरसंघाताः ॥ ३ ॥ [illegible] प्रत्येकशरीर-
बादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः ।

हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेखधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभग्गाए हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवातयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसइ । परित्तजीवेपवालउ जेयावन्नेतहाविहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवफलेसउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सभग्गस्स हीरोभग्गेपदीसई । परित्तजीवउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकट्ठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायाव

---

स्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तन्मूले ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तत्कन्दे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तत्स्कन्धे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु भग्नाया हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तच्छाले ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ५ ॥ यस्य प्रवालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तत्प्रवाले ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तत्पत्रे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तत्पुष्पे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यस्य फलस्य तु भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते । प्रत्येकजीवास्तु फले ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्बीजे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यस्त्वक् बहुला भवेत् । अनन्तजीवास्तत्त्वचि या चाप्यन्या तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यस्त्वक् बहुला भवेत् । अनन्तजीवास्त्वक् ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य शा

णतजीवे उसेमूले जेयाग्रव्रोतहायिहा ॥१॥ जस्सकंदस्स
प्पविया ॥२॥ जस्समूलस्सन्नगस्स समोन्नगोयदीसए। छ्णतजीवे उसेमूले जेयाग्रव्रोतहायिहा ॥१॥ जस्सकंदस्स
न्नगास्स समोन्नगायदीसइ । छ्णतजीव्र उसेकंदे जेयावन्नेतहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सन्नगस्स समोन्नगोय
दीसई । छ्णसजीवउसखधे जेयाग्रन्नेतहायिहा ॥ ३ ॥ अस्सतयाएन्नग्गाए समोन्नगोयदीसइ । छ्णतजीवा
तयासाउ जयावन्नातहायिहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स समान्नगोपदीसई छ्णतजीवउसेसाल जेयावन्ने
तहायिहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स समान्नगोपदीसइ । छ्णतजीवपवालेसे जेयाग्रन्नातहायिहा ६ ॥
जस्सपत्तस्सन्नगास्स समोन्नगोपदीसई। छ्णतजीवउसेपत्त जेयावन्नतहायिहा ॥ ७॥ जस्सपुप्फस्सन्नगस्स
समोन्नगोपदीसई । छ्णतजीवउसपप्फे जेयावन्नतहायिहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई ।
छ्णसजीवफलेसे उ जेयावन्नतहायिहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । छ्णतजीयउसबीए
जेयावन्नेतहायिहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स हीरोन्नगोपदीसइ । परित्त जीवउसेमूले जेयावन्नतहायिहा १
जस्सकंदस्सन्नगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्तजीवउसेकंदे जेयावन्नेतहायिहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सन्नगस्स

---

सम्मूल यवाप्यम्य तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य [illegible] प्रथमा च समो भङ्गोऽपि दृश्यते ॥ [illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] समो भङ्गः दृश्यते ॥ [illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ यस्य [illegible] समो भङ्गः दृश्यते [illegible]
[illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य [illegible] समो भङ्गः दृश्यते ॥ [illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य [illegible]
[illegible] समो भङ्गः दृश्यते ॥ [illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यस्य [illegible] च [illegible] समो भङ्गः दृश्यते [illegible]
[illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य [illegible] समो भङ्गः दृश्यते ॥ [illegible] येऽप्यन्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य [illegible]

हीरोभंगेपदीसई । परिमजीवेउसेस्खधे जेयावमोतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभज्जमाए हीरोभंगेपदीसई । परि
हीरोभंगेपदीसई । परिमजीवेउसेस्खधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभज्जमाए हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले
त्तजीवातयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेपवालउ जेयावन्नेतहाविहा
जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सभंग
६ ॥ जस्सपत्तस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभंगस्स हीराभंगेपदीस
स्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभंगस्स हीराभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसे
ई । परित्तजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सभंगस्स हीराभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसे
बीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकट्ठाउ छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायाव

स्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तन्मूले ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्स्कन्धे
ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त स्कन्ध ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु भ
ग्नाया हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त
च्छाले येचाप्यन्ये तथाविधा ॥ ५ ॥ यस्प्रवालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तत्र स्यु ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भ
ग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पत्र ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरा भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पु
ष्पे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यत्फलस्य तु भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फले ये चाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भ
ग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्बीजे ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यास्त्वक् बहुला भवेत ॥ अनन्तजीवास्त
त्वचि या चाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो स्त्वक् बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्त्वच ये चाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य शा

स्मातह्राविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ छल्लीअहलतरीजवे । झणतजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउ छल्लीयहलतरीजवे । झणतजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडकठाउ छल्लीयहलतरीजवे झणतजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठाउ छल्लीतणुयरीजवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ छल्लीतणुयरीजवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउ छल्लीतणुयरीजवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडकठाउ छल्लीतणुयरीजवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायायझातह्राविहा ॥ ४ ॥ चक्कागजजमाणस्स गठीचुणघणोजवे । पुढवीसरिसएणजेदेण झणतजीवयवियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिरागपत्त सच्छीरजचहोइनिच्छीरं । जंपियपणठसंधिं झणतजीवयवियाणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजठयायठया

---

यस्य काष्ठेभ्यः [illegible] बहुतरा भवेत् । अनन्तजीवा त्वगपि या चाप्यन्या तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेभ्यो त्वक् तनुतरी भवेत् [illegible] जीवास्त्वपि तु या चाप्यन्या तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यो त्वक् तनुतरी भवेत् । प्रत्येकजीवा [illegible] ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो त्वक् तनुतरी भवेत् । प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या चाप्यन्या तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य शाखस्य काष्ठेभ्यो [illegible] ता । प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या चाप्यन्या तथाविधा ॥ ४ ॥ चक्राकं भज्यमानस्य [illegible] जीयात् ॥ गूढ शिरा[illegible] सक्षीरं यच्च निःक्षीरम् [illegible]
[illegible]

बिठ्यहासणालियहाय । सखिज्जमससेज्जा योधम्राणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेइनालियाबद्धा पुप्फासखेज्जजी वया । णिद्धा गासुणतजीवा जया अणतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलि किद्र श्रुनरकद्धनहेव ज्झी य । एते स्सुणतजीवा एगाजीयोजिसमणाल ॥ ५ ॥ पलकदहसुरकद्य कण्णीयक्कुरए । एपरिमजीवा जेयावन्नेत हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणालिगाण सतग सोगन्धियाणय । अरविन्द कोकणाण सतपत्तसहस्सपत्ताण ॥ ७ ॥ घिटवाहिरपत्ता यकंणियाचेव एगजीवस्स । अभ्भिंतरगपत्ता पत्तेयकेसर मिजा ॥ ८ ॥ वगुनलइक्खुवाडिय समासइक्खूयइक्कडेरड । करकरसु ठविहगु तणाणतहपव्वगाणच ॥ ९ ॥ अच्छिमज्जवलिमा एगजीवस्सहो तिजीवस्स । पत्तयपत्ताइ पत्ते इत्थुणगजाणाहि ॥ १० ॥ पुस्स फलकालिंग तुयतउसएलुवालुक । घोसाडय पडोल तिडुयचयतिदूस ॥ ११ ॥ विटसमसकडाह एयाइह वतिएगजीवस्स । पत्तेयपत्ताइ सकेसरमकेसरामिजा ॥ १२ ॥ सप्फासज्जाए उब्बेहलिया कुहणकंदुक्के । एए अणतजीवा कंदुक्के होइ भयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिब्भूए बीए

---

जीवा येषाप्यन्येतथाप्रकारा स्यु ॥ ६ ॥ पद्मोत्पलनालानाम् नलिनसौगन्धिकानाञ्च तथाकुसुम् । अरविन्दकोकनदानाम् शतपत्रसहस्रपत्राणाम ॥ ७ ॥ वृन्तबाह्यपत्रकर्णिका एकजीवस्य । अभ्यन्तरपत्र केसरमिञ्जा प्रत्येक ॥ ८ ॥ वंश नलइक्षु वाटिका समासइक्षुइक्कड करकर सुण्ठि विहगु तृणानाम्पर्वगाणामपि ॥ ९ ॥ चाक्षुपवर्षानन्तर पत्रवण्णा यानि । पत्र एकजीवस्य प्रत्येकान् पुष्पाणि ॥ १० ॥ पुष्पफलकालिङ्ग तुम्ब त्रपुषएलावालुक । घोषातकपटोल तिन्दुकम् तेन्दूस ॥ ११ ॥ वृन्तमांसकटाह एतानि एकजीवस्य । प्रत्येकपत्राणि सकेसर अकेसरा मिञ्जा ॥ १२ ॥ सप्फासज्जाय उब्बेहलिया कुहणकन्दुक्क । एतेऽनन्तजीवा कन्दुक्के स्याद्भजना च ॥ १३ ॥ योनिभूत बीजे जीवोव्युत्क्रामति स एव वा । अन्यो वा । योपिच मूलजीव सोपि च पत्रं प्रथमतया ॥ १४ ॥ सर्वोपि किसलयः खलु उद्गच्छमानोऽनन्तको भणित । स एव वर्धमान प्रत्येको वा अनन्तो वा ॥

जीवोवक्कमइसोवच्छ्छोवा । जोविअमूलेजीवो सोविज्ञपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलउक्खलु उग्गम
माणोअणतउनाणिद । सोचेवविवड्ढंतो होइपरित्तोअणतोवा ॥ १५ ॥ समयवक्कंताण समयतासिसरीरनि
व्वत्ती । समयआणग्गहण समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण बहूणसाहारणाणतचेव । जयक्क
याणगहण समासउतंपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणच । साहारणजीवाण सा
हारणलक्खणएय ॥ १८ ॥ जहअयगोलोधंतो जाउतत्ततवणिज्जसकासो । सव्वोअगणिपरिणउ णिगयजीवे
तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोण्हतिण्हव सखज्जाणवपासिउसक्का । दीसतिसरीराइं णिगयजीवाणणताण २०
लोगागासपएस णिगयजीवठवेहिएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाअणताउ ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे
परित्तजीवठविसुएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाअसखज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसख
भागमित्ताउ । लोगाअसखाअपज्जत्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिंसरीरेहिं पच्चक्खंतेपरूवियाजीवा

था ॥ १५ ॥ समकमुत्कान्तानां समकंतेषांशरीरनिर्वृत्तिः । समकंप्राणापान ग्रहणंचोच्छ्वासनिश्वासौ ॥ १६ ॥ एकस्यग्रहणं [illegible]
नांच । पवयस्तुतंपुनः समासतस्तदपिचैकस्य ॥ १७ ॥ साधारणमाहारः साधारणमानपानग्रहणंच । साधारणजीवानां साधारणलक्षणमेतत् ॥ १८ ॥
यथायोगोलोध्मातो जातस्तप्ततपनीयसङ्काशः । सर्वोग्निपरिणतस्तु [illegible] ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोस्त्रयाणां [illegible] संख्येयानामपि
[illegible] ॥ २० ॥ लोकाकाशप्रदेशे निगोदजीवस्थापयेदेकैकम् । एवमपि मीयमाना भवन्तिलोकाअनन्ता
॥ २१ ॥ [illegible] ॥ २२ ॥ पर्याप्तप्रत्येकजीवाः प्रतरस्यासङ्ख्भागमि
[illegible] साधारणाअनन्ताः ॥ २३ ॥ एभिःशरीरैः प्रत्यक्षंतेप्ररूपिताजीवाः । सूक्ष्माआज्ञाग्राह्या चक्षुस्पर्शनंतमान्ति ॥ २४ ॥

सुज्ञमाख्याणागिज्ञा चस्कुप्फासननेहृति ॥ २४ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासठ दुविहा पणत्ता, तं०
पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय, तत्थण जे त अपज्जत्तगा तेण असंपत्ता, तत्थण जेत पज्जत्तगा तेसिण वन्ना
देसेण गंधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सग्गसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्ज
त्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा सियअणता एएसिण
इमाउ गाहाउ अणुगतव्वाउ तजहा—कंदायकंदमूलाय रुक्कमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणा
णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिघाडे हढेयसेवालकिण्हपणए। अवणयकच्छभाणी कदुक्केकुणवीसइमे ॥ २ ॥
तयछल्लिपवालसुय पत्तपुप्फफलेसुय। मूलग्गमज्झवीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर
बादरवणस्सइकाइया। सत्तबादरवणस्सइकाइया॥ सत्त एगिदिया॥ से कित बेइदिया? बेइदिया अणेग
विहा पणत्ता, तजहा—पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूयलगा गोलोमा णउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

---

यपिचान्ये तथाप्रकारास्ते समासतोद्विविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च तत्र येऽपर्याप्तकास्ते ऽसम्प्राप्ताः, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषा
वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि (भेदा) संख्येयानि योनिप्रमुखशतसहस्राणि पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका
व्युत्क्रमन्ते यत्रैकस्तत्र स्यात्संख्येया स्यादसंख्येया स्यादनन्ता। एतेषामिमा गाथा अनुगन्तव्या तद्यथा-कन्दाश्चकन्दमूलानि वृक्षमूलानिचाप
रे। गुच्छागुल्माश्चवल्लयश्च वेणुकानितृणानिच ॥ १ ॥ पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि हढसेवालकृष्णपनकाश्च। अवनकाश्चकच्छभाणि कन्दुकाएकोनविंशतिक
॥ २ ॥ त्वकछल्लिप्रवालेषु पत्रपुष्पफलेषुच। मूलाग्रमध्यबीजेषु योनिः कस्यापिकापिच ॥ ३ ॥ एता साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका । ए
ता बादरवनस्पतिकायिका। समाप्तानि एकेन्द्रियाणि। अथ के ते द्वीन्द्रिया? द्वीन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा पूति कृमिका कुक्षिकृमि

हुंमुहा गोजलोया जलोया जालाउया सखा मखगगा घुन्ना खल्ला खंधा वराडा सोत्तिया मोत्तिया कडुया

वासा एगओवत्ता दुहओवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पसंपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जयावन्ने

तहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा प० तं०—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एएसिणं

एवमाइयाणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्त जाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ॥

सेत्तं बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ से किं तं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा

पन्नत्ता, तंजहा—उवइया रोहिणिया कुंथु पिपीलिया उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पाडा तण

हारा कट्ठहारा पत्तहारा मालुया तणबेंटिया पत्तबेंटिया पुप्फबेंटिया फलबेंटिया बीयबेंटिया तेवुर

णमिंजिया तउसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिडा बाहुया लहुया सु

---

का। वसकुषया गोलोमा नकुसा चमकुसया वशीमसाः सूचीमुखा पावकोका। कलोका वसकूपा। घोडा चंदलका पुमाठ सुमठ [illegible] सिवं मौक्तिकं कुलापवासाः एकोपवृता द्विपोपवृत्त : नन्दावर्त्तः शंबुका मधोवाह शुक्तिका [illegible] समुद्रलिक्षा [illegible] सर्वे ते समूर्च्छिमा नपुंसकाश्च समासेना द्विविधा प्रथमा। । तद्यथा-पर्याप्तका [illegible] [illegible] सर्वेषामपि कुलकोटीनां योनिप्रमुखानि [illegible] [illegible] पच सातनिधा [illegible] [illegible] उपयिता रोहिणिका कुन्थुः पिपीलिका [illegible] [illegible] पत्रहारा [illegible] मूलाहाराः पत्राहारा [illegible] पुष्पवृन्ती पुष्पवृन्ती फलवृन्ती च [illegible] [illegible] [illegible] कपोता। [illegible] [illegible] [illegible] झिंगिरिया बाहुका लघुका सुभगाः सौवस्तिकाः शुकवृन्ताः इन्द्रकाति [illegible]

णगा सोवत्थिया सुयवेंटा इंदकाइया इंदगोवया तुरुतुंबगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सत्त
वाइया गोम्ही हत्थिसोंडा जेयावन्ने त० सव्वे ते सम्मुच्छिमनपुंसगा त समासओ दुविहा पण्णत्ता, तजहा—
पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। एएसिण एवमाइयाण तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण अट्ठजाइकुलकोडिजोणि
पमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खाय। सत्त तेइंदियससा०। से किंत चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नव
णा? २ अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—अंधिय पोत्तिय मच्छिय, मसगाकीड तहा पयंग य। ढंकुण कु
कुड कुक्कुह, नंदावत्ते य सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किलपत्ता चित्तपक्खा
विचित्तपक्खा ओहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा अच्छिरोडा अच्छिवेहा सारंगा नेउरा दोला
भमरा भरिली जरुला तोट्टा विंछुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पियंगाला कणगा गोमयकीडा
जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते सम्मुच्छिमा नपुंसगा त समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अप

का इन्द्रगोपा तुरुतुम्बका कुलत्थवाहगा यूका हालाहला पिशुका सत्रावका कर्णपाला हारुवाणका ये चान्ये तथाप्रकारास्ते सर्वे सम्मू
र्छिमा नपुंसकाश्च त समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। एतेषामेवमादिकाना त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानाम् अष्ट
जातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातम्॥ तदेत त्रीन्द्रियप्रज्ञापना॥ अथ कासौ चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना
?। चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अन्धिकपुत्तिकमक्षिका मशककीट तथापतङ्गश्च॥ मत्कुणकुक्कुटकुक्कु
हनन्द्यावर्तश्च शृङ्गिरिटश्च॥ १॥ कृष्णपत्रा नीलपत्रा लोहितपत्रा हारिद्रपत्रा शुक्लपत्रा चित्रपक्षा विचित्रपक्षा अवभञ्जलिका जलचारिका गम्भीरा
नीनिका तन्तवोऽक्षिरोटा अक्षिवेधाः सारङ्गा नकुला दोला भ्रमरा भ्रमर्यो जरुला तोट्टा वृश्चिका पत्रवृश्चिका गोमयवृश्चिका जलवृश्चिका

ज्जत्तगाय। एएसिणं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसहस्साइं भवतीति मक्खायं। सेत्तं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं पंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा? पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—नेरइयपंचिंदियसंसारस मावन्नजीवपन्नवणा तिरिक्खजोणियपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा मणुस्सपंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा देवपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किं तं नेरइया २? सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा रयणप्पभा पुढवीनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तम प्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया। ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा अपज्जत्त गाय। सेत्तं णेरइया। से किं तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—जलयरपंचिंदि

---

मिथुनकाः कणमाः गोमयकीटाः ये चाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते सम्मूर्छिमा नपुंसकास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च। एते पामेवमादीनां चतुरिन्द्रियप्राणिनां पर्याप्तापर्याप्तानां नवसयकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्ति इति आख्यातम्। सेत्ते चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा—नैरयिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना देवपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। ते कतिविधा नैरयिकाः? नैरयिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-रत्नप्रभा पृथिवी नैरयिका शर्करप्रभा पृथिवी नैरयिका वालुकाप्रभापृथिवी नैरयिका धूमप्रभापृथिवीनैरयिका तमःप्रभा पृथिवीनैरयिका तमस्तमःप्रभा पृथिवी नैरयिका ते समासतः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च। सत्ते नैरयिकाः। अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः? पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका

पतिरिक्खजोणिया थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया। से किंत जलयरप
चिंदियतिरिक्खजोणिया २ १ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा मच्छा कच्छभा गाहा मगरा सुसुमारा। सेकिं तं
मच्छा २ १ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सण्हमच्छा खवल्लमच्छा जुगमच्छा विज्झिडियमच्छा हलिद्दमच्छा
मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा तिमा तिमिंगिला णक्का तंदुलमच्छा क
णिक्कामच्छा सालिसच्छियामच्छा लंभणमच्छा पडागा पडागाइपडागा। जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं
मच्छा। से किंत कच्छभा २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा अट्ठिकच्छभा य मंसकच्छभा य। सेत्तं कच्छभा।
से किंत गाहा २ १ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा दिलीवेढगा मुद्दगा पुलगा सीमागारा। सेत्तं गाहा॥ से
किंत मगरा २ १ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सोंडमगरा मच्छमगरा य। सेत्तं मगरा। से किंत सुसुमारा २

---

त्रिविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। अथ कतिविधा
जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः?। जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—मत्स्याः कच्छपाः ग्राहाः मकराः शिशुमा
राः। अथ कतिविधाः मत्स्याः?। मत्स्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—श्लक्ष्णमत्स्याः खवल्लमत्स्याः युगमत्स्याः विज्झिडमत्स्याः हारिद्रमत्स्याः मक
रमत्स्याः रोहितमत्स्याः हलीमत्स्याः सागरमत्स्याः गागरमत्स्याः वटमत्स्याः वटगरमत्स्याः तिमिमत्स्याः तिमिङ्गिलमत्स्याः नक्रमत्स्याः तन्दु
लमत्स्याः कणकमत्स्याः शालिमत्स्याः मांसिकमत्स्याः लम्भनमत्स्याः पताकमत्स्याः पताकपताकमत्स्याः ये चान्ये तथाप्रकारास्ते मत्स्याः।
अथ कतिविधाः कच्छपाः?। कच्छपा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—अस्थिकच्छपा मांसकच्छपाश्च। त एते कच्छपाः। अथ कतिविधाः ग्राहाः?।
ग्राहाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः दिलीवेष्टकाः मुद्गाः पुलकाः सीमाकाराः त एते ग्राहाः। अथ कतिविधाः मकराः?। मकरा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः शु

एगागारा प०, सेत्तं सुसुमारा। जे यावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थ णं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका, तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०, तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एतेसिं णं एवमाइयाणं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अद्धतेरस जातिकुलकोडिजोणीपमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं। सेत्तं जलयरपंचिंदिय०। से किं तं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य। से किं तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया। से किं तं एगखुरा २? अणेगविहा पण्णत्ता, तं० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता। जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं

---

वराबकरा मत्स्यमकराय। तएते मकराः। अथ कतिविधाः शिशुमाराः?। शिशुमारा एकाकाराः प्रज्ञप्तास्तएते शिशुमाराः। ये चान्ये च तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। सम्मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये ते सम्मूर्छिमास्ते समासतः सर्वे नपुंसकाः। तत्र ये ते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकाः। एतेषामेवमादीनां जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानामर्धत्रयोदश जातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम्॥ तएते जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः। [illegible] स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः?। स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च। [illegible] चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदाः सनखपदाः। अथ के ते एकखुराः?। एकखुरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—अश्वा अश्वतरा

एगखुरा । से किं तं दुखुरा २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—उट्टा गोणा गवया रोज्झा पसया महिसा मियरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चमर कुरंग गोकण्णमाई सेत्तं दुखुरा। से किं तं गंडीपया २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा हत्थी हत्थीयणा मकुणहत्थी खग्गा गंडा। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं गंडीपया। से किं तं सणप्फया २ ? अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सियाला सुणगा कोलसुणगा (ग्रंथा ५००) कोकंतिया ससगा चित्तगा चिल्ललगा। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं सणप्फया। ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा संमुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। तत्थणं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पण्णत्ता, तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह

---

पोटका मद्गा गोरखरा कन्दलका श्रीकन्दलका आवर्ताद्य। ये चाप्यन्ये तथाप्रकाराः। तएते एकखुराः। अथ कतिविधाः द्विखुराः ?। द्विखुराः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा उष्ट्राः गावः गवयाः रोझाः पशुकाः महिषाः मृगाः वराहाः अजाः एलकाः रुरवः शरभाः चमराः कुरङ्गाः गोकर्णादिकाः एते उक्ता द्विखुराः। अथ कतिविधा गण्डीपदाः ?। गण्डीपदाः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-हस्ती हस्तिपूतनकः मत्कुणहस्ती खड्गाः गण्डाः। यच्चाप्यन्ये तथाप्रकाराः उक्ता गण्डीपदाः। अथ कतिविधाः सनखपदाः ?। सनखपदाः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा सिंहाः व्याघ्राः द्वीपिनः ऋक्षाः तरक्षवः परस्सराः शृगालाः विडालाः श्वानः कोलाः कोकन्तयः शशकाः चित्रकाः चिल्लकाः येचाप्यन्ये तथाप्रकारास्सर्वे सनखाः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा सम्मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकाः। एतेषामेवमादीनां स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमु

सयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किं तं परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किं तं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किं तं अही ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा दव्वीकरा य मउलिणो य । से किं तं दव्वीकरा ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा निस्सासविसा कण्हसप्पा सेयसप्पा काओदरा दज्झपुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं दव्वीकरा । से किं तं मउलिणो ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा दिव्वागा गोणसा कसाहीया वइउला चित्तलिणो मंडलिणो मालिणो अही अहिसलागा वाय

---

शतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् । सैषा चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका । अथ कतिविधाः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? २ परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्च । अथ कतिविधास्ते परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? २ उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा अहयः अजगराः आसालिकाः महोरगाः । अथ कतिविधा अहयः ? २ अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा दर्वीकराः च मुकुलिनश्च । अथ कतिविधा दर्वीकराः ? २ दर्वीकरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा आशीविषाः दृष्टिविषाः उग्रविषाः भोगविषाः त्वग्विषाः लालाविषाः उच्छ्वासविषाः निःश्वासविषाः कृष्णसर्पाः श्वेतसर्पाः काकोदराः दग्धपुष्पाः कोलाहाः मेलिमिन्दाः शेषेन्द्राः ये चान्ये तथाप्रकाराः सैषा दर्वीकराः । अथ कतिविधा मुकुलिनः ? २ मुकुलिनो अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा दिव्याः गोनसाः कषाधीकाः व्यतुलाः चित्रलिनः मण्डलिनः

डागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त चउलिया । सेत्त अही । से किं तं अयगरा ? एगागारा पन्नत्ता, सेत्त अयगरा । से किं तं आसालिया ? कहिणं भंते ! आसालिया संमुच्छति ? गोयमा ! अंतोमणुस्सखे[त्ते] अड्ढाइज्जेसु दीवेसु निव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघातं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु चक्कवट्टीखंधावा[रे]सु वासुदेवखंधावारेसु बलदेवखंधावारेसु मंडलियखंधावारेसु महामंडलियखंधावारेसु गामनिवेसेसु नगरनिवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बडनिवेसेसु मडंबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आगरनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संबाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसि णं चेव विणासेसु । एत्थ णं आसालिया संमुच्छति । जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए ओगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाइं । तदणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं भूमिं दालित्ताणं समुट्ठेति । असन्नी मिच्छद्दिट्ठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया

---

नि च यथा अहिंशाला वायुकुशा । यथाऽन्ये तथाप्रकाराः । तदेते मुकुलिन । उक्ता अहय । अथ कतिविधा अजगराः ? । अजगरा एकाकाराः प्रज्ञप्ता तदेत अजगराः । अथ कास्ता आसालिका ? । कथं भदन्त । आसालिका संमूर्छन्ति । गौतम । अन्तर्मनुष्यक्षेत्रस्य अर्धतृतीयेषु द्वीपेषु निर्व्याघातेन पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पुनश्च पञ्चसु महाविदेहेषु चक्रवर्तिस्कन्धावारेषु वासुदेवस्कन्धावारेषु बलदेवस्कन्धावारेषु माण्डलिकस्कन्धावारेषु महामाण्डलिकस्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु नगरनिवेशेषु निगमनिवेशेषु खेटनिवेशेषु कर्बटनिवेशेषु मडम्बनिवेशेषु द्रोणमुखनिवेशेषु पत्तननिवेशेषु आकरनिवेशेषु आश्रमनिवेशेषु संबाधनिवेशेषु राजधानीनिवेशेषु एतेषामेव विनाशेषु । अत्रैव आसालिका संमूर्छन्ति । जघन्यतोऽङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया । उत्कर्षतो द्वादशयोजनानि तथानुरूपं च विष्कम्भबाहुल्या (विस्तारस्थूलत्वाभ्याम्) भूमिं दारयित्वा समुत्तिष्ठते । असंज्ञी मिथ्यादृष्टि अज्ञानी अन्तर्मुहूर्तायुरेव कालं करोति । तदेते आसालिकाः । अथ कतिविधा महोरगाः ? । महोरगा अनेक

चेव कालं करेइ। सेत्तं आसालिया। से किं तं महोरगा? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा अत्थेगइया अंगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियत्थिं पि वियत्थिपुहत्तं पि रयणिं पि रयणीपुहत्तिया वि कुच्छि पि कुच्छिपुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि, ते णं थले जाता जले वि चरंति थले वि चरंति, ते णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति, जे यावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं महोरगा। ते समासओ दुविहा प०, तं०—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थ णं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा प०, तं०—इत्थी पुरिसा णपुंसगा, एएसि णं एवमाइयाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणं उरपरिसप्पाणं दस जाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं। सेत्तं उरपरिसप्पा। से किं तं भुयपरिसप्पा? २ अणेग

---

विधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-सन्त्येके केचन अङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वमपि अरत्निमपि अरत्निपृथक्त्वमपि [illegible] कुक्षिपृथक्त्वमपि धनुरपि धनुःपृथक्त्वमपि गव्यूतिमपि गव्यूतिपृथक्त्वमपि योजनमपि योजनपृथक्त्वमपि योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वमपि [illegible] ते स्थलजाता जलेऽपि विचरन्ति स्थलेऽपि [illegible] बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ये चान्ये तथाप्रकारास्ते। सर्वे महोरगाः [illegible] प्रज्ञप्ता, तद्यथा-संमूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये ते संमूर्च्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र ये ते [illegible] त्रिविधाः तद्यथा-स्त्रियः पुरुषा नपुंसकानि च। एतेषामेवमादीनां [illegible] परिसर्पाणां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातं। सेयं उरःपरिसर्पा। अथ के ते भुजपरिसर्पाः? १ भुजपरिसर्पा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-नकुला गोधाः सरटाः शल्याः सरंठाः साराः खराः घरोइलाः विश्वम्भराः मूषाः मङ्गूसाः पयलाः क्षीरविरालिकाः जाहाः चतुष्पादिकाश्च ये चान्ये तथाप्रकारास्ते। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। एवं

विहा पन्नत्ता, तजहा—णउला सेहा सरडा सल्ला सरठा सारा खारा घरोइला विस्सभरा मूसा मगुसा पइ लाइया छीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जे यावन्ने तहप्पगारा। ते समासओ दुविहा प०, त०—समुच्छिमा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थण जते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा, तत्थण जेते गब्भवक्कंतिय तेण तिविहा पन्नत्ता, तजहा—इत्थी पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाइयाण पज्जत्ता २ ण भुयपरिसप्पाण नवजाइकुल कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइ हवतीति मक्खाय। सत्त भुयपरिसप्पथलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया। सेत्त परिसप्पथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया। स कित खहयरपचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा पन्नत्ता, तजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी। से कित चम्मपक्खी २ अणगविहा प०, त० वग्गुली जलोया अडिल्ला भारडपक्खी जीवजीवा समुद्दवायसा कन्नत्तिया पक्खिविराली जेयावन्ने तहप्पगारा॥ सेत्त चम्मपक्खी॥ से कित लोमपक्खी २ अणगविहा प०, त० ढका कका कुरला वायसा चक्का

मुच्छमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये सम्मूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसका। तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा स्त्रिय पुरुषा नपुंसका। एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानां भुजपरिसर्पाणां नवजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातं। सेत्ता भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका। सेत्ता परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका। अथ कतिविधा खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ?। खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका चतुर्विधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्गपक्षी विततपक्षी। अथ कतिविधाश्चर्मपक्षाः चर्मपक्षिणो अनेकविधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा वल्गुला जलौका अडिल्ला भारण्डपक्षी जीवजीवा समुद्रवायसा कर्णत्तिका पक्षिविराली य याश्चान्ये तथाप्रकारा। तएत चर्मपक्षि॥ अथ कतिविधा लोमपक्षि ?। लोमपक्षिणोऽनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा ढङ्का कङ्का कुरला वायसा चक्राङ्का हंसा कल

चेव कालं करेइ । सेत्त आसालिया । से किं तं महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता , तंजहा अत्थेगइया अगुलं पि अगुलपुहत्तिया वि वियत्थिं पि वियत्थिपुहत्तं पि रयणीं पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छिं पि कुच्छिपुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि ते णं थले जाता जले विचरंति थले विचरंति ते णत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जे यावन्ने तहप्पगारा सेत्तं महोरगा । ते समासओ दुविहा प०, तं०—सम्मुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थ णं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थ णं जे ते गब्भवक्कंतिया ते णं तिविहा प०, तं०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसि णं एवमाइयाणं पज्जत्ता २ णं उरपरिसप्पाणं दस जाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं । सेत्तं उरपरिसप्पा । से किं तं भुयपरिसप्पा २ अणेग

विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सन्त्येके केचन अङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वमपि रत्निमपि रत्निपृथक्त्वमपि कुक्षिमपि कुक्षिपृथक्त्वं धनुरपि धनुःपृथक्त्वं गव्यूतिमपि गव्यूतिपृथक्त्वं योजनमपि योजनपृथक्त्वं योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वं योजनसहस्रमपि [illegible] स्थले जाताः जलेऽपि विचरन्ति स्थलेऽपि विचरन्ति ते इह न सन्ति किन्तु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ये चान्ये तथाप्रकाराः । तदुक्तं महोरगाः । ते समासतो द्विविधाः [illegible] ज्ञप्ताः—संमूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः । तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः, तद्यथा—स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाश्च [illegible] पर्याप्तापर्याप्तानामुरःपरिसर्पाणां [illegible] योनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातं । सेत्तं उरःपरिस [illegible] भुजपरिसर्पा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-नकुलाः गोधाः सरटाः शल्यकाः सरठाः शाराः खाराः घरोइलाः [illegible] सर्पाः चतुष्पदाः मूषकाः पयला धुनाः क्षीरविराविकाः जाहाः चतुष्पादिकाः ये चान्ये तथाप्रकाराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तं

जाइकुलकोडि ... नवय अद्धतेरसाइं च । दस दस य होंति णवगा तह बारस चेव बोधव्वा ॥१॥ सेत्तं खहयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं तिरिक्खजोणिया ॥ से किं तं मणुस्सा ? २ दुविहा प०, तं० संमुच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य । से किं तं संमुच्छिममणुस्सा , कहि णं भंते ! संमुच्छिम मणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसु वा पित्तेसु वा पूएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपुग्गलपरिसाडेसु वा विगयजीवकलेवरेसु वा थीपुरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव असुइट्ठाणेसु एत्थ णं संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति , अंगुलस्स असंखिज्जइभागमेत्ताए ओगाहणाए असन्नी मिच्छद्दिट्ठी अन्नाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करेंति । से किं तं गब्भवक्कंतियमणुस्सा २

द्वादश चैव बोद्धव्याः ॥ १ ॥ तदेते खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः । तदेते पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ॥ तदेते तिर्यग्योनिकाः ॥ अथ कतिविधा मनुष्याः ? । मनुष्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सम्मूर्छिममनुष्या गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः । अथ कतिविधाः सम्मूर्छिममनुष्याः । कस्मिन् भदन्त ! सम्मूर्छिममनुष्याः सम्मूर्छन्ति । गौतम ! मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशतियोजनशतसहस्रेषु सार्धद्वीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रिंशत्यकर्मभूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां चैव उच्चारेषु वा प्रस्रवणेषु वा खेलेषु वा सिंघाणकेषु (नासामलेषु) वा वान्तेषु वा पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्रेषु वा शुक्रपुद्गलपरिशाटेषु वा विगतजीवकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगरनिर्द्धमनेषु वा सर्वेषु चैवाशुचिषु स्थानेषु एतेषु सम्मूर्छिममनुष्याः सम्मूर्छन्ति । अङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया असंज्ञिमिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वाभिः पर्याप्तिभिरपर्याप्तका अन्त

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीबगा बलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामिंजुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोया कविंजला पारे वया चिडगा चासा कुकुडा सुगा बरहिणा मदणसला कोकिला सेणहा वरिल्लगमादी । सेत्त लोमपक्खी। से किंत समुग्गपक्खी २ एगागारा प०, तेण नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्त समुग्गपक्खी। से किंत विततपक्खी २ एगागारा प०, तेण नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्त विततपक्खी। तेसि मासतो दुविहा प०, तं० समुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थण जेते समुच्छिमा तेसव्वे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प०, तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तठ

---

हंसाः राजहंसाः बकाः सेडीबगा बलाकाः पारिप्लवाः क्रुञ्चाः सारसाः मसराः मयूराः मयूराः सप्तवत्साः गहराः पौण्डरीकाः काकाः कामिञ्जु[illegible] वञ्जुलकाः तित्तिराः वर्तकाः लावकाः कपोताः कपिञ्जलाः पारावताः चटकाः चासाः कुक्कुटाः शुकाः [illegible] मदनशलाकाः कोकिलाः [illegible] [illegible] एवमादयः एते लोमपक्षिणः । अथ कतिविधाः समुद्गपक्षिणः ।। समुद्गपक्षिण [illegible] [illegible] एते समुद्गपक्षिणः । अथ कतिविधा विततपक्षिणः २ । विततपक्षिणः एकाकाराः [illegible] दीपसमुद्रेषु भवन्ति । तदेते विततपक्षिणः । [illegible] सर्वे नपुंसकाः । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः [illegible] स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकाश्च । एतेषामेवमादीनां खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां द्वादशजातिकुल को- टियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ [illegible] कुलकोट्यो भवन्ति [illegible] चैव ॥ [illegible]

कित मिलक्खू ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तजहा सगा जवण चिलाय सबर बब्बर काय मुरुंडोड्ड भडग णि
ण्णग पक्कणिय कुलक्ख गोंड सीहल पारस गोधंध दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस दोंबबोक्काण गंध
हारग बहलिय अज्झल रोम पास पउसा मलयाय बंधुयाय सूयलि कुकुणगमेय पल्हव मालव मग्गर
आभासिय कण वीरण ल्हासीस खसखासिय नेदूर मढ डोंबिलग लउस बउस केक्कय अरवाग हूण
रोमग भमरु चिलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तंमिलक्खू से कित आयरिया ? आयरिया दुविहा पन्नत्ता,
तजहा इड्डिपत्तारिया य अणिड्डिपत्तारिया य । से कित इड्डिपत्तारिया ? २ छव्विहा पन्नत्ता, तजहा—
अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेत्तं इड्डिपत्तारिया ॥ से कित अणिड्डिपत्तारि
या ? २ नवविहा पन्नत्ता, तजहा खेत्तारिया जातिआरिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया
णाणारिया दंसणारिया चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अद्धछव्वीसतिविहा पन्नत्ता, तजहा राय

---

काः यवनाः चिलाताः शबराः बर्बराः कायाः मुरुण्डाः ओड्राः भडकाः निम्नगाः पक्कणाः नीपाः कुलाक्षाः गोण्डाः सिंहलाः पारसाः गोधान्धाः द्रमिलाः चि
ल्लला पुलिन्दाः हारोसाः डोम्बबोक्काणाः गन्धहारकाः बहलिया अज्झलाः रोमाः पासाः प्रदुषाः मलयाः बन्धुकाः सूयलाः कोंकणा मेकया प
ल्हवाः मालवाः मग्गराः आभाषिकाः कणाः वीरणाः ल्हासाः खसाः खासिकाः नेदूराः मढाः डोम्बिलकाः लउसाः बउसाः केकयाः अरवाकाः हूणाः रोमकाः भमराः चिलाताः वासीयाः एवमादयः । तएते म्लेच्छाः । अथ कतिविधा आर्यकाः आर्यका द्विविधाः प्रज्ञप्ता । ऋद्धिमन्त
अनृद्धिमन्तश्च । अथ कतिविधा ऋद्धिमन्त आर्यकाः षड्विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा अर्हन्ता चक्रवर्ती बलदेवाः वासुदेवाः चारणाः विद्याधरा
तएत ऋद्धिमन्तः । अथ कतिविधा अनृद्धिमन्त ? । अनृद्धिमन्ता नवविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा क्षेत्रार्याः जात्यार्याः कुलार्याः कर्मार्याः शिल्पार्याः भा
षार्याः ज्ञानार्याः दर्शनार्याः चरित्रार्याः । अथ कतिविधा क्षेत्रार्याः क्षेत्रार्याः सार्द्धपञ्चविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा राजगृहमगधचम्पाअङ्गतामलिप्ता

तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा। से किं तं अंतरदीवया? अंतरदीवया अट्ठावीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णंगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना सक्कुलिकन्ना २ आयंसमुहा मेंढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कण्णपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जुदंता ६ घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता ७। सेत्तं अंतरदीवगा। से किं तं अकम्मभूमिगा? २ तीसतिविहा पण्णत्ता, तं० पंचहिं हेमवएहिं पंचहिं हेरण्णवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरूहिं पंचहिं उत्तरकुरूहिं सेत्तं अकम्मभूमिगा। से किं तं कम्मभूमगा? २ पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा आयरिया य मिलक्खू य। से

---

मुहूर्तकालीव काल कुर्वन्ति। अथ कतिविधा गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः?। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—कर्मभूमिजा अकर्मभूमिजा अन्तरद्वीपजाश्च। अथ कतिविधा अन्तरद्वीपजाः?। अन्तरद्वीपजा अष्टाविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—एकोरुका आभासिका वैषाणिका लाङ्गूलिकाः हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णा शष्कुलीकर्णा आदर्शमुखा मेषमुखा अयोमुखा गोमुखा अश्वमुखा हस्तिमुखा सिंहमुखा व्याघ्रमुखा [illegible] कर्णप्रावरणा उल्कामुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा विद्युद्दन्ता घनदन्ता लष्टदन्ता गूढदन्ता शुद्धदन्ताः। एते [illegible]। अथ कतिविधा अकर्मभूमिजाः?। अकर्मभूमिजास्त्रिंशद्विधाः प्रज्ञप्ताः [illegible] पञ्चहरिवर्षैः पञ्चरम्यकवर्षैः पञ्चदेवकुरुभिः पञ्चउत्तरकुरुभिः [illegible] कर्मभूमिजाः?। कर्मभूमिजाः पञ्चदशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पञ्चभिर्भरतैः पञ्चैरावतैः पञ्चभिर्महाविदेहैः। [illegible] द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा आर्यमनुष्या म्लेच्छमनुष्याः। अथ कतिविधा म्लेच्छमनुष्याः? म्लेच्छमनुष्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा श

सेत्त कुलारिया ॥ से किंतं कम्मारिया ? २ अणेगविहा पसत्ता, तंजहा—दोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया मुत्तवेया जीया नंदअयालिया कीलालिया नरवाहणिया जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्त कम्मारिया ॥ से किंतं सिप्पारिया १ २ अणेगविहा पसत्ता, तंजहा—तुन्नागा तंतुवाया पट्टागारा देयडा वरुडा कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा वज्झारा पत्थारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जिब्भगारा सेल्ला रा कोट्टिगारा जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्त सिप्पारिया ॥ से किंतं भासारिया २ जेणं अद्धमागहाए भा साए भासंति, जत्थवि य णं बंभीलिवी पवत्तइ बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेक्खविहाणे पसत्ते, तंजहा बंभीजवणालिया दोसापुरिया खरोट्ठी पुक्खरसारिया भोगवइया पहराइया अंतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गंधव्वलिवी आयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥ सेत्त भासारिया ॥ से किंतं नाणारिया १ २ पंचविहा पसत्ता, तंजहा—आभिणिबोहियनाणारिया सुयना

---

या य चान्यस्य तथाप्रकारा । अथ कतिविधा शिल्पार्या । तन्नागा तन्तुवायाः पट्टकारा दयडा वरुडा काष्ठपादुकाकरा मुञ्जपादुकाकराः छत्रकारा वज्झकरा प्रस्तारा पोत्थारा लेप्याराः चित्रकरा शङ्खकरा दन्तकराः भण्डारा जिह्वकारा ( कटकरा ) सेल्लारा कोट्टिकराः । ये चान्यस्य तथाप्रकारा । तदेत शिल्पार्याः । अथ कतिविधाः भाषार्या १ । भाषाया ये अर्द्धमागधीभाषया भाषन्ते यत्रैव ब्राह्मीलिपि प्रवर्तते तस्या ब्राह्मया लिप्यामष्टादशविधं लेख्यविधानं प्रवर्तते । तद्यथा ब्राह्मी यवनानी दासपुरपाया खरोष्ठी पुष्करसारिका भोगवती प्रहरादिका अक्षरपृष्ठिका वैनयिका निर्ह्नुतिका अङ्कलिपि गणितलिपि गन्धर्वलिपि आदर्शलिपि माहेश्वरी दोमलीलिपि पौलिन्दीलिपि तदेत भाषार्याः । अथ कतिविधा ज्ञानार्या १ । ज्ञानार्या पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता । तद्यथा आभिनिबोधिकज्ञानार्या श्रुतज्ञानार्या अवधिज्ञानार्या मनःपर्यवज्ञानार्या

गिहमगहचंपा अंगातहतामलित्तिवंगा य। कंचणपुरकलिंगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस लागय पुरचकुरुसोरियकुसट्टा य। कंपिल्ल पंचाला अहिछत्ताजंगलाचेव ॥ २ ॥ बारवतीयसुरट्ठा मिहिलविदेहायवच्छकोसंबी। नंदिपुरसंडिल्ला भद्दिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराडमच्छवरणा अच्छातहमत्तियावइदसन्ना। सोत्तियमईयाचेदी वीइभयसिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा। सावत्थीयकुणाला कोडीवरिसंचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयवियावियनगरी केयइअद्धंचआरियंभणिय। एत्थुप्पत्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाण ॥ ६ ॥ सेत्तंखेत्तारिया ॥ से किं तं जाइआयरिया? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—अंबट्ठायकलिंदा विदेहावेदगाइय। हरियाचुंचुणाचेव छप्पेयाइब्भजाइओ ॥ ७ ॥ सेत्तं जाइआरियाय ॥ से किं तं कुलारिया? २ छव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा।

---

[illegible]प्तीवङ्गाश्च। काञ्चनपुरंकलिङ्गाः वाराणसीचैवकाशीच ॥ १ ॥ साकेतंकोशलाःगजपुरंचकुरवः शौरिकंकुशावर्ताः। काम्पिल्यंपाञ्चालाः अहिच्छत्राजङ्गलाश्चैव ॥ २ ॥ द्वारावतीचसुराष्ट्राः मिथिलाविदेहाश्चवत्साःकौशाम्बी। नन्दीपुरंशाण्डिल्याः भद्दिलपुरमेवमलयाश्च ॥ ३ ॥ वैराटंमत्स्यावरणा [illegible] तथामृत्तिकावतीदशार्णाः। शौक्तिकावतीचचेदी वीतभयासिन्धुसौवीराः ॥ ४ ॥ मथुराचशूरसेनाः पापाभङ्गीचमासपुरीवर्त्ता [illegible] श्रावस्तीचकुणालाः कोटीवर्षंचलाढाश्च ॥ ५ ॥ श्वेताम्बिकाअपिचनगरी केकयार्धंचार्यंभणितम् ॥ एतास्वेवखलु [illegible] उत्पत्तिर्जिनानां चक्रिणांरामकृष्णानाम् ॥ ६ ॥ [illegible] इति एते क्षेत्रार्याः ॥ अथ के ते जात्यार्याः? जात्यार्याः षड्विधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा— [illegible] वेदगाः इति हरिताः चुञ्चुणाः षडेता इभ्यजातयः। त एते जात्यार्याः। अथ के ते कुलार्याः? [illegible] षड्विधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा उग्राः भोगाः राजन्याः इक्ष्वाकवः ज्ञाताः कौरव्याः। त एते कुलार्याः। अथ के ते कर्मार्याः? कर्मार्याः अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—दौष्यिकाः सौत्रिकाः कार्पासिकाः सूत्रवैतालिकाः भाण्डवैतालिकाः कौलालिकाः नरवाहनि[illegible]

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्सउवलद्धा । सव्वाहिंणयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच
रित्ते तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी
संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो । अविसारओपवयणे अणभिग्गहिओयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मखलु
चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावा
वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥ १३ ॥ निसंकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववू
हथिरीकरण वच्छल्लपभावणेअट्ठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंतं वीयरागदंसणारिया ? २ दु
विहा पण्णत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीयरागदंसणारिया य । से किंतं
उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारि

---

रुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ ७ ॥ ... ॥ ८ ॥ द्रव्याणां सर्वभावाः
सर्वप्रमाणैर्यस्योपलब्धाः ॥ सर्वैर्नयविधिभिः विस्ताररुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचरित्रे तपोविनये सत्यसमितिगुप्तिषु ॥ यः क्रियाभाव
रुचिः स खलु क्रियारुचिर्नाम ॥ १० ॥ अनभिगृहीतकुदृष्टिः संक्षेपरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ अविशारदः प्रवचने अनभिगृहीतश्च शेषेषु ॥ ११ ॥ योऽस्तिकायध
र्मं श्रुतधर्मं खलु चारित्रधर्मं च ॥ श्रद्दधाति जिनाभिहितं स धर्मरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ १२ ॥ परमार्थसंस्तवो वा सुदृष्टपरमार्थसेवना वापि ॥ व्यापन्नकुदर्शनवर्जना
च सम्यक्त्वश्रद्धानम् ॥ १३ ॥ तदेते सरागदर्शनार्याः । अथ के ते वीतरागदर्शनार्याः ? वीतरागदर्शनार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उपशान्त
कषायवीतरागदर्शनार्याः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ के ते उपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः ? २ उपशान्तकषायवीतरागदर्श
नार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथवा चरमसम

णारिया ओहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया । सेत्त नाणारिया । से किंत दसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागदसणारिया य वीयरागदसणा० । से किंत सरागदसणारिया य ? २ दस विहा पन्नत्ता, तंजहा—निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवायपुण्णपावंच । सहस्समुइयासवसंवरोयवेयइएसनिस्सग्गो २ ॥ जाजिणदिट्ठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव । एमेवणन्नहत्तिय निसग्गरुइत्तिणायव्वो ॥ ३ ॥ एएचेव उभावे, उवदिट्ठोपरेणसद्दहइ । छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥४॥ जोहेउमयाणंतो आणाएरोयएपवयणंतु । एमेवणन्नहत्तिय एसोआणारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणओगाहईउसम्मत्तं । अंगेणबाहिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥ ६ ॥ एगपएणेगाइं पयाइंजोपसरइउसम्मत्तं । उदएव्वतिल्लबिंदू सोबीयरुइत्तिनायव्वो ॥७॥ सोहोइअभिगमरुई सुयनाणंजस्स । अत्थओदिट्ठं एक्कारसअंगाइं पइण्णगादिट्ठिवाओय ॥८॥

---

[illegible] । तद्भेदे [illegible] । अथ कतिविधा दर्शनार्याः [illegible] द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—सरागदर्शनार्या वीतरागदर्शनार्याश्च [illegible] कतिविधाः सरागदर्शनार्याः ? सरागदर्शनार्या दशविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—निसर्ग [illegible] रुचिः [illegible] ॥ १ ॥ भूतार्थेनाधिगता [illegible] एतन्निसर्गो विज्ञेयः ॥ २ ॥ यो जिनदृष्टान् [illegible] ॥ ३ ॥ एतांश्चैव तु भावान् उपदिष्टान् परेण [illegible] ॥ छद्मस्थेन [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] रोचते प्रवचनं तु ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ यः सूत्रमधीयानः [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्सउवलद्धा । सव्वाहिंनयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच
रित्ते तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी
संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो । अविसारओपवयणे अणभिग्गहिओयसेसेसु ॥ ११ ॥ जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मंखलु
चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावा
वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥ १३ ॥ निस्संकियनिक्कंखिय निव्वितिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववू
हथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंतं वीयरागदंसणारिया ? २ दु
विहा पन्नत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीयरागदंसणारियाय । से किंतं
उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारि

---

दर्शितसिद्धान्तः ॥ ७ ॥ सम्यक्त्वजिनमतादि मुक्ताभावप्रवर्तितस्य । अथतोदृष्टमेवाख्याकृतानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादश्च ॥ ८ ॥ द्रव्याणां सर्वभावाः
सर्वप्रमाणैर्यस्योपलब्धाः ॥ सर्वैर्नयविधिभिर्विस्ताररुचिरिति विज्ञेयः ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचरित्रे तपोविनयसत्यसमितिगुप्तिषु ॥ यः क्रियाभाव
रुचिः स खलु क्रियारुचिर्नामा ॥ १० ॥ अनभिगृहीतकुदृष्टिः संक्षेपरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ अविशारदः प्रवचने अनभिगृहीतश्च शेषेषु ॥ ११ ॥ योऽस्तिकायध
र्मं श्रुतधर्मं खलु चरित्रधर्मं च ॥ श्रद्दधाति जिनाभिहितं स धर्मरुचिरिति ज्ञातव्यः ॥ १२ ॥ परमार्थसंस्तवो वा सुदृष्टपरमार्थसेवनं वापि ॥ व्यापन्नकुदर्शनवर्जनं चा
सम्यक्त्वश्रद्धानाय ॥ १३ ॥ तदेते सरागदर्शनार्याः । अथ केऽतिविधा वीतरागदर्शनार्याः ? वीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—उपशान्त
कषायवीतरागदर्शनार्याः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ केऽतिविधाः उपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । उपशान्तकषायवीतरागदर्श
नार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथवा चरमसम

या अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंत खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंत छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंत सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया सयंबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया य अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीयरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणा० अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया

---

प्रोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः केवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधाः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? [illegible] स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—प्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः, अप्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः [illegible] चरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः अचरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । त एते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीण

स । सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किंतं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अप

---

कषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथवा चरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । तदेते छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या । अथ कतिविधा केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या ? । केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधाः सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या ? सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधा अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या ? । अयोगिकेवलक्षीणकषाय

ढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवी
तरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय। सेत्तं सजोगिकेवलिखीण
कसायवीतरागदंसणारिया । से किं तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता,
तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवी
तरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजो
गिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं
केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं वीतरागदंसणारिया।
सेत्तं दंसणारिया । से किं तं चरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्ता
रिया । से किं तं सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य बाय

---

वीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-प्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागद[illegible] [illegible] चरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । तदेवं अयोगिकेवल क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः [illegible] केवलिक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः तदेवं वीतरागदर्शनार्याः । अथ चारित्रार्यानाह—चारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-सूक्ष्मसंपरायसरागचारित्रार्याः बादरसंपरायसरागचारित्रार्याः । तत्र सूक्ष्मसंपरायसरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-प्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागचारित्रार्याः अप्रथमसमय सूक्ष्मसंपरायसरागचारित्रार्याश्च । [illegible] सूक्ष्मसंपरायसरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-संक्लिश्यमानको विशुद्ध्यमानकः । सूक्ष्म

रसपरायसरागचरित्तारियाय। से किंत सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय। अहवा सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया। से किंत बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा बायरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पडिवाइ य अपडिवाई य सेत्तं बायरसंपरायचरित्तारिया सेत्तं सरागचरित्तारिया। से किंत वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंत उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्या। अथ कतिविधा बादरसंपरायसरागचरित्रार्याः बादरसंपरायसरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा प्रथमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्या अप्रथमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्याः अचरमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्याश्च। अथवा बादरसंपरायसरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रतिपातिका अप्रतिपातिकाश्च। तदेते बादरसंपरायसरागचरित्रार्या तदेते सरागचरित्रार्या। अथ कतिविधा वीतरागचरित्रार्या ?। वीतरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्या क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या। अथ कतिविधा उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याः ?। उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्या

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य अहवा चरिम समयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किं तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किं तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता

---

द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्या अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्या अचरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। तदेते उपशान्तकषायवीतरागचारित्रार्याः। अथ के ते क्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः ? । क्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथ के ते [illegible] छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथ के ते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा प्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथवा चरमसमय

रिया । से किंत बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढम
समयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरा
गचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबु
द्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता
रिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंत केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २
दुविहा पन्नत्ता तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग
चरित्तारिया य । से किंत सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—

---

स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । तदेते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या । अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । तदेते बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधाः केवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः ? । केवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधा । तद्यथा सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथ कतिविधा सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः ? । सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा प्रथमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अप्रथमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयसयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च ।

पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किं तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं वीतरागचरित्तारिया। अहवा चरित्तारिया पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसंपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य। से किं तं सामाइयचरित्तारिया? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा

---

तदेते सयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। अथ के ते अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः? अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—प्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अप्रथमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्या अचरमसमयायोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याश्च। तदेते अयोगिकेवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। तदेते केवलिक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। तदेते क्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः। तदेते वीतरागचारित्रार्याः। अथवा चारित्रार्याः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सामायिकचारित्रार्याः छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः परिहारविशुद्धिचारित्रार्याः सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः यथाख्यातचारित्रार्याश्च।

इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्त सामाइयचरित्तारिया । से कित
छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—साइयारा छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया निरइयारा
छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया । सेत्त छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया । से कित परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २
दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—निव्विसमाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्ता
रिया य । सेत्त परिहारविसुद्धियचरित्तारिया । से कित सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता,
तंजहा संकिलिस्समाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया विसुज्झमाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया य । सेत्त सुहुमसंपरा
यचरित्तारिया । से कित अहक्खायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थअहक्खायचरित्तारिया
केवलिअहक्खायचरित्तारिया य । सेत्त अहक्खायचरित्तारिया । सेत्त चरित्तारिया । सेत्त अणिड्ढिपत्तारिया । सेत्त

---

अथ कतिविधाः सामायिकचारित्रार्याः ? सामायिकचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा इत्वरसामायिकचारित्रार्याः यावत्कथितसामायिकचारित्रार्याश्च । तदे-
तत् सामायिकचारित्रार्याः । अथ कतिविधाश्छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः ? छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा सातिचाराश्छेदोपस्था-
पनीयचारित्रार्याः निरतिचाराश्छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः । तदेतत् छेदोपस्थापनीयचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः परिहारविशुद्धिकचारित्रार्याः ? परिहारवि-
शुद्धिकचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा निर्विश्यमानपरिहारविशुद्धिकचारित्रार्याः निर्विष्टकायिकपरिहारविशुद्धिकचारित्रार्याश्च । तदेतत् परिहार-
विशुद्धिकचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः ? सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा संक्लिश्यमानसूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः
विशुद्ध्यमानसूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याश्च । तदेतत् सूक्ष्मसम्परायचारित्रार्याः । अथ कतिविधाः यथाख्यातचारित्रार्याः ? यथाख्यातचारित्रार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः
तद्यथा-छद्मस्थयथाख्यातचारित्रार्याः केवलियथाख्यातचारित्रार्याश्च । तदेते यथाख्यातचारित्रार्याः । तदेते चारित्रार्याः तदेते अनृद्धिप्राप्तार्याः तदेते आर्याः ।

स्थायरिया सेत्त कम्मभूमिगा सेत्त गब्भवक्कंतिया सेत्त मणुस्सा से कित देवा २ चउव्विहा प०, तजहा भव
णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से कित भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तजहा असु
रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ
कुमारा थणियकुमारा तेसमासहदुविहा पण्णत्ता, तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त भवणवासी से
कित वाणमंतरा २ अट्ठविहा प०, तजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसा
या ते समासहदुविहा पण्णत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सत्त वाणमंतरा। से कितं जोइसिया २
पंचविहा पण्णत्ता, तजहा चंदासूरागहनक्खत्ततारा तेसमासहदुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अप
ज्जत्तगाय। से कित जोइसिया से कित वेमाणिया २ दुविहा पण्णत्ता, तजहा कप्पोवगाकप्पाईयाय से कित

---

तथा कर्मभूमका तथत गर्भव्युत्क्रान्तिका । तदेते मनुष्याः । अथ कतिविधा देवाः ? देवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-भवनवासिनो वानव्यन्त
राः ज्योतिष्का वैमानिकाः । अथ कतिविधा भवनवासिनः ? भवनवासिनो दशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमाराः सुवर्णकुमाराः
विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा द्वीपकुमारा उदधिकुमाराः दिक्कुमाराः वायुकुमाराः स्तनितकुमाराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्तका
अपर्याप्तकाश्च । तदेते भवनवासिनः । अथ कतिविधा वानव्यन्तराः ? वानव्यन्तरा अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-किन्नराः किंपुरुषाः महोरगाः
गन्धर्वा यक्षा राक्षसा भूताः पिशाचाः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च । तदेते वानव्यन्तराः । अथ कतिवि
धा ज्योतिष्काः ? ज्योतिष्काः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्त
काश्च । तदेते ज्योतिष्काः । अथ कतिविधा वैमानिकाः ? वैमानिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च । अथ कतिविधाः क

कप्पोवगा२ बारसविहा पण्णत्ता, तंजहा सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बम्भलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं कप्पोवगा से किंतं कप्पाईया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय से किंतं गेविज्जगा २ नवविहा पण्णत्ता, तंजहा हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हिट्ठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिट्ठिमगेविज्जगा मज्झिम२ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिट्ठिमगेविज्जगा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं गेविज्जगा। से किंतं अणुत्तरोववाइया२ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा विजया वेजयंता जयंता अपराजिया सव्वट्ठसिद्धा तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं अणुत्तरोववाइया

---

ल्पोपगा ? कल्पोपगा द्वादशविधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा सौधर्मा ईशाना सनत्कुमारा माहेन्द्रा ब्रह्मलोका लान्तकाः महाशुक्राः सहस्रारा आनता प्राणताः आरणा अच्युता। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता तद्यथा पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। तदेत कल्पोपगा। अथ कतिविधा कल्पातीता ? कल्पातीता द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा ग्रैवेयकाः अनुत्तरवैमानिका श्च। अथ कतिविधा ग्रैवेयका ग्रैवेयका नवविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा: अधोऽधोग्रैवेयका अधोमध्यमग्रैवेयका, अधउपरितनग्रैवेयका मध्यमाधो ग्रैवेयका, मध्यममध्यमग्रैवेयका मध्यमोपरितनग्रैवेयका उपरितनाधोग्रैवेयका उपरितनमध्यमग्रैवेयका उपरितनोपरितनग्रैवेयका ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ता पर्याप्ताश्चापर्याप्ता श्च। तदेत ग्रैवेयकाः। अथ कतिविधा अनुत्तरवैमानिकाः ? अनुत्तरवैमानिका पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-विजया वैजयन्ता जयन्ता अपराजिता सर्वार्थसिद्धा। ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा पर्याप्ताश्चापर्याप्ता श्च। तदेते अनुत्तरवैमानिका। तदेते कल्पातीताः। तदेते वैमानिकाः। तदेते देवाः।

च्छायरिया सेत्तं कम्मभूमिगा सेत्तं गब्भवक्कंतिया सेत्तं मणुस्सा। से किं तं देवा? २ चउव्विहा प०, तंजहा भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया। से किं तं भवणवासी? भवणवासी दसविहा पन्नत्ता, तंजहा असुरकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउकुमारा थणियकुमारा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य सेत्तं भवणवासी। से किं तं वाणमंतरा? २ अट्ठविहा प०, तंजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसाया ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य सेत्तं वाणमंतरा। से किं तं जोइसिया? २ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा चंदा सूरा गह नक्खत्ता तारा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। से किं तं जोइसिया से किं तं वेमाणिया? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा कप्पोवगा कप्पाईया य से किं

---

तदेते कर्मभूमिजाः तदेते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः। तदेते मनुष्याः॥ अथ के ते देवाः? देवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—भवनवासिनः व्यन्तराः ज्योतिष्का वैमानिकाः। अथ के ते भवनवासिनः? भवनवासिनो दशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—असुरकुमारा नागकुमाराः सुवर्णकुमाराः विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा द्वीपकुमारा उदधिकुमाराः दिक्कुमाराः वायुकुमाराः स्तनितकुमाराः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च। तदेते भवनवासिनः। अथ के ते व्यन्तराः? व्यन्तरा अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा—किंनराः किंपुरुषाः महोरगाः गन्धर्वाः यक्षाः राक्षसाः भूताः पिशाचाः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च। तदेते वानव्यन्तराः। अथ के ते ज्योतिष्काः? ज्योतिष्काः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रताराः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च। तदेते ज्योतिष्काः। अथ के ते वैमानिकाः? वैमानिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—कल्पोपगाः कल्पातीताश्च। अथ के ते कल्पोपगाः?

लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु जलभूमिआसु एत्थणं बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं

---

सर्वलोकव्याप्ताः । कस्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वा सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःसरःपङ्क्तिषु बिलपङ्क्तिषु निर्झरेषु विस्वरेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादराप्कायिकानां

छुया सेत्त कप्पाईया सेत्त वेमाणिया सेत्त देवा सेत्त पंचिंदिया सेत्त संसारसमावण्णजीवपन्नवणा सेत्त जीव पन्नवणा सेत्त पन्नवणा ॥ पन्नवणाए पढम पय सम्मत्त ॥ १ ॥ कहिण भंते ! बादरपुढवि काइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेण अट्ठसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए ईसिप्पब्भाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थण बादरपुढवीकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्ज० सट्ठाणेणं

---

तदेते पञ्चेन्द्रियाः । तदेते संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । तदेते जीवप्रज्ञापना। तदेते प्रज्ञापना ॥ इति श्रीमदुपाध्याय [illegible] विरचिते जीवप्रज्ञापना [illegible] प्रथमपदानुवादः ॥ १ ॥

कस्मिन् भदन्त ! बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! स्वस्थानेनाष्टसु पृथिवीषु [illegible] शर्कराप्रभायां वालुकाप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां [illegible] तिर्यग्लोके टङ्केषु कूटेषु शैलेषु [illegible] बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि [illegible] बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । [illegible]

लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिण भंते ! बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा !
जत्थेव बादरपुढविकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा
पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते ! सुहुम
पुढविकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जे पज्जत्तगा जे
अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पण्णत्ता समणाउसो ! कहिण
भंते ! बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ
णोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु
विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालि
यासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी
वेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु जलनूमिआसु एत्थण बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण

---

सङ्ख्येयभाग । कस्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना पर्याप्तानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकाय पर्याप्तका य
अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधाः अविशेषा अनानात्वा सर्वलोकपर्यापन्नका प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकाना पर्याप्तका
नां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पे
षु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु स
रस्सु सर सरःपङ्क्तिषु बिलपङ्क्तिषु निर्झरेषु विस्वरेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादराप्कायिकाना

ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! बादरआउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरआउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरआउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखिज्जइभागे। कहिण सुहुमआउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सुहुमआउकाइया जेय पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणाउसो! कहिण भंते! बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! सट्ठाणेण अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थण बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिण भंते! बादरतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता? गोयमा! जत्थेव बादरतेउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे। क्वचिन् भदन्त बादरप्कायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। क्वचिन् भ० सूक्ष्माप्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम सूक्ष्माप्कायिका येच पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्नका प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। क्वचिन् भदन्त। बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम। स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्द्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते पञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघातं प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतेषु बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे

उववाएणं लोयस्स दोसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतट्टे समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ
भागे। कहि णं भंते! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाण य ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सुहुमतेउ
काइया जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पण्णत्ता
समणाउसो! कहि णं भंते! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सट्ठाणेणं सत्तसु
घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु
भवणपत्थडेसु भवणछिद्देसु भवणनिक्खुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयछिद्देसु निरयनि
क्खुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणछिद्देसु विमाणनिक्खुडेसु तिरि
यलोएसु पाईणपडीणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासछिद्देसु लोगनिक्खुडेसु य एत्थ णं बादरवाउकाइयाणं प
ज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जभागेसु

---

समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। क्वास्मिन् प्रदेशे। बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौ
तम यत्रैव बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि तत्रैव बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन
सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। क्वास्मिन् प्रदेशे। सूक्ष्माप्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि?
गौ०। सूक्ष्माप्कायिका ये च पर्याप्ता ये चापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन्। क्वास्मिन्
प्रदेशे। बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? गौतम। स्वस्थानेन मनुष्यक्षेत्रे अर्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते प
ञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघातं प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभा

सठाणेण लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिण भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाण ठाणा पण्णत्ता ? गोय
मा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण तत्थेव बादरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ।
उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिण भंते ! सुहुम
वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइयाणं जे पज्जत्तापज्जत्ताण ते
सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पण्णत्ता समणाउसो ! कहिण भंते बादरवण
स्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहो
लोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरिय
लोए अगडेसु तलागेसु नदीसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरसरपंतियासु सरपं
तियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलास
एसु जलठाणेसु एत्थ णं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए, समुग्घा

---

ये समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकानां [illegible] प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! यत्रैव बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि [illegible] स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य द्वयोरूर्ध्वकपाटयोः तिर्यग्लोक[illegible] स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! सूक्ष्मतेजःकायिकानां पर्याप्तकानाम पर्याप्तकानां [illegible] स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम सूक्ष्मतेजःकायिकानां ये पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोके व्याप्ताः प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन् । कस्मिन् भ० । बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घन
[illegible]

एण सव्वलोए सट्ठाणेण लोगस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्ज

---

वातवलयेषु तनुषु घनवातेषु तनुषु घनवातवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनप्रस्तटेषु भवनाच्छिद्रेषु भवननिष्कुटेषु निरयेषु निरयावलिकासु निरयप्रस्तटेषु निरयच्छिद्रेषु निरयनिष्कुटेषु ऊर्ध्वलोककल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तटेषु विमानच्छिद्रेषु विमाननिष्कुटेषु तिर्यग्लोकेषु प्राचीनदक्षिणोदीचीनेषु सर्वेषु चैव लोकाकाशच्छिद्रेषु लोकनिष्कुटेषु च एतावत्सु बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागेषु स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु । कस्मिन् भदन्त ! अपर्याप्तबादरवायुकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ! यत्रैव बादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां तत्रैव बादरवायुकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके । स्वस्थानेन लोकस्य असंख्येयेषु भागेषु । कस्मिन् भदन्त ! सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तापर्याप्ताः येऽपि ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । कस्मिन् भदन्त बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तटेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तटेषु तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन स वलोके, समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ।

भागे । कहि णं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाण य ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवण-
स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा
पन्नत्ता, समणाउसो ! कहि णं भंते ! बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए
तदेक्कदेसभागे, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु
गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु स-
मुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थ णं बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं
लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं
भंते ! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए अहोलोए तदेक्क-

---

गौतम ! बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तथैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके च
समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्व खलु भदन्त ! पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! सूक्ष्मवनस्पति-
कायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नकाः प्रज्ञप्ताः [illegible] क्व खलु भदन्त ! द्वीन्द्रि-
याणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु
वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरःसु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु स-
मुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन
लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । क्व खलु भदन्त त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ऊर्ध्वलोके

देसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०

---

तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरस्सरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतस्मिन् त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरस्सरःपङ्क्तिकासु निर्झरेषु उत्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतस्मिन् चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्या

ज्जागे। कहिण भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो०! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा पण्णत्ता, समणाउसो। कहिण भंते! बेइंदियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे, अहोलोए तदेक्कदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! उड्ढलोए तदेक्कदेसभाए अहोलोए तदेक्क

---

गौतम! ये बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तथैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके च समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। क्व भदन्त! पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम! सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ये पर्याप्तका ये अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनानात्वाः सर्वलोकपर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमण! आयुष्मन्! क्व भदन्त! द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि! गौतम! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। क्वचित् भदन्त त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम ऊर्ध्वलोक

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊयगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वन्नेण पन्नत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

---

दुरभसत्त्वानस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्रा (परमदुरभिगन्धा) कपोताग्निवर्णाभा (सोढुमशक्या यादृशोऽग्नेः ... यथामेव भूताः) कर्कशस्पर्शाः दुर(धिसह्या) अशुभा नरका अशुभाश्च नरकेषु वेदना। एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति काला कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः। ते तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रासिता नित्योद्विग्ना नित्यपरमाशुभसम्बद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति?। गौतम। एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरशतयोजनसहस्रबाहुल्याया उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याधश्च एकं योजन

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे अहोलोए तदेक्कदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु, तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए, एत्थ णं नेरइयाणं चउरासीइ निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार

---

संख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कुत्र भदन्त । पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यग्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कुत्र भदन्त नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । कुत्र भदन्त । नैरयिकाः परिवसन्ति ? । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु पृथिवीषु । तद्यथा-रत्नप्रभायां शर्कराप्रभायां वालुकाप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायाम्, एतेषां नैरयिकाणां चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थ णं नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, ते णं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहि णं भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०? कहि णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

---

क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्प्रभा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचयो विस्रा (आमगन्धिका) परमदुरभिगन्धा कापोताग्निवर्णाभा (लोहे ध्मायमाने यादृशोऽग्नेः ज्वालाबहुलतया यथैव भूताः) कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरकेषु वेदना । एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति काला कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः । ते तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसम्बद्धनरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । क्व खलु भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व खलु भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति ? । गौतम । एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्तादेकं योज

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेक्कदेसभागे अहोलोए तदेक्कदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थ णं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहि णं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहि णं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थ णं नेरइयाणं चउरासीइ निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार

---

[illegible]

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम
दुब्भिगंधा काऊअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थणं
नेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएण लोयस्स अ
संखेज्जइभागे, सट्ठाणेण लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थण बहवे नेरइया परिवसंति काला कालोभासा ग
म्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेण पन्नत्ता, तेण तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं
तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिण भंते! रयणप्पभा
पुढवीनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प०? कहिण भंते! रयणप्पभापुढवीनेरइया परिवसंति? गो०!
इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

---

क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचयो विस्रा (आमगन्धिका) परमदुरभिगन्धा कपोताग्निवर्णा (लोहध्मायमान यादृशोऽग्नेः वर्णस्तादृशवर्णा यथाऽग्नेः मूलाः) कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरकवेदना। एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः। ते तत्र नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यत्रसिता नित्योद्विग्ना नित्यपरमाशुभसम्बद्धनरकभयं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति?। गौतम। एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि योजनसहस्रमवगाह्याधस्तात् योज

हेठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवतीति मक्खायं, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थ णं बहवे रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति। काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, समणाउसो ! ते णं णिच्चं भीया निच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्ध

---

वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनसहस्रे एतद् रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां त्रिंशन्निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्, ते नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसाः [illegible] नरका नरकेषु वेदना [illegible] रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि [illegible] समुद्घातेन लोकस्यासंख्येय [illegible] रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति। कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमण आयुष्मन्। तेन नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमसम्बद्धनरकभय प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। कुत्र खलु भदन्त शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कुत्र खलु भदन्त शर्करप्रभा

नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहि णं भंते, सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सक्करप्पभापुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए, उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थ णं सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणं पणवीसं निरयावाससहस्सा हवंतीतिमक्खायम् । ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसंति । काला

---

पृथिवीनैरयिका परिवसन्ति ? गौतम शर्करप्रभापृथिव्या द्वात्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याधश्च एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये त्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रे एतेषु शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पञ्चविंशतिर्निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अध क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषपथा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदना । एतेषु शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः शर्करप्रभापृथिवीनैरयिका परिवसन्ति । कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः

कालावभासा गम्भीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता । समणाउसो ! ते णं तत्थ निच्चं भीता निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! वालुयप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! वालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे छव्वीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थ णं वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं पण्णरस निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणा एत्थ णं वालुयप्पभापुढवीनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स अ

---

परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । तेन तत्र नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परममशुभसंबद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । क्वचिद् भदन्त ! वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! वालुकाप्रभापृथिव्यामष्टाविंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अधश्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षड्विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रे एतेषु वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पञ्चदश निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथाः मेदोवसापूयपटलरुधिरमांसचिक्खल्लिप्तानुलेपनतला अशुचयो विसाः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः । एतेषु वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्ता

सखेज्जइभागे । सट्ठाणेण लोयस्स असखेज्जइभागे । तत्थ णं बहवे वालुयप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेण प० समणाउसो । तेण णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहमसंबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।

कहि णं भंते ! पंकप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंकप्पभापुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । ते णं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा

---

मा स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः वालुकप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षाः भीमाः उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । तेन नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमसम्बद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । क्वस्मिन् भदन्त ! पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ! पङ्कप्रभापृथिव्या विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अधश्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टादशोत्तरे योजनशतसहस्रे अत्र पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां दशनरकावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बाह्यचतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदोवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचयो विस्राः परमदुरभिगन्धा कापोताग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशु

काऊयगणियज्माला कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं पंकप्पभापुढवि णेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे पंकप्पभापुढविणेरइया परिवसंति, काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पन्नत्ता समणाउसो । ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थ णं धूमप्पभापुढवीणेरइयाणं तिन्नि निरयावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्ख

---

भा नरकेषु वेदना एतेषु पङ्कप्रभा पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्य [illegible] असंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्र बहवः पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उ त्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । ते [illegible] नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं [illegible] नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धनरकभ य प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । [illegible] धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ! धूमप्रभायां पृथि व्यामष्टादशोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अध एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षोडशोत्तरे योजनशतसहस्रे अ त्रैतस्मिन् धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता [illegible]

त्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काउअगणि
वण्णा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं धूमप्पभापुढविणेरइयाण
पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ
भागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे धूमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा
गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो। ते णं णिच्चं भीया णिच्चं तत्था
णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुहसंबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते । तमा
पुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा । तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाह
ल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे चोद्दसुत्तरे जोयणसहस्स

---

ता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचा विस्राः परमदुरभिगन्धाः
कापोताग्निवर्णाभा कर्कशस्पर्शा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः । एतेषु धूमप्रभापृथ्वीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्ता
नि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्र तु बहवो धूमप्रभपृथिवीनैरयिका परिव
सन्ति । काला कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनका परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ता श्रमणायुष्मन् । ते नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्य
त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसम्बद्धनरकभयं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । कुत्र भदन्त । तमःप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां
स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । तमःपृथ्व्या षोडशोत्तरयोजनशतसहस्रबाहुल्यायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य अधः एकं योजनसहस्रं वर्जयि
त्वा मध्ये चतुर्दशोत्तरे योजनसहस्रे एतेषु तमःप्रभपृथिवीनैरयिकाणामेकस्मिन्पञ्चोने नरकावासशतसहस्रे प्रज्ञप्तानीत्याख्यातम् । ते नरका अन्त

एत्थणं तमप्पभापुढविणेरइयाण एगे पंचूणे नरगावाससयसहस्से हवतीति मक्खायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे तमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो। तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०, ? गोयमा! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवन्नजोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता

---

वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषपथा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचयो विस्राः परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः। [illegible] सापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति काला [illegible] परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। तेन नित्यभीता [illegible] नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। क्व भदन्त! तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि?। गौतम। तमस्तमःपृथिव्यामष्टोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि अर्धत्रिपञ्चाशद्योजन

हेट्ठावि अद्धतेवण्णजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थ णं तमतमापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता, तंजहा–काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थ णं तमतमापुढविनेरइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थ णं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वण्णेणं पन्नत्ता समणाउसो। ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति॥ आसीतं बत्तीसं अट्ठावीसं च होइ वीसं च। अट्ठारस सो

---

सहस्राण्युपरितनाधस्तात् चार्धत्रिपञ्चाशत्सहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु अत्र तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चदिशि पञ्चानुत्तरा महामहालया महानिरयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा–काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने ते नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा अपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदःपूयवसारुधिरमांसपङ्कदिग्धानुलेपनतला अशुचिर्विस्रा परमदुरभिगन्धा कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदना एतेषु तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नि

एत्थ णं तमप्पभापुढविणेरइयाणं एगे पंचूणे नरगावाससयसहस्से हवतीति मक्खायं, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमदुब्भिगंधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थ णं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थ णं बहवे तमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पन्नत्ता समणाउसो। ते णं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुहमसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिं णं भंते! तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०, ? गोयमा! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं अद्धतेवण्णजोयणसहस्साइं ओगाहित्ता

---

एता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथा मेदोवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुचयो विस्राः परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः। एतेषु तमःप्रभापृथ्वीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रासिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभमसंबद्धं नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति। क्व खलु भदन्त! तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? गौतम! तमस्तमःपृथिव्या अष्टोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि अर्द्धत्रिपञ्चाशद्योजन

हेठावि अद्धतेवन्नजोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे तिसुजोयणसहस्सेसु एत्थण तमतमापुढवीणेरइयाण पज्ज
त्तापज्जत्ताण पचदिसि पच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पन्नत्ता, तजहा—काले महाकाले रोरुए म
हारोरुए अपइठाणे, तण नरगा अतो वट्टा बाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा
ववगयगहचदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदु
ब्भिगधा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदनाओ एत्थण तमतमापुढविनेरइयाण
ठाणा पन्नत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइभाए समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जइभाए सठाणेण लोयस्स
असखेज्जइभाए तत्थण बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसति काला कालोभासा गभीरलोमहरिसा भीमा
उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेण पन्नत्ता समणाउसो। तण निच्च भीया निच्च तत्था निच्च उव्विग्गा निच्च
परममसुहसबद्ध नरगभय पच्चणुब्भवमाणा विहरति॥ असीतबत्तीस अठावीसचहोइवीसच। अठारससो

---

सहस्राणि द्विपञ्चाशत् अधस्तादपि अर्धत्रिपञ्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु अत्र तमस्तम पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्या
प्तानां पञ्चदिक्षु पञ्चानुत्तरा महामहालया महानिरयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने ते नरका अन्तर्वृत्ता ब
हिश्चतुरस्राः अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिताः नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्पथाः मेदपूयवसारुधिरमांसचिक्खल्ललिप्तानुलेपनत
ला अशुचयो विस्राः परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शाः दुरध्यासाः अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः एतेषु तमस्तमपृथिवीनैरयिकाणां स्थानानि
प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवस्तमस्तम पृथिवीनैरयिकाः
परिवसन्ति कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षाः भीमाः उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। ते नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नि

छसग छट्ठुत्तरमेयहेठिमया ॥ १ ॥ छठुत्तरचयत्तीस छव्वीसचेवसयसहस्सतु छठारससोलसग चोद्दससाहिय तुछठीए। छरुतेयक्खसहस्सा उवरिमहोयज्जिऊतोजाणिय। मज्झउतिसुसहस्से सुहोतिनरगातमतमाए। तीसा यपत्तवीसा पक्षरसदसयसयसहस्साइ। तिन्नियपचूणेग पचवछणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण त्तंत। पचि दियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? गो०। उड्ढलोए तदेकदेसत्ताए छहोलोए तदेकदेस त्ताए तिरियलोएसु छगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु स रपतियासु सरसरपतियासु बिलपतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु स व्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्यण पचिदियतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०। उववा एण लोगस्स छसखेज्जइभागे। समुग्घाएण लोयस्स छसखेज्जइभागे। सठाणेण लोयस्स छसखेज्जइभागे।

---

स्पृष्ट्वा नित्यं परमाशुभसंवत्र नरकभयं पपशुभूपमाना विचरन्ति। षडशीतिर्द्वात्रिंशत् अष्टाविंशतिविंशतीव। अष्टादश षोडशकमष्टोत्तरमेवा धोधिमया ॥ १ ॥ अशोत्तरं द्वात्रिंशत् अष्टाविंशतिविंशत्यष्टकं तु ॥ अष्टादश षोडशकं चतुर्दशाधिकं तु षष्ठ्यांमत् ॥ [illegible] मघोवर्जि तयो मवितम्। मध्ये तु त्रिषु सहस्रे षु भवन्ति नरकास्तमस्तमसः ॥ त्रिंशत् पञ्चविंशतिः पञ्चदश दश त्रीणि [illegible] पञ्चोनमेकं पञ्चैव [illegible] नुत्तरनरकाः ॥ ४ ॥ कस्मिन् भदन्त। पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां [illegible] तदेकदेशभागे [illegible] पुष्करिणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरः सरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उज्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्यो निकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे।

[illegible]।

कहिण नते ! मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । गोयमा ! अंतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसह स्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मनूमीसु तीसाए अकम्मनूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवेसु एत्थण मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोयस्स असंखेज्जइनागे समुग्घाएण सव्वलोए सठाणे ण लोयस्स असंखेज्जइनागे । कहिण नते ! नवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? कहिण नवणवासीदेवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पनाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उ वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्झे अट्ठुत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण नवणवासीदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तनवणकोडीओ बावत्तरिंच नवणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण नवणा बाहिं वट्टा अंतो समचउरसा अहे पुक्खरकन्नियासठाणसठिया उक्किन्नतरविउलग

कस्मिन् नदन्त । मनुष्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्सु योजनशतसहस्रेषु सार्द्धद्वयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रिंशदकर्मभूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु एतेषु मनुष्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येय भाग समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् नदन्त । भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि कस्मिन् नदन्त । भवनवासिनो देवा परिवसन्ति ? गौतम । एतस्यां रत्नप्रभापृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरिष्टाद् योजनसहस्रमवगा ह्याधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रेषु भवनवासिदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां सप्तभवनकोट्यो द्विसप्ततिभव नावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बाह्यतो वृत्तानि अन्तः समचतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि उत्कीर्णान्त रविपुलगम्भीरखातपरिखाणि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढीपरिवारितानि अयोध्यानि सदाजयानि

ग्गीरसासतफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलपरिवारिया अउज्झा सयाज या सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खि या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदनदद्दरदिन्नपंचगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवया रकलिया (ग्र १५००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव ट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपन्नदित्ता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरू वा पडिरूवा एत्थ णं नवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववाएण लोगस्स असंखेज्जइ

---

१ सदाजेयानि सदा गुप्तानि चतुश्चत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि चतुश्चत्वारिंशद्वनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लाउ ल्लोइय ( सेटिकादिभिर्भित्त्यादिषु धवलनं भूमेर्लेपनं ) महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि [illegible] [illegible] ( मल्यो० ) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निर्मलानि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप [illegible] लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र तत्र भवनवासिदेवाः परिवसन्ति । बहवो-

भागे समुग्घाएण लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेण लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे भवणवासीदेवा परिवसंति त—असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउदहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएभवणवासी ॥ चूडामणिमउडरयणभूसणा फणिगरुलवइरपुन्नकलसंकिउप्फेसा सीहमगरमयकअस्सवरवद्धमाणनिजुत्तचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभाया महासोक्खा हारविराइयवत्था कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघयणेण दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाउ उज्जोवेमाणा

---

असुरनागसुपर्णा विद्युदग्निद्वीपोदधयश्च । दिक्पवनस्तनिताख्या दशैते भवनवासिनो ज्ञेयाः ॥ १ ॥ चूडामणिमुकुटरत्नभूषणाः फणागरुडवज्रपूर्णकलशांकितमुकुटाः । सिंहमगरवरमानिकहयवर्द्धमाननियुक्ताश्चिह्नधराः ॥ २ ॥ सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसः महाबला महानुभावा महासौख्याः हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अंगदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रमालामौलिमकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधराः भासुरबोन्द (शरीर) यो प्रलम्बवनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्यया द्युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया (देहवर्णसुन्दरतया) दशदिशाः उद्योतमानाः प्रभासमानाः तेन तत्र स्वानां २ (स्वस्वसंबन्धिनां) भवनवासिशतसहस्राणां स्वानां २ सामानिकसहस्राणां स्वानां २ त्रयस्त्रिंशतां स्वानां २ लोकपालानां स्वासां २ अग्रमहिषीणां स्वासां परिषदां स्वानां अधिपतीनां स्वासां अनीकाधिपतीनां स्वानां आत्मरक्षदेवसहस्राणां अन्ये

नीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सयाज या सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खि या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवया रकलिया (ग्र १४००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव ट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपन्नादित्ता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरू वा पडिरूवा एत्थण भवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएण लोगस्स असंखेज्जइ

---

सदायोध्यानि सदा गुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लाउल्लोइय ( [illegible] ) महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दन[illegible] [illegible] ( प्रलम्बित ) [illegible] पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारक [illegible] अप्सरोगणसंघसंविकीर्णानि [illegible] श्लक्ष्णानि मृष्टानि घृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप पातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो भवनवासिदेवाः परिवसन्ति । तद्यथा-

लमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सदा जया सदा गुत्ता अडयाला कोट्ठगरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उव चियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरा मा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया सव्वरयणामया अ च्छा सण्हा लट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववा एणं लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे त

---

नि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढिपरिवारितानि अयोध्यानि सदाजयानि सदावलयानि सदागुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लाउल्लोइय महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आस क्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघाय मानगन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसङ्घसंविकीर्णानि दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमया नि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोक

पन्नासेमाणा तेण सव्व साणं २ भवणवाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहीसीण साण २ परियाण साण २ अणीयाण साण २ अणियाहिवईणं साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिच बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं भंते ! असुरकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं चोवट्ठिं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया क्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुस

[illegible]

सामाणियसाहस्सीण साण २ तायत्तीसाण साण २ लोगपालाण साण २ अग्गमहिसीण साण २ परिसाणं साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण भवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयततीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, चमरबलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति काला महानीलसरिसा नीलगुलियगवलअयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलईसीसियरत्ततंबनयणा गरुलाययउज्जुतुंगनासा उवचियसिलप्पवालबिंबफलसन्निहाहरोट्ठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोखीरकुंददगरयमुणालिया धवलदंतसेढी हुयवहनिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणकसिणरुयगरमणिज्जनिद्धकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं व

स्वानाम् विव्यया प्रभया विव्यया युत्या विव्यया प्रभया विव्यया छायया विव्यया अर्चिषा एतेन विव्येन तेजसेन दशविशाउद्योतमाना प्रभासीमाना तेन तत्र लोपा २ भवनावासशतसहस्राणां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशता लोकपालानां अग्रमहिषीणां परिषदामधिपत्यानां आधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वम् आज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयमाणा पालयमाना महताऽऽहतनृत्यगीतवादितत्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति । चमरबलिनौ अत्र द्वौ असुरकुमारेन्द्रौ असुरकुमारराजानौ परिवसतः काला महानीलसदृशौ नीलगुलिका गवलातसीकुसुमप्रकाशाः विकसितशतपत्रनिर्मलईषत्सितरक्तताम्रनयना गरुडायतऋजुतुङ्गनासा उपचितशिलाप्रवालबिम्बफलसन्निभाधरोष्ठाः पाण्डुरशशिशकलविमलनिर्मलदधिघनशङ्खगोक्षीरकुन्द

स्यण बहवे असुरकुमारादेवा परिवसंति काला लोहितक्खा बिंबोठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकु ण्डलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियपवरभूसणनिम्मलनिर यणमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया म हायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्टगंड यलकन्नपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवनमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघय णेणं दिव्वेण संठाणेण दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेण तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २

---

...संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्र बहवः असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति । कालाः लोहिताक्षाः बिम्बोष्ठाः धवलपुष्पदन्ताः ... (एककर्णे...) कुण्डलधराः ... ईषत्शिलीन्ध्रपुष्पप्रकाशानि असंक्लिष्टानि सूक्ष्माणि ... प्रवरपरिधानाः ... प्रथमं समतिक्रान्ताः द्वितीयं चासंप्राप्ताः भद्रे यौवने वर्तमानाः ... तलभङ्गकत्रुटितप्रवरभूषणनिर्मलमणिरत्नमण्डितभुजाः दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः चूडामणिविचित्रचिह्नगताः सुरूपाः महर्द्धिकाः महाद्युतिकाः महायशसः महाबलाः महानुभागाः महासुखाः हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभु जाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणः विचित्रहस्ताभरणाः विचित्रमालामौलिमुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमा ल्यानुलेपनधराः भास्वरबोन्दयः (भास्वरशरीराः) प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन सं

परिसाण सएण २ अणियाण साण २ अणियाहिवईण साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण
भवणवासीण देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारे
माणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुं
जेमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं
भंते ! दाहिणिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमी
से रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा वेगं
जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवी
णय चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सोचेव वण्णओ
जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स

---

सामानिकसहस्राणां सार्धं २ त्रयस्त्रिंशकानां सार्धं १ लोकपालानां सार्धं २ अग्रमहिषीणां सार्धं २ परिषदां सार्धं २ अनीकानां सार्धं २ अनीकाधि
पतीनामात्मरक्षदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरपतित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनाप
त्यं च कारयन्तः पालयन्तः महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुडिघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहर
न्ति । कस्मिन् भदन्त ! दक्षिणदिग्भवासुरकुमाराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कस्मिन् भदन्त ! दक्षिणदिग्भवासुरकुमारा देवाः परिवसन्ति । गौ
तम ! जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेनास्या रत्नप्रभाया पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्ता
देकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च चतुस्त्रिंशद्भवनावासशतसह

त्थाई पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियप वरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढीया महज्जुया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडयतुडियथंभियभुया अंगदकुंड लमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्ला णगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए भासाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए पभाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ भवणावाससयसहस्सा णं साणं२ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २

---

[illegible] [illegible] सुरूपा महर्द्धिकाः महाद्युतिकाः महायशसः महाबलाः महानुभागाः महासौख्याः हारविराजितवक्षसः [illegible] कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः [illegible] पीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणाः विचित्रमालामौलिमुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनाः भासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया भासा दिव्यया छायया दिव्यया प्रभया दिव्येनार्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दशदिशा उद्योतयमानाः प्रभासयमानाः ते तत्र स्वेषां २ ( स्वासां २ ) भवनावासशतसहस्राणां स्वेषां २

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थ णं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीण य तीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ते णं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे से णं तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति। कहिं णं भंते! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, कहिं णं

---

पर्वतस्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायाः उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्य अधश्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तराहाणामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च त्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाऽऽख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि शेषं यथा दाक्षिणात्यानां यावद्विहरन्ति। बली चात्र वैरोचनेन्द्रो वैरोचनराजः परिवसति कालो महानीलसदृशो यावत्प्रभासयमानः तत्र त्रिंशतः भवनावासशतसहस्राणां षष्टेः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतस्त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुःषष्टेरात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनामौत्तराहाणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं यावत्कुर्वाणा विहरन्ति। क्व भदन्त! नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि? क्व भदन्त! नागकुमारा देवाः परिवसन्ति? गौतम! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशत

असंखेज्जइभागे, तत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारा देवा देवीउ परिवसंति काला लोहितक्खा तहेव जाव भुंजेमाणे विहरति, एवं सव्वस्स भाणियव्वं भवणवासीण, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण चउसठीए सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण पंचण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्हं परिसाण सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवईण चउण्हं च चउसठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण दाहिणिल्लाण देवाण देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । कहिणं भंते । उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

---

भागे भवनीलतागतम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि यावत्प्रतिरूपाणि एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो दाक्षिणात्या असुरकुमारदेवा देव्यश्च परिवसन्ति काला लोहिताक्षा यावद्भुञ्जमाना विहरन्ति । एवं सर्वेषां भवनवासिनां चमरोऽत्र असुरेन्द्रोऽसुरकुमारराजा परिवसति काले महानीलसदृशो यावत्प्रभासमानः, स तत्र चतुस्त्रिंशतो भवनावासशतसहस्राणां चतुःषष्टेः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतः त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां च चतुःषष्टिकानामात्मरक्षदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां देवानां देवीनां चाधिपत्यं पौरपत्यं यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त ! औत्तराहाणामसुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त ! औत्तरा असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य

जिभा मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिल्लाणं नागकुमाराण देवाणं चौयालीसं भवणावास सयसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण भवणा वाहिं वट्टा जाव पडिरूवा एत्थण दाहिणिल्लाण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे एत्थण बहवे दाहिणिल्लाण नागकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति। धरण एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेण तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण छण्हं सामाणियसाहस्सीण तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्ह लोगपालाण छण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्हं परिसाण सत्तण्हं अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण दाहिणिल्लाण नागकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति । कहिण भंते । उत्तरिल्लाणं नागकुमाराण दे

---

चत्वायत्वा मध्येऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र दाक्षिणात्याना नागकुमाराणा देवाना चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाक्षिणात्याना नागकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवो दाक्षिणात्या नागकुमारदेवाः परिवसन्ति महर्धिका यावद्विहरन्ति । धरण अत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति महर्धिको यावत्प्रकाशमान तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणा षण्णा सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकाना चतुर्णा लोकपालानां षण्णामग्रमहिषीणा सपरिवाराणा तिसृणा परिषदा सप्तानामनीकाना सप्तानामनीकाधिपतीना चतुर्विंशत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणा अन्येषां च बहूना दाक्षिणात्याना नागकुमाराणां देवानां देवीना च आधिपत्य पुरोवर्तित्व यावत्कुर्वाणा विहरन्ति । क्व भदन्त । औत्तराहाणां नागकुमाराणा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त । नागकुमारा औत्तरिका देवाः परिवसन्ति ? गौतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वत

भंते ! नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्स वज्जिऊण मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवतीति मक्खाय, तेण भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा जाव पडिरूवा तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइ भागे तत्थण बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया सेस जहा ओहियाण जाव विहरंति। कहिण भंते ! दाहिणिल्लाणनागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वे

---

[illegible] उपरि एकं योजनसहस्रं [illegible] पुनरधो [illegible] नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां चतुरशीति [illegible] नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि [illegible] नागकुमारा देवाः परिवसन्ति, महर्द्धिका महाद्युतिकाः [illegible] यावद्विहरन्ति । धरणभूतानन्दौ अत्र द्वौ नागकुमारराजानौ परिवसतः महर्द्धिकौ शेष [illegible] यावद्विहरतः । [illegible] । दाक्षिणात्य नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि [illegible] । दाक्षिणात्यनागकुमारदेवाः परिवसन्ति । गौतम ! जम्बूद्वीपद्वीप मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन [illegible]

पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थ णं बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति
महिड्ढिया सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवन्नकुमार
रायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति। कहि णं भंते! दाहिणिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ता
णं ठाणा पन्नत्ता। कहि णं भंते! दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे जाव मज्झे
अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अट्ठतीसं भवणावाससहस्सा हवंतीति
मक्खायं, ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थ णं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं
ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थ णं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति। वेणुदेवे
इत्थ सुवण्णिंदे सुवण्णकुमारराया परिवसंति सेसं जहा नागकुमाराणं। कहि णं भंते! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकु
माराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। कहि णं भंते! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा परिवसंति? गोय

---

असंख्येयभागमात्र बहवः सुपर्णकुमारा देवा परिवसन्ति महर्द्धिका शेषं यथौघिकानां यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीच अत्र द्वौ सुपर्णकुमा
रेन्द्रौ सुपर्णकुमारराजानौ परिवसतः महर्द्धिकौ यावद्विहरतः। क्व भदन्त! दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्था
नानि प्रज्ञप्तानि। क्व भदन्त! दाक्षिणात्याः सुपर्णकुमारदेवाः परिवसन्ति? गौतम! एतस्या यावन्मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र दाक्षिणा
त्यानां सुपर्णकुमाराणामष्टत्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र दाक्षिणात्यानां सु
पर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवः सुपर्णकुमारादेवाः परिवसन्ति। वेणुदेवोऽत्र सुपर्णेन्द्रो
सुपर्णकुमारराजा परिवसति। शेषं यथा नागकुमाराणाम्। क्व भदन्त! औत्तराहाणां सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ

याण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिण भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जम्बूद्दीवे२ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते णं भवणा बाहिं वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ महिड्ढिए जाव पभासेमाणे से णं तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं बावत्तरिंभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते णं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा तत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता

---

[illegible] एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः अशीतिसहस्रोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपरि [illegible] [illegible] च चत्वारिंशत् सुपर्णकुमाराणां देवानां [illegible] [illegible] । तानि भवना नि [illegible] नागकुमारराजो परिवसति । महर्द्धिको यावत् प्रभासमा न स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावाससहस्राणां [illegible] विहरन्ति । [illegible] । सुपर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि [illegible] । सुपर्णकुमारा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या यावत् सुपर्णकुमाराणां देवानां द्विसप्तति भवनावासशतसहस्राणि [illegible] ख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । [illegible]

नेसुमियथाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उवरिम्राण जाव विहरति, कालाअसुरकुमारा नागाउदहीयपं मुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होतिसुवन्नादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जूअग्गीयहोति दीवाय । सामापियगुवन्ना वाउकुमारामुणयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोतिरत्ता सिलिंधपुप्फप्पभातहाउदही । अग्गी दीवाय । सामापियगुवन्ना वाउकुमारामुणयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोतिरत्ता सिलिंधपुप्फप्पभातहाउदही । आसयवसणधरा होतिसुवन्नादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जूअग्गीयहोतिदीवाय । सज्झाणु रागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिण भंते ! वाणमंतराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, कहिण भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिठावि एगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जाइं भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुस्करकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरवि

---

रिका यावद्विहरन्ति । कालाअसुरकुमारा नागादधीपावसुरोहीस । वरकनकनिकसगौरा भवन्तिसुपर्णदिक्स्तनिता ॥ १ ॥ उत्तप्तकनकवर्णा वि द्युदग्नीवन्नवन्तिद्वीपाश्च ॥ श्यामा प्रियङ्गुवर्णाः वायुकुमाराश्चज्ञातव्या ॥ २ ॥ असुराभवन्तिरक्ताः शिलीन्ध्रपुष्पप्रभाम्भोधयश्च ॥ आश्वासकवसन धरा भवन्तिसुपर्णादिक्स्तनिता ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदग्नीवन्नवन्तिद्वीपाश्च ॥ सन्ध्यानुरागवसना वायुकुमाराश्चमुमातव्या ॥ ४ ॥ क्व भदन्त ! वानव्यन्तराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! वानव्यन्तरा देवा परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या रत्नमय स्य काण्डस्य योजनशतसहस्रबाहल्यस्य उपरीक याजनशतमवगाह्य अधस्तादेक योजनशतं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसु योजनशतेषु अत्र वानव्य न्तराणां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भौमेयनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता अन्तश्चतुरस्रा अध पुष्करकर्णिका

मा । इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं चउत्तया जाणिया तहा सेसाणवि चोद सण्हं इंदाणं जाणियव्वा नवरं भवणनाणत्तं इंदाणनाणत्तं वण्णनाणत्तं परिहाणनाणत्तं च इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं—चोवठ्ठीअसुराणं चुलसीतीचेवहोइनागाणं । बावत्तरिसुवण्णे वाउकुमाराणछण्णउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीण । छण्हंपिजुयलयाणं छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्तीसाचोयाला अट्ठतीसचहोइसयसहस्साइं । पण्णाचत्तालीसा दाहिणओहोंतिभवणाइं ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा चोतीसचेवसयसहस्साइं । छायालाछत्तीसा उत्तरओहोंतिभवणाइं ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु छच्चसहस्साउ असुरवज्जाण । सामाणियाउएए चउग्गुणाआयरक्खाउ ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवेणुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय । पुण्णेजलकंतेय अमियविलंबेयघोसेय ॥ ६ ॥ बलिभूयाणंदेवेणुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिट्ठे । जलप्प

---

सान्ति, [illegible] । चोत्तरिका सुपर्णकुमाराः परिवसन्ति । चोतम । एतस्या रत्नप्रभाया [illegible] सुपर्णकुमाराणां [illegible] [illegible] परिधानमितिवै [illegible]
[illegible] वायुकुमारेषु [illegible] द्वीपादयुदधीनां विद्युत्कुमार [illegible] चत्वारिंशत् [illegible] । पंचाशच्चत्वा रिंशत् [illegible] ॥ ३ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्छतसहस्राणि । षट्चत्वारिंशत्षट्त्रिंश [illegible] ॥ ४ ॥ चतुः षष्टि [illegible] । सामानिका [illegible] ॥ ५ ॥ चमरधरणौ [illegible] । पूर्णश्च [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

सेज्जाहन्नागे तत्थण बहवे वाणमतरा देवा परिवसति तजहा—पिसाया नूया जरका रक्कसा किन्नरा किंपुरिसा नुयगवतिणोय महाकाया गधव्वगणा य निउणगधव्वगीतरङ्गणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवाइयनूयवाइय कंदीय महाकंदीय कोहंडपयगदेवा ॥१॥ चचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गंभिरहसियपिया गीयणिच्चरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसितचित्तवणमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थविचित्तचिल्लगणियसणा विविहदेसीणवत्थगहियवेसा पमुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला असिमोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्डिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडयलकण्णपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा

---

राक्षसा किन्नरा किम्पुरुषा भुजगपतयश्च महाकाया गन्धर्वगणाश्च निपुणगन्धर्वगीतरतयः अणपन्निकपणपन्निका ऋषिवादिभूतवादिनश्च । कन्दित महाकन्दित कोहण्डपतङ्गाश्च ॥ १ ॥ एतेऽष्टौ देवविशेषाः चञ्चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रियाः गम्भीरहसितप्रियाः गीतनृत्यरतयो वनमालामेलमुकुटकुण्डलस्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभूषणधराः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसितचित्रवनमालारचितवक्षसः कामकामाः कामरूपदेहधरा नानाविधवर्णरागवरवस्त्रविचित्रचिल्लग (दीप्यमान इत्यर्थः) निवसना विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः प्रमुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रिया हासबोलबहुला असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता अनेकमणिरत्नविविधनियुक्तविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसो महाबला महानुभावा महासौख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा

उलगन्नीरसायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अ
उज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकोट्ठरइयाअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खि
या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो
रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोव
यारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छ
रगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणदिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा
घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा
अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असं

---

संस्थानसंस्थिता उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखा: प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागा: यन्त्रशतघ्नीमुसलमुसुण्ढीपरिवारिता अयोध्या:
सदाजया: सदागुप्ता: अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचिता अष्टचत्वारिंशत्कृतवनमाला: क्षेमा: शिवा: किङ्करामरदण्डोपरक्षिता: लाउल्लोइयमहिता: गोशीर्ष-
सरसरक्तचन्दन... [illegible]

खेज्जइभागे तत्थण बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किंनरा किंपुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवाइयभूयवाइयकंदीय महाकंदीय कोहंडपयंगदेवा ॥१॥ चंचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गंभीरहसियपिया गीयणिच्चरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसंतचित्तवणमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थचित्तचिल्लगणियसणा विविहदेसीणेवत्थगहियवेसा पमुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला असिमोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडजुयलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा

---

राक्षसा किन्नरा किम्पुरुषा भुजगपतयश्च महाकाया गन्धर्वगणाश्च निपुणगन्धर्वगीतरतय अणपन्निपणपन्नि ऋषिवादी भूतवादी च । क्रन्दीय महाक्रन्दी कोहण्डोपतङ्गश्च ॥ १ ॥ एतेऽष्टौ देवविशेषाः , चञ्चलचपलचित्तक्रीडनद्रवप्रियाः गम्भीरहसितप्रिया गीतनृत्यरतयो वनमालामेलमुकुटकुण्डलस्वच्छन्दविकुर्वितालङ्कारचारुभूषणधराः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसच्चित्रवनमालारचितवक्षसः कामकामाः कामरूपदेहधरा नानाविधवर्णरागवरवस्त्रविचित्रचिह्न ( दृश्यमान वस्त्र ) निवसना विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः प्रमुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रिया हास्यबोलबहुला असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता अनेकमणिरत्नविविधनियुक्तविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशसो महाबला महानुभावा महासौख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा

उलगत्तीरसायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया अउ
ज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खि
या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो
रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोव
यारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छ
रगणसंघविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा
घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा
अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असं

---

[illegible] प्राकाराट्टालककपाटतोरण[illegible]देशभागाः [illegible]परिवारिताः अयोध्याः [illegible] [illegible] सदा गुप्ताः [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]वनमालाः क्षेमाः शिवाः किङ्करामर[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] उपचितचन्दनकलशाः [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाः सुगन्धवरगन्धिताः गन्ध
वर्तिभूताः अप्सरोगणसङ्घविकीर्णाः दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादिताः पताकामालाकुलाभिरामाः सर्वरत्नमयाः अच्छाः श्लक्ष्णाः लक्ष्णाः घृष्टाः मृष्टाः नीरजसो
निर्मलाः निष्पङ्काः निष्कण्टकच्छायाः सप्रभाः सश्रीकाः सोद्योताः प्रासादीयाः दर्शनीयाः अभिरूपाः प्रतिरूपाः अत्र वानव्यन्तराणां देवानां पर्याप्ता-
पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि (स्थानेषु) लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवो वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति तद्यथा-पिशाचा भूता यक्षा

रयणामयस्स कण्डस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जि
त्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा
भवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरू
वा, एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं
बहवे पिसाया परिवसंति महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाय
इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया जाव विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं पि
सायाणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति? गो०! जंबूद्दीवे २
मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कण्डस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं
एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं दाहिणिल्लाणं

पिशाचानां देवानां तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानीत्याख्यातम्।
पर्यन्त योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेषु अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ
ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथौघिको भवनवर्णकस्तथा भणितव्यो यावत्प्रतिरूपा, अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ
प्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवः पिशाचाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथौघिका यावद्विहरन्ति, कालमहाकालौ चात्र द्वौ पिशाचे
न्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसतः महर्द्धिकौ महाद्युतिकौ यावद्विहरतः। क्व भदन्त! दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व
भदन्त! दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्ड
स्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपरि एकं योजनशतमवगाह्य अधस्तादेकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेषु दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

रा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेणसंठाणेण दिव्वाए इ
ड्ढीए दिव्वाए जूईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदि
साओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ भोमेज्जणगरावाससयसहस्साण साणं२ सामाणियसाहस्सीण साणं२ अग्गमहिसीण साणं२ सपरिवाराण साणं२ अणियाण साणं२ अणियाहिव
ईण साणं२ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च
सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल
तुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। कहिण भंते! पिसायाण देवाण
पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०। कहिण भंते! पिसायादेवा परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए

---

[illegible] [illegible]परिहिता [illegible] भासुरबोन्दयः [illegible]माल्यधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धे
न दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया [illegible] दिव्यया युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया [illegible] दिव्येनार्चिषा [illegible] दिव्यया लेश्या
[illegible] उद्योतयन्तः प्रभासयन्तस्ते तत्र स्वेषां २ भौमेयनगरावास[illegible] [illegible] सामानिक[illegible] स्वेषां, [illegible]
[illegible] सपरिवाराणां स्वेषां २ [illegible] [illegible] बहूनां वानमन्तराणां देवानां दे
[illegible] [illegible] समापृतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो [illegible]तन्त्रीतलतालत्रुटित
[illegible] दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जानो विहरन्ति। [illegible] पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि [illegible]
[illegible]। पिशाचा देवाः परिवसन्ति? गौतम। [illegible] रत्नप्रभाया पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्र[illegible] योजन[illegible]

उवरिं एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिट्ठावेग जोयणसय वज्जि
रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिट्ठावेग जोयणसय वज्जि
त्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थण पिसायाण देवाण तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा
भवतीति मक्खाय तेण भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा जहा ठाहिठे भवणवन्नओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरू
वा, एत्थण पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण
बहवे पिसाया परिवसंति महिड्ढिया जहा ठाहिया जाव विहरंति , काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाय
इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया जाव विहरंति । कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण पि
सायाण देवाण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति ? गो० ! जंबूद्दीवे २
मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिं
एग जोयणसय उग्गाहित्ता हिट्ठावेग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थण दाहिणिल्लाण

---

पर्वेक योजनशत वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेषु पिशाचानां देवानां तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथोघको भवनवर्णक तथा भणितव्या यावत्प्रतिरूपा यत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभाग, तत्र बहवः पिशाचाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथौधिका यावद्विहरन्ति कालमहाकालौ चात्र द्वौ पिशाचेन्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसत , महर्द्धिकौ महाद्युतिकौ यावद्विहरत । क्व भदन्त ! दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! दाक्षिणात्या पिशाचा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्यैक योजनशतमवगाह्य अधस्ताच्चैक योजनशत वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेषु दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, ते णं भवणा जहा ओहिओ भवणवण्णओ तहेव भाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थ णं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति काले यत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति महिड्ढि० जाव पभासेमाणे से णं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा नगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। उत्तरिल्लाणं पुच्छा गो०। जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंपि नवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण महाकाले यत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति जाव विहरति एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणंपि

---

तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीति समाख्यातम्। ते भौमेयकाः ... प्रतिरूपा एव दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति ... तिर्यगसंख्येयानां भौमेयनगरावासशतसहस्राणां चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षदेवसाहस्रीणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तराणां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरति। औत्तराहाणां पृच्छा गौतम! यथैव दाक्षिणात्यानां वक्तव्यता तथौत्तराहाणामपि नवरं मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरस्यां महाकालोऽत्र पिशाचेन्द्रः पिशाचराजा परिवसति यावद्विहरति एवं यथा पिशा-

जाव गंधव्वाणं नवरं इवेसु नाणत्तं भाणियव्वं इमेणंवि विहिणा भूयाणं सुरूवपडिरूवा जक्खाणं पुण्णभद्द माणिभद्द रक्खसाणं भीममहाभीमा किन्नराणं किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोर गाणं अइकायमहाकाया गंधव्वाणं गीतरइगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालयमहाकाले सुरूवपडि रूयपुण्णभद्दे य । अमरवइमाणिभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिणं भंते ! अणवन्नियाणं देवाणं ठा णा प०, कहिणं भंत ! अणवन्नियादेवा परिवसति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिठायएग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा नगरा वाससयसहस्सा हवतीतिमक्खायं तेणं जाव पडिरूवा

---

णामा तथा भूतानामपि यावद्गन्धर्वाणां नवरमिन्द्रेषु नानात्वं भणितव्यमनेन विधिना भूतानां सुरूपप्रतिरूपौ, यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ, रक्षसां भीममहाभीमौ किन्नराणां किन्नरकिम्पुरुषौ किम्पुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणामतिकायमहाकायौ, गन्धर्वाणां गीतरतिगीतयशसौ यावद्विहरत । कालश्चमहाकालः सुरूपप्रतिरूपपूर्णभद्राश्च । अमरपतिर्माणिभद्रो भीमस्तथामहाभीमः ॥१॥ किन्नरकिम्पुरुषौखलु सत्पुरुषःखलु तथामहापुरुषः । अतिकायमहाकायौ गीतरतिश्चैवगीतयशाः ॥ २ ॥ विहरति । क्व भदन्त ! अणपर्णिकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! अणपर्णिका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथ्व्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपरि अधस्तात् च योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र अणपर्णिकानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि नगरावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । ते च यावत्प्रतिरूपाः अत्राणपर्णिकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येय भागे अत्राणपर्णिका देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथा पिशाचा यावद्विह

पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा जहा ठाणपदे भवणवण्णओ तहेव जाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थ णं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा ठाणपदे जाव विहरंति काले एत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति महिड्ढि० जाव पभासेमाणे, से णं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणं य देवीणं य आहेवच्चं जाव विहरति। उत्तरिल्लाणं पुच्छा गो०! जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंपि नवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं महाकाले एत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति जाव विहरति एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणंपि

---

[illegible] भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीति समाख्यातम्। ते भौमेयकाः (नगराः) [illegible] या [illegible] पर्याप्तापर्याप्तानां पिशाचानां देवानां [illegible] स्थानानि [illegible] लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवो दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति, [illegible] असंख्येयानां भौमेयनगरावासशतसहस्राणां चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसाहस्रीणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तराणां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति। औत्तराहाणां पृच्छा गौतम! यथैव दाक्षिणात्यानां वक्तव्यता तथैवौत्तराहाणामपि नवरं मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतो महाकालोऽत्र पिशाचेन्द्रः पिशाचराजा परिवसति यावद्विहरति एवं यथा पिशा-

जाव गधव्वाण नवर इवेसु नाणत्तं जाणियव्वं इमेणपि विहिणा भूयाण सुरूवपडिरूवा जक्खाण पुण्णभद्दे माणिभद्दे रक्खसाण भीममहाभीमा किन्नराण किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाण सप्पुरिसमहापुरिसा महोरगाण अइकायमहाकाया गधव्वाण गीतरइगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालयमहाकाले सुरूवपडि रूवपुण्णभद्दे य । अमरवइमाणभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहापुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिण भंते । अणवन्नियाण देवाण ठाणा प०, कहिण भंत । अणवन्निया देवा परिवसति गो० । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिठायएग जोयणसय वज्जित्ता मज्झे अठसु जोयणसएसु अत्थ ण अणवन्नियाण देवाण तिरियमसखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवतीतिमक्खाय तेण जाव पडिरूवा

---

वाना तथा भूतानामपि यावद्गन्धर्वाणां नवरमिन्द्रेषु नामात्व भवितव्यमनेन विधिना भूतानां सुरूपप्रतिरूपौ, यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ, रक्षसां भीममहाभीमौ किन्नराणां किन्नरकिम्पुरुषौ किम्पुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणामतिकायमहाकायौ, गन्धर्वाणां गीतरतिगीतयशसौ यावद्विहरत । कालमहाकालः सुरूपप्रतिरूपपूर्णभद्राव । अमरपतिमाणिभद्रौ भीमस्तथामहाभीमः ॥१॥ किन्नरकिम्पुरुषौखलु सत्पुरुषः खलुतथामहापुरुष । अतिकायमहाकायौ गीतरतिश्चैवगीतयशा ॥ २ ॥ विहरन्त । क्व भदन्त । अणपर्णिकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । अणपर्णिका देवा परिवसन्ति ? गौतम । अस्या रत्नप्रभायाः पृथ्व्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपरि अधश्चैक योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्राणपर्णिकानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । ते च यावत्प्रतिरूपाः अत्राणपर्णिकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासङ्ख्येय भागं तत्राणपर्णिका देवा परिवसन्ति महर्द्धिका यथा पिशाचा यावद्विह

एत्थण अणवन्निया देवाण ठाणा प०, उववाएणलो० समुग्घाएणलो० सठाणेणलो० तत्थण अणवन्निया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इत्थ दुवे अणवन्निदा अणवन्नि यकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया जहा कालमहाकाला एव जहा कालमहाकालाण दोण्हपि दाहिणि ल्लाण उत्तरिल्लाणय भणिया तहा सन्निहियसामाणाणपि भाणियव्वा सगहणि गाहा—अणवन्नियपणवन्निय इसियाइयभूयवाइएचेव । कंदियमहाकंदिय कुहंडपयगदेवाय इमे इंदा—सन्निहियासामाणा धाइविधाएय इसीयइसिवाले ईस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवच्छविसालेय ॥१॥ हासेहासरईविय सेएयतहाभवेतहामहासेए पयगेप यगवइविय नेयव्वा आणुपुव्वीए ॥२॥ कहिण भंते ! जोइसियाण देवाण पज्जत्ताण२ ठाणा प० ? कहिण भंते ! जोइसिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउ इ जोयणसए उड्ढ उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसय बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थण जोइसियाणं

---

रन्ति सन्निहितसमानौ यावत् [illegible] परिवसतो नवरं [illegible] यथा कालमहाकालौ एवं यथा कालमहाकालयोर्देवयो [illegible] त्रयास्तयो [illegible] ( [illegible] ) भणिता तथा सन्निहितसामानिकयोरपि भणितव्यौ [illegible] वृत्तिकारौ चे [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] प्रकाशति [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] एतवपदीपिच ज्ञातव्या आनुपूर्व्या ॥ २ ॥ क भदन्त ! ज्योति [illegible] स्थानानि प्रज्ञप्तानि क भदन्त ! ज्योतिष्का देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसम रमणीयाद् भूमिभागात् [illegible] सुत्पत्य दशोत्तरं योजनशत बाहल्यं तिर्यगसंख्येयं ज्योतिश्चविषयमत्र ज्योतिष्काणां देवानां [illegible]

देवाण तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवतीतिमक्खाय तेण विमाणा अद्धकविट्ठग संठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमूसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुय विजयवेजयंतीपडागाछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगनतलमणुलिहमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बाहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं जोइसियाण पज्जत्ताऽपज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति तंजहा—बहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्छराराहूधूमकेउबुहाअंगारगा तत्ततवणिज्जकणगवण्णा जे गहा जोइसंमि चारं चरंति केउयगतिरइया अट्ठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा नाणासंठाणसंठियाओ य पंचवण्णाओ ताराओ ठियलेस्साचारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेय णामंकपागडि

---

सख्यायाम भवनावाससहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् तानि विमानानि अर्द्धकपित्थकसंस्थानसंस्थितानि सर्वस्फाटिकमयानि अभ्युद्गतोत्सृतप्रभासितानि विविधमणिकनकरत्नभक्तिचित्राणि वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलितानि तुङ्गानि गगनतलमनुलिखच्छिराणि जालान्तररत्नपञ्जरोन्मीलितमिव मणिकनकस्तूपिकानि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि नानामणिमयदामालंकृतानि अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्तटानि सुखस्पर्शानि सश्रीकरूपाणि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र ज्योतिष्काणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येय भागे तत्र बहवो ज्योतिष्कदेवाः परिवसन्ति तद्यथा-बृहस्पतय चन्द्राः सूर्याः शुक्राः शनैश्चरा राहव केतवो बुधा अङ्गारकास्तप्ततपनीयकनकवर्णा ये ग्रहा ज्योतिश्चक्रे चारं चरन्ति केतवो गतिरतिका अष्टाविंशतिविधा

वविधमउडा महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेण तत्थ साण२ विमाणावाससयसहस्साण साण२ सामाणियसाहस्सीण साण २ अग्गमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिवइण साण२ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जोइसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा ते ण तत्थ साण २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साण चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जोइसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति । कहिण भंते ! वेमाणियाण देवाण पज्जत्ता२ ण ठाणा प० ? कहिण भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम

(ज्योतिष्कविमानानां [illegible]) मस्तका देवानां [illegible] (स्वस्वप्रदेशेऽपि) प्रशस्तलेश्या [illegible] प्रत्येक नानाकुसुमरचितमुकुटा महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त [illegible] ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां ज्योतिष्काणां देवानां देवीनामाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं [illegible] विहरन्ति. सूर्याचन्द्रमसौ चात्र द्वौ ज्योतिष्केन्द्रौ ज्योतिष्कराजौ [illegible] ते तत्र स्वेषां २ ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणां चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षदेवसहस्राणां ज्योतिष्काणामन्येषां बहूनां देवानां देवीनामाधिपत्यं यावद्विहरतः । क भदन्त ! वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क भदन्त ! वैमानिका

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाण बहूइ जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा-
इं बहूइं जोयणकोडीओ बहूइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थण सोहम्मीसाणसणंकु-
मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु तत्थ एत्थण वेमाणि-
याण देवाण चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइंचसहस्सा तेवीस विमाणा भवतीतिमक्खाय तेण
विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा
सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थण वेमाणियाण देवाण पज्जत्ताप-
ज्जत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह-
म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया
देवा तेण मिगमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिल

---

देवा परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि ब-
हूनि योजनसहस्राणि बह्वी योजनकोटीः बह्वी योजनकोटीकोटीः ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारानत-
प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरेषु अत्रैतस्मिन् वैमानिकानां देवानां चतुरशीतिर्विमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि भव-
न्तीति समाख्यातम् तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कण्टक-
च्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ-
प्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येये भागे तत्र बहवो वैमानिका देवाः परिवसन्ति तद्यथा-सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रसहस्रारान-

अचिंधमढग्गा महिड्डिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ विमाणावाससयसहस्साण साण२ सामाणि
यसाहस्सीणं साण २ अग्गमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणि
याहिवईणं साणं२ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जोइसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव
विहरंति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति महिड्डिया जाव पभासेमाणा ते
णं तत्थ साण २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साण चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्ह अग्गमहिसीण
सपरिवाराण तिण्ह परिसाण सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिवईण सोलसण्ह आयरक्खदेवसाहस्सी
णं जोइसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति । कहिण भंते! वेमाणियाण देवाण पज्जत्ता२
ण ठाणा प० ? कहिण भंते! वेमाणिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमर

---

(बहुविधप्रतिरूपका अभिलिखिता लोकमहिताः) महत्या देवगत्या भासमाना उद्योतयन्ता वा (व्याप्नुवन्तोऽपि), महर्द्धिकेषुपा
चारिणो ऽविश्रामभक्तसपतिता: प्रत्येक नानाकुसुमग्रथितविशुमुकुटा महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त [illegible] विमानावासशतसहस्राणां
णा २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां [illegible] अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मर
क्षदेवसहस्राणां अन्येषां बहूनां ज्योतिष्काणां देवानां [illegible] यावद्विहरन्ति सूर्याचन्द्रमसौ चात्र द्वौ ज्योतिष्केन्द्रौ
ज्योतिषराजानौ परि[illegible] [illegible] यावत्प्रभासयन्तौ तौ तत्र स्वेषां २ ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणां चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतु
सृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षदेवसहस्राणां ज्योतिष्काणामन्येषां
बहूनां देवानां देवीनामाधिपत्यं यावद्विहरतः । ह भदन्त । वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ह भदन्त । वैमानिका

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्तताराख्वाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्सा-
इं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं सोहम्मीसाणसणंकु-
मारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु तत्थ एत्थ णं वेमाणि-
याणं देवाणं चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं ते णं
विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा
ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताप-
ज्जत्ताणं ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह-
म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया
देवा तेणं मिगमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिल

---

देवा परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद् भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि ब-
हूनि योजनसहस्राणि बह्व्यो योजनकोट्यो बह्व्यो योजनकोटीकोट्य ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकमहाशुक्रसहस्रारानत-
प्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरेषु अत्रैतस्मिन् वैमानिकानां देवानां चतुरशीतिर्विमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि भव-
न्तीति समाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कङ्कट-
च्छायानि सप्रभाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ-
प्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येये भागे अत्र बहवो वैमानिका देवाः परिवसन्ति तद्यथा-सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकमहाशुक्रसहस्रारान-

वरमउडतिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया सुहवण्णगंधफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्डिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्टगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा ते णं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं

---

[illegible] अनुत्तरोपपातिका इत्यर्थः [illegible] विचित्र [illegible] वरकुण्डलोद्योतिताननाः मुकुटदीप्तशिरस्काः रक्ताभाः पद्मपक्ष्मगौराः [illegible] उत्तमवैक्रियिकाः प्रवरवस्त्र [illegible] महाद्युतिका महायशसः [illegible] हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्ग [illegible] विचित्रमालामौलिकल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना भासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्ध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दश दिश उद्योतयन्तः प्रभासयन्त ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ त्रायस्त्रिंशकानां स्वेषां २ लोकपालानां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २

२ असुरियाण साण २ असुरियाहिवईण साण २ आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण वेमाणियाण
देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा
महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणा विह
रंति । कहिण भंते ! सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिण भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ?
गो० ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभा
गाओ उड्ढ चंदिमसूरियगहगणनक्खत्तताराण बहूणि जोयणसयाइ बहूणि जोयणसहस्साइ बहूणि जोयण
सयसहस्साइ बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर उप्पइत्ता एत्थ ण सोहम्मे ना
म कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणवित्थिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ना

चमीकानां स्वया २ चमीकाधिपतीनां स्वया २ आत्मरक्षदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां वैमानिकानां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्त्ति
त्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यं कुर्वन्तः पालयन्तो विहरन्ति महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवा
दितरवेण दिव्यान् भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति । हे भदन्त ! सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि हे भदन्त ! सौधर्म
कदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतः अस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्र
हगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बहूनि योजनशतसहस्राणि बह्वीः योजनकोटीः बह्वीः योजनकोटीकोटी
रूर्ध्वं दूरमुत्पत्य अत्र सौधर्मो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतः उदीचीनदक्षिणविस्तीर्णः अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितः अर्चिमालाभासराशिवर्णाभः असं
ख्येया योजनकोटीकोट्यः आयामविष्कम्भाभ्यामसंख्येया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेपेण सर्वरत्नमयः अच्छः यावत्प्रतिरूपः तत्र

जे असंखेज्जाइं जोयणकोडीओ असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयण
कोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तत्थ णं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावास
सयसहस्सा हवंतीति मक्खायं ते णं विमाणा सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा तेसि णं विमाणाणं बहु
मज्झदेसभाए पंच वडेंसया पन्नत्ता, तं०—असोगवडेंसए सत्तवन्नवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे सत्थ
सोहम्मवडेंसए ते णं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थ णं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं
ठाणा प०, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभा
सेमाणा ते णं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी
णं एवं जहेव ठाणपए तहेव एतेसिंपि जाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोह
म्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । सक्के इत्थ देविंदे देव,

सौधर्मदेवानां द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि [illegible] प्रतिरूपाणि तथा वि
मानानां बहुमध्यदेशभागे पंचावतंसकाः प्रज्ञप्ताः–अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकः चंपकावतंसकः चूतावतंसको मध्ये तत्र सौधर्मावतंसकस्ते
[illegible] सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपाः [illegible] पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र
बहवः सौधर्मदेवाः परिवसंति महर्द्धिका यावत्प्रभासमानास्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां स्वेषां २ सामा
निकसहस्राणामेवं [illegible] तथैतेषामपि ज्ञातव्यं यावदात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिनां देवानां देवीनां
चाधिपत्यं यावद्विहरंति । शक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति वज्रपाणिः पुरंदरः शतक्रतुः सहस्राक्षो मघवा पाकशासनो दक्षिणार्द्धलोकाधि

राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा
णावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल
कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासमाणे से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरि
वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह
स्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे
जाव विहरति। कहिणं भंते। ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहिणं भंते। ईसाणगदेवा परिव
संति ? गो० । जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भू
मिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव

---

पतिः द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राधिपतिः ऐरावणवाहनः सुरेन्द्रोऽरजोम्बरवस्त्रधरः आलगितमालमुकुटो नवहेमचारुचित्रचञ्चलकुण्डलविलिख्य
मानगण्डो महर्द्धिको यावत्प्रभासयन् स तत्र द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चतुरशीत्याः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतस्त्रायस्त्रिंश
कदेवानां चतुर्णां लोकपालानां अष्टानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशी
त्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं कुर्वन् स्वयं यावद्विहरति। क्व भदन्त। ईशानदेवानां प
र्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ईशानदेवाः परिवसन्ति ? गौतम। जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृ
थिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदुत्पत्याऽवेशानं

उप्पिं हुसा एत्थणं ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसगा पन्नत्ता, अंकवडिंसए फलिहवडिंसए रयणवडिंसए जाव सरूववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडिंसए, तेणं वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सो हम्मगदेवाणं जाव विहरंति, ईसाणे इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलो गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणि

---

नाम कल्पं प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायत उदग्दक्षिणविस्तीर्ण एवं यथा सौधर्मो यावत्प्रतिरूपः तत्रेशानकानां देवानां अष्टाविंशतिर्विमानावास शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातं तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, तेषां बहुमध्यदेशभागे पञ्च अवतंसकाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अङ्क अवतंसकः स्फटिकावतंसकः रजतावतंसको जातरूपावतंसको मध्ये ईशानावतंसकः ते अवतंसकाः सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपाः अत्र ईशानानां पर्याप्तापर्याप्ता नां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे शेषं यथा सौधर्मकदेवानां यावद्विहरन्ति। ईशानोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति शूल पाणिर्वृषभवाहन उत्तरार्द्धलोकाधिपतिः अष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राधिपतिः अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य ([illegible] पि) अष्टाविंशतेर्विमानावासशतसहस्राणामशीतेः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतः त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां च

याहिवईण चउण्हं असीतीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिणं भंते ! सणंकुमारदेवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सणंकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सणंकुमारे नामं कप्पे पण्णत्ते । पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं ते णं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडिंसगा पण्णत्ता, तंजहा—असोगवडिंसए सत्तवण्णवडिंसए चंपगवडिंसए चूयवडिं

---

द्वानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतसृणां चतुरशीतिसामानिकसहस्राणां अन्येषां च बहूनां ईशानकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्तित्वं कुर्वन्नविहरति । हे भदन्त ! सनत्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? हे भदन्त ! सनत्कुमारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सौधर्मस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बह्वीः योजनकोटीः बह्वीः योजनकोटाकोटीः ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्य सनत्कुमारं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुदग्दक्षिणविस्तीर्णं यथा सौधर्मः कल्पो यावत्प्रतिरूपः तत्र सनत्कुमाराणां देवानां द्वादशविमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां मध्ये बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसकः चूतावतंसको मध्ये तत्र सनत्कुमारावतंसकः तत्रावतंसकाः सर्वरत्नमयाः यावत्प्रतिरूपाः सपत्न

सप्पइस्सा एत्थणं ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसगा पन्नत्ता, अंकवडिंसए फलिहवडिंसए रयणवडिंसए जाव सरूववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडिंसए, तेणं वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सो हम्मगदेवाणं जाव विहरंति, ईसाणे इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलो गाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासमाणे से णं तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणि

---

नाम कल्पः प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायत उदग्दक्षिणविस्तीर्ण एवं यथा सौधर्मे [illegible] विमानावास [illegible] भवन्तीत्याख्यातं तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि [illegible] मध्ये [illegible] प्रज्ञप्तास्तद्यथा–अङ्क [illegible] सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्र [illegible] स्थाना [illegible] यावद्विहरन्ति । ईशानश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति शूल पाणिर्वृषभवाहन उत्तरार्द्धलोकाधिपतिः [illegible] शेषं यथा शक्रस्य (यावत्प्रभासमानः सत्रा [illegible]) [illegible] सामानिकसहस्राणां अशीतेः [illegible] चतुर्णां लोकपालानां च

दयफसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरंति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवर वत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अठराइ विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय साहस्सीण चउराइ सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भंत । बंभलोगदेवाण पज्ज त्ता २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंत । बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० । सणकुमारमाहिंदाण कप्पा ण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणाइ जाव उप्पइत्ता एत्थण बंभलोए नाम कप्पे पाईणपडीणा यते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचदसठाणसठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेस जहा सणकुमा राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडसगा जहा सोहम्मस्स वडसया नवर मज्झे इत्थ बंभलोयव डसए एत्थण बंभलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरति। बंभे इत्थ देविंद देवराया परिवस इ अरयअरयत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउराइ विमाणावाससयसहस्साण सठीए

सनत्कुमारे कल्प यावद्विहरति नवरमष्टाना विमानावासशतसहस्राणा सप्तति सामानिकसहस्राणा चतुर्णा ( चतुर्गुणाना ) सप्तत्यात्मरक्षकदेवसह स्राणा ( अशीत्यधिकशतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थ ) यावद्विहरति । हे भदन्त । ब्रह्मलोकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, हे भदन्त । ब्रह्मलोका देवा परिवसन्ति ? गौतम । सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावदुत्पत्यात्र ब्रह्मलोक नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तार्ण प्रतिपूर्णचन्द्रसस्थानसस्थित अर्चिर्मालाभाराशिप्रभ अवशेष यथा सनत्कुमाराणा नव र चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतसका यथा सौधर्मस्यावतसका नवर मध्यत्र ब्रह्मलोकावतसकोत्र ब्रह्मलोकाना देवाना स्थानानि प्र ज्ञप्तानि शेष तथैव यावद्विहरन्ति ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधर एव यथा सनत्कुमारे यावद्विहरति नवर चतुर्णा वि

सए मज्झे तत्थ सणकुमारवडिंसए तेण वडिंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थण सणकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सणकुमारा देवा परिवसंति महिड्डिया जाव पभासमाणा विहरंति नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि , सणकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे सेस जहा सक्कस्स सेण तत्थ बारसण्हं विमाणावाससयसहस्साण बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं नवरं चउण्हं बावत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भंते ! माहिंदाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! माहिंदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव बहुगाइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थण माहिंदे नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए जाव एव जहेव सणकुमारे, नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा वडिंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिंद

---

कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि [illegible] सनत्कुमाराश्च देवाः परिवसन्ति यावद्विहरन्ति नवरमग्रमहिष्यो न सन्ति, सनत्कुमारोऽत्र [illegible] परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य स तत्र द्वादशानां विमानावाससहस्राणां [illegible] सामानिकसहस्राणां शेषं यथा शक्रस्याग्रमहिषीवर्जं नवरं चतसृणां द्विसप्ततीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । [illegible] माहेन्द्राणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि [illegible] भदन्त । माहेन्द्रका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ईशानकल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावद्बह्वीः योजनकोटीकोटीः ऊर्ध्वं दूरमुत्प्लुत्य तत्र माहेन्द्रो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतः यावदेवं यथैव सनत्कुमारः नवरमष्टौ विमानावासशतसहस्राणि [illegible] यथा ईशाने नवरं मध्ये तत्र [illegible]

वडसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरंति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबर वत्थधरे एवं जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अट्ठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरीए सामाणिय साहस्सीण चउण्ह सत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भंते ! बंभलोगदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंत ! बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणकुमारमाहिंदाण कप्पाण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि बहूइ जोयणाइ जाव उप्पइत्ता एत्थण बंभलोए नाम कप्पे पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेस जहा सणकुमाराण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडंसगा जहा सोहम्मस्स वडंसया नवर मज्झे इत्थ बंभलोयवडंसए एत्थण बंभलोगाण देवाण ठाणा प०, सेस तहेव जाव विहरंति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरंति नवर चउण्ह विमाणावाससयसहस्साण सट्ठीए

नत्कुमारे कल्प यावद्विहरति नवरमष्टानां विमानावासशतसहस्राणां सप्तति सामानिकसहस्राणां चतुर्णां ( चतुर्गुणाना ) सप्तत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां ( सप्तत्यधिकशतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थः ) यावद्विहरति । क भदन्त ! ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क भदन्त ! ब्रह्मलोका देवा परिवसन्ति ? गौतम ! सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावदुत्पत्यात्र ब्रह्मलोक नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्ण प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थित अर्चिर्मालाभाराशिप्रभ अवशेष यथा सनत्कुमाराणां नवर चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा सौधर्मस्यावतंसका नवर मध्ये ब्रह्मलोकावतंसकोऽत्र ब्रह्मलोकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि शेष तथैव यावद्विहरन्ति ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधर एव यथा सनत्कुमारे यावद्विहरति नवर चतुर्णां वि

सामाणियसाहस्सीण चउण्हयसठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण जाव विहरइ । कहिण भंते ! लंतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता, कहिण भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खिं सपडिदिसि बहूइं जोयणसयाइं जाव बहुइंओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थण लंतए नाम कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं पन्नासाविमाणावाससहस्सा हवंतीतिमक्खाय, वडेंसगा जहा ईसाणवडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ लंतगवडेंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावाससहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह पन्नासाण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिंच बहूण जाव विहरइ । कहिण भंते ! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! महासुक्का,

---

सामावासशतसहस्राणां सप्ततिः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशदात्मरक्षकसहस्राणां (चत्वारिंशदधिकसप्तशतसहस्राणां) अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । हे भदन्त ! लान्तकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? हे भदन्त ! लान्तकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनशतानि यावद् बहुः योजनकोटाकोटीः ऊर्ध्वं दूरम् उत्पत्य अत्र लान्तकं नाम कल्पः प्राचीनप्रतीचीनायतः यथा ब्रह्मलोकः नवरं पञ्चाशद्विमानावाससहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्, अवतंसकाः यथा ईशानावतंसका नवरं मध्ये लान्तकावतंसको देवा तथैव यावद्विहरन्ति, लान्तकोऽत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा सनत्कुमारः नवरं पञ्चाशद्विमानावासशतसहस्राणां पञ्चाशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां (लक्षद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणां) अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । हे भदन्त ! महाशुक्राणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? हे भदन्त ! महाशुक्रा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बाहुल्य

वा परिवसति ? गोयमा ! लतस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण महासुक्के नाम कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बम्भलोए नवर चत्तालीस विमाणावाससहस्सा हवतीति मक्खाय, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवर मज्झे तत्थ महासुक्कावडेंसए जाव विहरति, सहस्सा हवतीति मक्खाय, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवर मज्झे तत्थ महासुक्कावडेंसए जाव विह रइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणकुमारे नवर चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीण चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह चत्तालीसाण आयरक्खदेवसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण भंते ! सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण भंते ! सहस्सारा देवा परिवसति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपडीणायवे जहा बम्भलोए नवर छविमाणावाससहस्सा हवतीति मक्खाय देवा तहेव वडेंसगा जहा ईसाणस्स वडेंसगा नवर मज्झे इत्थ सहस्सारवडेंसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

---

त्यात्र महाशुक्र नाम कल्प प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्ण यथा ब्रह्मलोको नवर चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्ती ति मयाख्यातमवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवर मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसको यावद्विहरति, महाशुक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो नवर चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चत्वारिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां चत्वारिंशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! सहस्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त सहस्रारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सपक्ष सप्रति दिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्रार नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्ण यथा ब्रह्मलोको नवर षड्विमानावासशतसहस्राणि भ वन्तीति मयाख्यात देवास्तथैवावतंसका यथा ईशानस्यावतंसका नवर मध्ये पत्र सहस्रारावतंसको यावद्विहरन्ति सहस्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

सामाणियसाहस्सीण चउण्हयसठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण जाव विहरइ । कहिण भंते । लंतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, कहिण भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं जाव बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थ णं लंतए नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं पन्नासविमाणा वाससहस्सा हवंतीतिमक्खायं, वडेंसगा जहा ईसाणवडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ लंतगवडेंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावाससहस्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउण्ह पन्नासाण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च बहूण जाव विहरइ । कहिण भंते ! महासुक्काण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! महासुक्का दे-

---

सामाविमानावाससहस्राणां चतुः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) [illegible] अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । हे भदन्त ! लान्तकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि [illegible] लान्तकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनशतानि [illegible] प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतः यथा ब्रह्मलोके नवरं पञ्चाशद्विमानावाससहस्राणि भवन्तीति समाख्यातम्, अवतंसका यथा ईशानावतंसका नवरं मध्ये लान्तकावतंसको देवा तथैव यावद्विहरन्ति, लान्तकेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा सनत्कुमारे नवरं पञ्चाशद्विमानावाससहस्राणां पञ्चाशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां ([illegible]) अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । हे भदन्त ! महाशुक्राणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? हे भदन्त ! महाशुक्रा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावद्बहु-

वा परिवसंति ? गोयमा ! लंतस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं महासुक्के नाम कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणवित्थिन्ने जहा बंभलोए नवरं चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवरं मज्झे एत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विहरंति, महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरति । कहिणं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । कहिणं भंते ! सहस्सारा देवा परिवसंति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं छविमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं देवा तहेव वडेंसगा जहा ईसाणस्स वडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ सहस्सारवडेंसए जाव विहरंति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकु

---

त्वात महाशुक्र नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णः यथा ब्रह्मलोको नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातमवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसको यावद्विहरति महाशुक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चत्वारिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां चत्वारिंशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! सहस्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त सहस्रारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्रार नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णो यथा ब्रह्मलोको नवरं षड्विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यात देवावतंसका यथा ईशानावतंसका नवरं मध्ये अत्र सहस्रारावतंसको यावद्विहरन्ति सहस्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

मारे नवरं छण्ह विमाणावाससहस्साण तीसाए सामाणियसाहस्सीण चउण्हय तीसाण आयरक्खदेवसाह
स्सीण जाव आहेवच्चं कारेमाणे विहरति । कहिण भंते ! आणयपाणयदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प०
कहिण भंते ! आणयपाणयदेवा परिवसति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपडिदि
सि जाव उप्पइत्ता एत्थण आणयपाणयनामेण दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छि
न्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिप्पभा सेसं जहा सणंकुमारे जाव पडिरूवा तत्थणं आण
यपाणयदेवाण चत्तारि विमाणावाससया हवंतीति मक्खाय जाव पडिरूवा, वडेंसगा जहा सोहम्मे नवर
मज्झे पाणयवडेंसए तेण वडेंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थण आणयपाणयदेवाणं पज्ज
त्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे आणयपाणयदेवा परिवसति

---

॰ परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं षण्णां विमानावासशतसहस्राणां त्रिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां त्रिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणां यावद्विहर न्तं कुर्वन्विहरति । ॥ क्व ॰ । आनतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति? गौतम ! सहस्रारस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्र आनतप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतौ उदग्दक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धच न्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभासराशिप्रभौ शेषं यथा सनत्कुमारे यावत्प्रतिरूपौ तत्रानतप्राणतदेवानां चत्वारि विमानावासशतानि भ वन्तीति आख्यातं यावत्प्रतिरूपाणि अवतंसका यथा सौधर्मे नवरं मध्ये प्राणतावतंसकः ते चावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा अत्रा नतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहव आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका याव त्प्रभासयन्तः ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतानां यावद्विहरन्ति प्राणतश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं चतुर्णां वि

महिड्डिया जाव पभासेमाणा तेण तत्थ साण२ विमाणावाससयाण जाव विहरंति पाणए इत्थ देविंदे देवरा

या परिवसति जहा सणकुमारे णवर चउण्ह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीण असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसि च बहूण जाव विहराति । कहिण भंते ! आरणच्चुयाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता । कहिण भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाणं उप्पि सपक्खि सपडिदिसि एत्थण आरणाच्चुयानाम दुवे कप्पा पण्णत्ता पाईणपडीणायगा उदीणदाहिणवि च्छिन्ना अद्धचंदसठाणसठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा असखिज्जाइं जोयणकोडाकोडीइं आयामवि क्खंभेण असखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेण सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडि रूवा एत्थण आरणच्चुयाण देवाण तिन्नि विमाणावाससया हवतीति मक्खाय, तेण विमाणा सव्वरयणाम

---

वाससहस्रतामां विंशति सामानिकसहस्राणां अशीति आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! आरणच्युतानां दे मानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? भदन्त ! आरणाच्युतका देवा परिवसन्ति ? गौतम ! आनतप्राणतयोः कल्पयोरुपरि सपक्षं सप्र तिदिक् अत्रान्तरे आरणाच्युतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतावुत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिमालीभासराशिप्रभौ असंख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविष्कम्भाभ्यां असंख्येया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेपेण सर्वरत्नमयौ अच्छौ श्लक्ष्णौ लष्टौ घृष्टौ मृष्टौ नीरजसौ निर्मलौ निष्पङ्कौ निष्कङ्कटच्छायौ सप्रभौ सश्रीकौ सोद्योतौ प्रासादीयौ दर्शनीयौ अभिरूपौ प्रतिरूपौ अत्रारणच्युतानां देवानां त्रीणि विमाना वाससहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातं । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पंका

या सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडेंसया पण्णत्ता, तंजहा असोगवडेंसए सत्तिवण्णवडेंसए चंपगवडेंसए चूयवडेंसए मज्झे इत्थ सोहम्मवडेंसए, ते णं वडेंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थ णं आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ। जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाणं दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति, बत्तीसट्ठावीसा बारसट्ठचउरोसयसहस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि। सत्तविमाणसयाइं चउसुवि एएसु कप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंगहणीगाहा—चउरासीइं असीति बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी य।

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] चत्तारि [illegible] ॥

पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरक्खा चउगुणा । कहिण भंते ! हिट्ठिमगेविज्ज
गदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आ
रणच्चुयाण कप्पाण उप्पिं जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थण हेट्ठिमगेविज्जगाण देवाण ततो गेवेज्जविमाण
पत्थडा पन्नत्ता, पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासि
वन्नाभा सेसं जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा, तत्थण हेट्ठिमगेविज्जगाण देवाण एक्कारसुत्तरे विमाणावास
सए हवतीति मक्खायं तेण विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थण हेट्ठिमगेविज्जगाण देवाण
पज्जत्ताण २ ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परि
वसंति सव्वे सममहिड्ढीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अ
णिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा नाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! कहिण भंते ! मज्झिमगाण

---

२ ॥ सामानिकसंग्रहगाथा—चतुरशीतिरशीतिर्द्वासप्ततिः सप्ततिश्चषष्टिश्च । पञ्चाशच्चत्वारिंशत् त्रिंशद्विंशद्दशसहस्राणि ॥ १ ॥ एते चैव चतुर्गुणा आत्मरक्षाः । क्व भदन्त ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! अधस्तनग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! आरणाच्युतकल्पयोरुपरि सपक्ष सप्रतिदिक् यावद्दूरमुत्पत्यात्र अधस्तनग्रैवेयकाणां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि उत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थितानि अर्चिर्मालाभासराशिवर्णाभानि शेषं यथा ब्रह्मलोके यावत्प्रतिरूपाणि, तत्राधस्तनग्रैवेयकदेवानां एकादशोत्तरं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्राधस्तनग्रैवेयकाणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो अधस्तनग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति सर्वे सममहर्द्धिकाः सर्वे सम

गेविज्जगदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाण उप्पि सपक्खि सपडिदिसि जाव उप्पइत्ता एत्थण मज्झिमगेविज्जगदेवाण सत्तोगेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेण विमाणा जाव पडिरूवा एत्थण मज्झिमगेवेज्जाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थण बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाण उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेवेज्जगाण देवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणाय सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवरं

सुविताः सर्वे समप्रभाः सर्वे समद्युतयः सर्वे महानुभावा महायशसः अनिन्द्रा अप्रेष्या अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामकाः ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । स भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? [illegible] भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्य [illegible] मध्यमग्रैवेयकाणां [illegible] प्रस्तटाः प्रज्ञप्ताः प्राचीनप्रतीचीनायताः [illegible] यथा अधस्तनग्रैवेयकाणां नवरं सप्तोत्तरं विमानावासशतं भवतीत्याख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र मध्यमग्रैवेयकानां [illegible] स्थानानि [illegible] लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! स भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्त० स्थानानि प्रज्ञप्तानि स भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य अत्रोपरिमग्रैवेयकाणां देवानां त्रैवेयकप्रस्तटाः प्रज्ञप्ताः प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथाधस्तनग्रैवेयका

एगे विमाणावाससए हवतीति मक्खाए, सेस तहेव जाणियव्व जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा पण्णत्ता
समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥
कहिण भंते ! अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! अणुत्तरोववाइया
देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसू
रियगहगणनक्खत्ततारारूवाण बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसहस्साइ बहूइ जोयणसयसहस्साइ बहु
गाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदबंभ
लोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णिय अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए विती
वइत्ता तेय परं दूर गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महा
विमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणामया

---

ना भवर् एक विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम्, शेषं तथैव भणितव्यं यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! एका
दशोत्तरमध-स्तनेषु सप्तोत्तरशतमाध्यमिके । शतमेकमौपरिमिके पञ्चैवानुत्तरविमाना ॥ १ ॥ क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्ताप
र्याप्तानां स्थानानि प्र० ? क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं
चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमा
हेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पा त्रीणि चाष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिक्रम्य (समतिक्रम्य) तेभ्योऽपि परं
दूरं गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धाः पंचसु दिक्षु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमानाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-विजयवैजयन्तजयन्तो

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ ण ठाणा पन्नत्ता । कहि णं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थ णं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं णवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, ते णं विमाणा जाव पडिरूवा एत्थ णं मज्झिमगेवेज्जाणं देवाणं जाव तिसु वि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम ते देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहि णं भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहि णं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थ णं उवरिमगेवेज्जगाणं देवाणं तओ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं

---

पृथिव्याः सर्वे समपक्षाः सर्वे समद्युतयः सर्वे महानुभावाः महायशसः अनिन्द्राः अप्रेष्याः अपुरोहिताः अहमिन्द्रा नामक ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? क्व भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिशं यावदुत्पत्य अत्र मध्यमग्रैवेयकदेवानां [illegible] प्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि यथा अधस्तनग्रैवेयकाणां नवरं [illegible] सप्तोत्तरं विमानावासशतं [illegible]ख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र मध्यमग्रैवेयकानां [illegible] त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? क्व भदन्त ! उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य अत्रोपरिमग्रैवेयकाणां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथाऽधस्तनग्रैवेयका

एगे विमाणावाससए हवतीति मक्खाए, सेस तहेव जाणियव्व जाव अहमिदा नाम ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमेसु सत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिण भंते ! अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाण बहूइ जोयणसयाइ बहूइ जोयणसहस्साइ बहूइ जोयणसयसहस्साइ बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीती वइत्ता तेय पर दूर गता नीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पचदिसि पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तजहा—विजये वेजयते जयते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणामया

---

नां नवरं एक विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् शेषं तथैव भणितव्य यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण । आयुष्मन् । एकादशोत्तरशत-सप्तसु सप्तोत्तरतुमाध्यमिके । शतमेकमौपरिमिके पञ्चैवानुत्तरविमाना ॥ १ ॥ भदन्त । अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्र० ॥ भदन्त । अनुत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति ? गौतम । अस्या रत्नप्रभाया पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रताराकपाणां बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्य सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पा त्रीणि चाष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिव्रज्य (उल्लंघ्य) तेभ्योऽपि परं दूरं गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धाः पञ्चसु दिक्षु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमानाः प्रज्ञप्ता तद्यथा-विजयवैजयन्तजयन्तो

गेविज्जगदेवाण पज्जत्ता २ प ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाण उप्पिं सपक्खि सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्यण मज्झिमगेविज्जगदेवाण सत्तोगेविज्ज गविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हव तीति मक्खाए, तेण विमाणा जाव पडिरूवा एत्यण मज्झिमगेवेज्जाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स असं खेज्जइभागे तत्थण बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नाम देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिण भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पन्नत्ता । कहिण भंते ! उवरिम गेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाण उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेवेज्ज गाण देवाण तउ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणाइ सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाण नवरं

---

पुतिकाः सर्वे समपक्षाः सर्वे समसमाः सर्वे महानुभावाः [illegible] अनिन्द्राः अप्रेष्याः अपुरोहिताः अहमिन्द्रा नामते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । भदन्त ! मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्य अत्र मध्यमग्रैवेयकदेवानां [illegible] प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षि [illegible] अधस्तनग्रैवेयकाणां नवरं [illegible] विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र मध्यमग्रैवे [illegible] यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण । आयुष्मन् । भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम । म ध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य अत्रोपरिमग्रैवेयकाणां देवानां त्रैवेयकप्रस्तटाः प्रज्ञप्ताः प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथाधस्तनग्रैवेयका नां

बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते, ततो अणंतरं च णं माताए २ पए सपरिहाणीए २ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमंतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स असंखेज्जइभागे बाहल्ले ण पन्नत्ता, इसीपब्भाराएणं पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पन्नत्ता, इसीतिवा इसीपब्भाराइवा तणूतिवा लोय तणुयरीतिवा सिद्धीतिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गेतिवा लोयग्गथूभियातिवा लोय पडिबुज्झणाइवा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा इवा। इसीपब्भाराण पुढवी सेता संखदलविमलसोत्थिय मुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सव्वज्जुणसुवण्णमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इसीपब्भाराएण सीयाए जोयणमि लोगतो तस्स णं जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे एत्थ णं सिद्धा भगवंतो सादिया अपज्जवसिया अणेगजातिजरामरणजो

---

बाहल्येन प्रज्ञप्ता, ततोऽनन्तरं च मात्रया मात्रया परिहीयमाना सर्वेषु चरमान्तेषु मक्षिकापत्रतोऽप्यतितन्वी अङ्गुलस्यासंख्येयभागं बाहल्येन प्रज्ञप्ता। ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या द्वादश नामधेयानि भवन्तीति तद्यथा ईषदिति वा ईषत्प्राग्भारेति वा तन्वीति वा तनुतरीति वा सिद्धिरिति वा सिद्धालय इति वा मुक्तिरिति वा मुक्तालय इति वा लोकाग्र इति वा लोकाग्रस्तूपिकेति वा लोकाग्रप्रतिबोधिनीति वा सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वसुखावहा इति वा ईषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेता शङ्खदलविमलसौवस्तिकमृणालदकरजस्तुषारगोक्षीरहारवर्णा उत्तानकछत्रसंस्थानसंस्थिता सर्वार्जुनसुवर्णमयी अच्छा श्लक्ष्णा लक्ष्णा घृष्टा मृष्टा नीरजा निर्मला निष्पङ्का निष्कङ्कटच्छाया सप्रभा सश्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्याः शीतायाः योजने लोकान्तः तस्य च योजनस्य यदुपरितनं गव्यूतं तस्य गव्यूतस्य यदुपरितनं षड्भागं यत्र सिद्धा भगवन्तः सादिका अपर्यवसिता अनेकजा

अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थ णं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थ णं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे सममहिड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा ते देवगणा पण्णत्ता । समणाउसो । कहि णं भंते ! सिद्धाणं ठाणा पण्णत्ता । कहि णं भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! सव्वट्ठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालसजोयणे उड्ढं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा नाम पुढवी प०, पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगंजोयणकोडिं बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं सहस्साइं दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता । ईसीपब्भाराए णं पुढवीए

---

पराजिता सर्वार्थसिद्ध । स विमाना सर्वरत्नमया अच्छा श्लक्ष्णा घृष्टा मृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्का निष्कङ्कटच्छाया सप्रभा सश्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा अत्रानुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि (लोकेषु) लोकस्यासंख्येयतमे भागे तत्र बहवोऽनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति सर्वे सममहर्द्धिकाः सर्वे समबलाः सर्वे समानुभावा महासौख्या अनिन्द्रा अपुरोहिता अप्रेष्या अहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः [illegible] सिद्धानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि हे भदन्त ! सिद्धाः परिवसन्ति ? गौतम ! सर्वार्थस्य महाविमानस्योपरितनायाः स्तूपिकाया द्वादशयोजनान्यूर्ध्वं अबाधया ईषत्प्राग्भारा नाम पृथिवी प्रज्ञप्ता पञ्चचत्वारिंशद्योजनशतसहस्राणि आयामविष्कम्भाभ्यां एकायोजनकोटी द्विचत्वारिंशच्छतसहस्राणि त्रिंशत्सहस्राणि द्वे एकोनपञ्चाशद्योजनशते किंचिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण प्रज्ञप्ता ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे अष्टयोजनिकं क्षेत्रं अष्टौ योजनानि बाहल्येन प्रज्ञप्तं ततोऽनन्तरं मात्रया २ प्रदे- [illegible]

तानयस्कयविमुक्का । ऋन्नोन्नसमोगाढा पुठासवेत्रिलोयते ॥ ९ ॥ फुसइ ऋणतसिद्दे सवपएसेहिनियमसो सिद्दा । तेत्रिऋसंखेज्जगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ ऋसरीराजीवघणा उवउत्तादसणेयनाणेय । सागाररमणागार लरकणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणतीसवभावगुणभावे । पासतिसवउखलु केवलदिठीहिणताहि ॥१२॥ नविऋत्थिमानुसाण तसारकनत्थिसवदेवाण । जसिद्धाणसुक्क ऋवावाहउवगयाण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसमत्त सवद्धापिंडियऋणतगुण । नयिपावइमुत्तिसुह णताहिवग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥ सिद्धस्ससुहोरासी सवद्धापिंडिएजइहविज्जा । सोनतवग्गभइउ सवागासणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामकोइमिच्छो नगरगुणबहुविहविजाणतो । णवएइपरिकहेउ उवमाएतहिऋसतीए ॥१६॥ इयसिद्धाणसोरक ऋणोवमनात्थितस्सउवम्म । किंचिविसेसेणितो सारिस्कमिणसुणहवोत्थ ॥ १७ ॥ जहसवकामगुणिय पुरिसो

---

भवपाशमयासिद्धा प्रवविनाम सर्वातिपरिहीना । सस्थानमनित्यस्य घनरामरविप्रमुक्तानाम् ॥ ८ ॥ यत्रचैकःसिद्ध स्तत्रानन्ताभवक्षयविमुक्ताः । अन्योन्यसमवगाढा स्पृष्टा (सन्ना) सर्वेपिलोकान्ते ॥ ९ ॥ स्पृशत्यनन्तान्सिद्धान् सर्वप्रदेशैर्नियमतः सिद्धः । तेप्यसंख्येयगुणा देशप्रदेशैर्येस्पृष्टा ॥ १० ॥ अशरीराजीवघना उपयुक्तादर्शने तथाज्ञाने । साकारानाकार लक्षणमेतत्तुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्तिसर्वभावगुणभावान् । पश्यन्तिसर्वतःखलु केवलदृष्टिभिरनन्ताभि ॥ १२ ॥ नैवास्तिमनुष्याणां तत्सौख्यमास्तिसर्वदेवानां । यत्सिद्धानां सौख्यमव्याबाधामुपगतानाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुखसमस्तं सर्वाद्धापिंडितमनन्तगुणम् । नप्राप्नोतिमुक्तिसुख मनन्तैर्वर्गवर्गैरपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्यसुखराशि सर्वाद्धापिंडितायदि भवत । सोनन्तवर्गभक्त सर्वाकाशेनोमातितत्सौख्यम् ॥ १५ ॥ यथाकश्चिन्म्लेच्छ नगरगुणान्बहुविधान्विजानन् । नशक्नोतिपरिकथयितु मुपमायास्तत्राभावात् ॥ १६ ॥ इतिसिद्धानांसौख्य मनुपमनास्तितस्यचौपम्यम् । किञ्चिद्विशेषतोस्य सादृश्य मशृणुतवक्ष्यमाणमिदम् ॥ १७ ॥

निसंसारकलकलीनावपुणअवगअवासवसही एयते समइक्कांता सासयमणागयद्ध काल चिठति, तत्यवियते अवेदा अवेयणाणिम्ममा असंगायससारविप्पमुक्का । पदेसनिव्वत्तिसठाणा ॥१॥ कहिंपडिहयासिद्धा कहिं सिद्धापइठिया । कहियोंदीचइत्ताण कहगंतूणसिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइठिया । इहयोंदीचइत्ताण तत्यगतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ दीहवाहस्सवा अचरिमभवेइविज्जसठाण । तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया ॥ ३ ॥ सठाणतुइइं भवचयतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघण संसठाणताहि तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुतिभागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाण उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥ चत्तारियरयणीउ रयणितिभागूणियायबोधव्वा । एसाखलुसिद्धाणं मज्झिमोगाहणाभणिआ ॥ ६ ॥ एगाय होइरयणी अठेवयअंगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्नोगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ उगाहणाएसिद्धा भवतिभागेणहोइपरिहीणा । सठाणमणित्यत्य जरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्यअणं

[illegible] ॥ २ ॥ दीर्घे वा ह्रस्वे वा यच्चरमभवे भवेत्संस्थान । ततस्त्रि [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] चरमसमये । [illegible] ॥ ४ ॥ त्रीणि शतानि [illegible] । एषा खलु सिद्धानां उत्कृष्टावगाहना भणिता ॥ ५ ॥ चतस्रो रत्नयः [illegible] । एषा खलु [illegible] मध्यमावगाहना भणिता ॥ ६ ॥ [illegible] । एषा खलु सिद्धानां जघन्यावगाहना भणिता ॥ ७ ॥

पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहि

हिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहि-
या उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया
पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दा-
हिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेण पुर-
च्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदि-
या पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण
सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया,
एव चउरिंदियावि, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखेज्ज-
गुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असंखे-

---

विशेषाधिकाः दिगनुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिका पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका तेजस्कायिका दक्षिणेन पूर्वेण विशेषाधिका पश्चिमेन विशेषाधिका दिगनुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका दिगनुपातेन द्वीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः दिगनुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषाधिका, एवं चतुरिन्द्रिया अपि । दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकाः पूर्वेण पश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोका रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपा-

जोत्तूणजोयणकोद्द । तत्थावुद्धाविमुक्को ऋप्किज्जजहास्यमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता ऋउलनि व्वाणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिठंतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगत्तियपरंपर गत्तिय । उम्मुक्ककम्मकवया ऋजराऋमराऋसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणविमुक्का । ऋव्वाबाहंसुक्खं ऋणुहोंतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ बितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥

दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगऋाहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्तप ज्ज त्तसुहुमसन्नीभवत्थियसेचरिमे । जीवयखेत्तबंधे पुग्गलमहदंडएचेव ॥ २ ॥ दिसानुवाएण सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसा

---

यथासववायपूर्वित पुरुषोमुक्तावयोक्त कोपि । तत्पाद्धावविमुक्त स्तिष्ठतिसोमागमतृप्तः ॥ १८ ॥ इतिसर्वकालतृप्ता ऋतुलंनिर्वाणमुपगताःसि द्धाः । शाश्वतमव्याबाधं तिष्ठन्तिसुखिन सुखमाप्ताः ॥ १९ ॥ सिद्धाइतिबुद्धाइति पारगताइतिपरम्परागता ॥ उन्मुक्तकर्मकवचा ऋजराऋमराऋसंगाय ॥ २० ॥ निस्तीर्णसर्वदुःखा जातिजरामरणबन्धनविमुक्ताः । ऋव्याबाधंसौख्य मनुभवन्तिशाश्वतसिद्धाः ॥ २० ॥ इति श्रीरामचन्द्रगणि विरचिते प्रज्ञापनानुवादे द्वितीयं पदं समाप्तम् ॥ ॥

दिक्‌गतीन्द्रियकाययोगवेदकषायलेश्याः । सम्यक्त्वज्ञानदर्शनसंयतोपयोगाहाराः ॥ १ ॥ भाषकपरीतपर्याप्त सूक्ष्मसंज्ञिभवास्तिचरमा । जीवक्षेत्रबन्धपुद्गलमहादण्डकास्तु ॥ २ ॥ दिगनुपातेन ( दिशामाश्रित्येत्यर्थः ) सर्वस्तोका जीवाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषाधिकाः पूर्वेण विशेषाधिकाः पश्चिमेन

उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेण असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेण असंखेज्जगुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा मनुस्सा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखेज्जगुणा। पच्चच्छिमेण विसेसाहिया। दिसानुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा

---

नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्यो द्वितीयायाः शर्कराप्रभपृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यः शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिकाः, दक्षिणेन विशेषाधिकाः, उत्तरेण विशेषाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण संख्येयगुणाः पूर्वेण, पश्चिमेन विशेषाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवाः पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणाः दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन वानव्यन्तरा देवाः पूर्वपश्चिमेन विशेषाधि

असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहिंतो अहे सत्तमापुढविनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पंचमाधूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम

---

तेन सर्वस्तोकाः शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिका वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरे दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः अधःसप्तमापृथ्वीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेषु दाक्षिणात्येभ्यो च सप्तमापृथिवीनैरयिकेभ्यः षष्ठ्यां तमायां पृथिव्यां नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेष्वसंख्येयगुणाः दक्षिणेनासंख्येयगुणाः। दाक्षिणात्यतमःप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यः पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेष्वसंख्येयगुणाः दक्षिणेनासंख्येयगुणाः। दाक्षिणात्येभ्यो धूमप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यः चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेष्वसंख्येयगुणाः दक्षिणेनासंख्येयगुणाः। दाक्षिणात्येभ्यः पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यः तृतीयायां वालुकाप्रभापृथिवी-

उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो पकप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणेण असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणिल्लेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मनुस्सा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण असंखेज्जगुणा। पच्चच्छिमेण विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा। दाहिणेण असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

---

नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्यो द्वितीयायाः शर्कराप्रभपृथिव्या नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यः शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योऽस्याः रत्नप्रभायाः पृथिव्याः नैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणा दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिकाः, दक्षिणेन विशेषाधिकाः, उत्तरेण विशेषाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण असंख्येयगुणाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन वानव्यन्तरा देवाः पूर्वपश्चिमेन विशेषाधि

याणमतरादेवा पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, दि सानुवाएण सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसे साहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगुणा दाहिणे ण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा सणकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखेज्जगु णा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण, उत्तरेण असंखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया। दिसानुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छि मउत्तरेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा दिसानुवाएण सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्त रेण दाहिणेण असंखेज्जगुणा। दिसानुवाएण लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसानुवाएण सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं

---

उत्तरेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवाः पूर्वपश्चिमेन दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशे षाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सौधर्मकल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा ई शान कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सनत्कुमारे कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगु णा दक्षिणेन विशेषाधिका, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा माहेन्द्रे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः दिगनुपातेन सर्वस्तोका ब्रह्मदेवलोके देवाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा लान्तके कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासं

सेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असंखे० तेण
पर अज्जसमोववन्नगा समणाउसो । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण संखेज्जगु
णा, पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दार १ । एएसि ण भंते ! नेरइयाण तिरिक्खजोणियाण मणुस्साण देवाण
सिद्धाण य पंचगइसमासेण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अन
तगुणा । एएसि ण भंते ! णेरइयाण तिरिक्खजोणियाण तिरिक्खजोणिणीण मणुस्साण मणुस्सीण देवाण
सिद्धाण य अट्ठगतिसमासेण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा मणुस्सीओ मणुस्सा असंखेज्जगुणा । णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणा

---

ख्येयगुणाः दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा महाशुक्रे कल्पे पूर्वापरोत्तरयोः दक्षिणेनासंख्येयगुणाः दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा सहस्रारे कल्पे पूर्वापरोत्तरयोः दक्षिणेनासंख्येयगुणाः तत्र परं बहुसमोपपन्नकाः श्रमणायुष्मन् । दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः सिद्धाः दक्षिणोत्तरयोः पूर्वेण संख्येयगुणाः पश्चिमेन विशेषाधिकाः द्वारम् । १ । एतेषां भदन्त ! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां देवानां सिद्धानां च पञ्चगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका मनुष्या नैरयिका असंख्येयगुणाः देवा असंख्येयगुणाः सिद्धा अनन्तगुणाः तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः । एतेषां भदन्त ! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां तिर्यग्योनिकीनां मनुष्याणां मानुषीणां देवानां सिद्धानां चाष्टगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका मानुष्यो मनुष्या असंख्येयगुणाः नैरयिका असंख्येयगुणाः तिर्यग्योनिक्योऽसंख्येयगुणाः देवा असंख्येयगुणाः देव्यः संख्येयगुणाः सिद्धा अनन्तगुणाः तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः । द्वारम् । २ ॥ ए

ठ। देवा असंखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा दारं २। एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा एगिंदिया अ० सइंदिया वि०। एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे

---

षां भदन्त। सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामनिन्द्रियाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियाः चतुरिन्द्रिया विशेषाधिकाः त्रीन्द्रिया विशेषाधिकाः द्वीन्द्रिया विशेषाधिका अनिन्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणाः सेन्द्रिया विशेषाधिकाः। एतेषां भदन्त। सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तकाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिकाः। एतेषां भदन्त। सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणां पर्या

कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एएसिण भंते ! सइंदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्तगा असं० । एएसिण भंते ! बेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्ता बेइंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! तेइंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते !

---

प्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्याप्तकाश्चतुरिन्द्रियाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रियाः पर्याप्तकाः सख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सेन्द्रिया अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सेन्द्रियाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! एकेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः, एतेषां भदन्त ! त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ सर्वस्तो

ठ। देवा असंखेज्जगुणा। देवीओ संखेज्जगुणाओ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा दारं २। एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा एगिंदिया अ० सइंदिया वि०। एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ४ एएसि णं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे

---

तेषां भदन्त! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामनिन्द्रियाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियाः चतुरिन्द्रिया विशेषाधिकाः त्रीन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया विशेषाधिका अनिन्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणाः सेन्द्रिया विशेषाधिकाः ४। एतेषां भदन्त! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तकाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिकाः। एतेषां भदन्त! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणां पर्या-

याण पुढयिकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाण अकाइ
याण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढवि
काइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणंतगुणा,
वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिणं भंते ! सकाइयाण पुढयिकाइयाण
आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय अपज्जत्तगाण कयरे कय
रेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखे
ज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया
अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया

---

पर्याप्तका विशेषाधिकाः । द्वारम् । ४ । एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानामकायिकानां कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः तेजस्कायिका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका विशेषाधिका अकायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः सकायिका विशेषाधिका । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका तेजस्कायिका अप० असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायि

चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! पंचेंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सइंदियाण एगिंदियाण बेइंदियाण तेइंदियाण चउरिंदियाण पंचिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दारं ३ । एएसिणं भंते ! सकाइ

---

चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! पंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पंचेन्द्रियाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पंचेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तकाः पंचेन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः पंचेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सेन्द्रियाः

याण पुढयिकाइयाण श्राउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाण श्रकाइ याण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया श्रसखेज्जगुणा, पुढवि काइया विसेसाहिया, श्राउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया श्रकाइया श्रणतगुणा, वणस्सइकाइया श्रणतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिण भंते ! सकाइयाण पुढयिकाइयाण श्राउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय श्रपज्जत्तगाण कयरे कय रेहिंतो श्रप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया श्रपज्जत्तगा, तेउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखे ज्जगुणा, पुढविकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया, श्राउकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा श्रणतगुणा। सकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया

---

पर्याप्तका विशेषाधिका । द्वारम् । ५ । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वन स्पतिकायिकानां त्रसकायिकानामकायिकानां कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका तेजस्कायिका असंख्येयगुणा। पृथि वीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका विशेषाधिका अकायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः सकायिका विशेषाधिका । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायि कानामपर्याप्तकानां कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका तेजस्कायिका अप० असंख्येयगुणा पृथिवीकायिका अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायि

एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसि णं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। एएसि णं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप

---

कानां च पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः त्रसकायिकाः पर्याप्तकाः तेजस्कायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका वनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका अनन्तगुणाः सकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ भ्यो ऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिका अपर्याप्ताः पर्या० संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! पर्या० अपर्या० अप्कायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका अप्कायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! तेजस्कायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका तेजस्का-

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे
कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा
एएसिणं भंते । वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ
काइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते । वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता२ णं
कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज
त्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते । तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ गोय
मा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज० । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं
पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं
कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखे
ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अ

---

यिका अपर्याप्तका पर्याप्तका संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । वायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तो
का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । वनस्पतिकायिकानां पर्या० २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम !
सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । त्रसकायिकानां पर्याप्ता २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ?
गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानामप्कायिकानां तेजस्का
यिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

एएसिण नते ! सकाइयाण पुढविकाइयाण स्राउकाइयाण तेउकाइयाणं वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो स्रप्पावा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा स्रसखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया स्राउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता स्रणतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिण नते ! सकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो स्रप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया स्रपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एएसिण नते ! पुढविकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो स्रप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया स्रपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा। एएसिणं नते ! स्राउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो स्रप्पावा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा स्राउकाइया स्रप

---

कानां च पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा १ ? गौतम ! सर्वस्तोका त्रसकायिकाः पर्याप्तकाः [illegible] पर्याप्तकाः [illegible] विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तकाः विशेषाधिका [illegible] पर्याप्तका अनन्तगुणाः सकायिका पर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतस्य प्रश्न । पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ भ्यो अल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका पृथिवीकायिका अपर्या० पर्या० संख्येयगुणाः । एतस्य प्रश्न । पर्या० अपर्या० अप्कायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका अप्कायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । इतीयं प्रश्न । तेजस्कायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ३ ? गौतम ! सर्वस्तोका तेजस्का [illegible]

क्षयरे
ज्जत्तगा, श्राउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! तेउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे
कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया श्रपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा
एएसिण भंते ! वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो श्रप्पाया ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ
काइया श्रपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता२ ण
कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज
त्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! तसकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो श्रप्पावा ४ गोय
मा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्ज० । एएसिण भंते ! सकाइयाण
पुढविकाइयाण श्राउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण
कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखे
ज्जगुणा, तेउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा पुढविकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया, श्राउकाइया श्र

---

यिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! वायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तो
का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! वनस्पतिकायिकाना पर्या० २ णां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम !
सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषा भदन्त ! त्रसकायिकाना पर्याप्ता २ ना कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ?
गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! सकायिकाना पृथिवीकायिकानामप्कायिकाना तेजस्का
यिकानां वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुकावा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढवि काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वण० अनन्त० पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमणिओयाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एएसिण भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाण सुहुमपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमआउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुम

---

गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा तेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः तेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पृथिवीकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका अनन्तगुणाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः

वणस्सइकाइयाण अपजत्तगाण सुहुमनिगोदाण अपजत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !
सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपजत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउका०
अपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपजत्तगा अ
सखेजगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपजत्तगा अणतगुणा, सुहुमा अपजत्तगा विससाहिया। एएसिण
भंते ! सुहुमपजत्तगाण सुहुमपुढविकाइयपजत्तगाण सुहुमआउकाइयपजत्तगाण सुहुमतेउकाइयपज्ज
त्तगाण सुहुमवाउकाइयापजत्तगाण सुहुमवणस्सइकाइयापजत्ताण सुहुमनिगोदपजत्तगाणय कयरे कय
रेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पजत्तगा, सुहुमपुढविकाइयापजत्तगा वि
सेसाहिया, सुहुमआउकाइया पजत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पजत्तगा विसेसाहिया, सुहु
मनिगोदा पजत्तगा असखेजगुणा, सुहुमवस्सइकाइयापजत्तया अणतगुणा, सुहुमापजत्ता विसेसा
हिया दार ३ । एएसिण भंते ! सुहुमाण पजत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा

---

सूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सूक्ष्मा विशेषाधिका । एतेषा भदन्त ! सूक्ष्मापर्याप्तकाना सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकापर्याप्ताना सूक्ष्मतेजस्कायापर्याप्तकाना सूक्ष्मापर्याप्तवायुकायिकाना सूक्ष्मापर्याप्तवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मापर्याप्तनिगोदाना कतरे २ भ्योऽल्पावा ? गौतम । सर्वस्तोका सूक्ष्मापर्याप्ता तेजस्कायिका सूक्ष्मपृथिवीकायिका अ० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका सूक्ष्मवायुकायिका अ० विशेषाधिका सूक्ष्मनिगोदा अ० असख्यगुणा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अ० अनन्तगुणा सूक्ष्मा अप० विशेषाधिका । एतेषा भदन्त ! सूक्ष्मपर्याप्तकाना सूक्ष्मपृथिवीकायपर्याप्ताना सूक्ष्माप्कायिकपर्या०कानां सूक्ष्मतेजस्कायिकपर्या०कानां सू

पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढवि काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वण० अनन्त० पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्त गा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइ याणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंत गुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एएसिणं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहु मआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुम

---

गौतम ! सर्वस्तोकाः त्रसकायिकाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तकाः असंख्येयगुणाः तेजस्कायिकाः अपर्याप्तकाः असंख्येयगुणाः पृथ्वीकायिकाः अपर्याप्तकाः वि शेषाधिकाः अप्कायिकाः अपर्याप्तकाः विशेषाधिकाः वायुकायिकाः अपर्याप्तकाः विशेषाधिकाः तेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पृथिवीकायि काः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः अप्कायिकाः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः वायुकायिकाः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः अपर्याप्तकाः वनस्पतिकायिकाः अनन्त गुणाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सकायिकाः अपर्याप्तकाः विशेषाधिकाः सकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथि वीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः विशेषाधिकाः

सखेज्ज० । एएसिणं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुम आउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अणंतगु

---

संख्येयगुणा । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्या० सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मनिगोदा अपर्या० सूक्ष्मनिगोदाः पर्या०काः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्या० संख्यगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्म

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । [illegible]

हितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया , सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाण पज्जत्ता२ ण कयरे२ हितो अप्पावा४ गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे२ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा

---

सूक्ष्मवायुकायिकपर्याप्तकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्याप्तकानां सूक्ष्मनिगोदपर्याप्तकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः प० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदाः प० असंख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः प० अनन्तगुणाः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः । सूत्रम् । ४ । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्तकाः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अप्कायिका अप० पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मतेजस्कायपर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अप० पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मापर्याप्तका वायुकायिकाः पर्याप्ताः

सखेज्ज० । एएसिण न्नते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो श्रप्पावा४ ? गोयमा !
सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण
न्नते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा
श्रपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण न्नते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुम
श्राउकाइयाण सुहुमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२
ण कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया श्रपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया
श्रपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमश्राउकाइया श्रपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया श्रपज्जत्तया
विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहु
मश्राउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा श्रणतगु

---

संख्येयगुणा । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्या
प्तका पर्या०का संख्येयगुणा एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका सूक्ष्मनिगोदा अपर्या०
का पर्या०का संख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्म
वनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताः सूक्ष्म
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिका। सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिका सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्या०
का संख्यगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्या० विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका। पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्म

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया , सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पा वा ४ गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया , सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसि णं भंते ! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा , सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा

---

ष्मवायुकायिकपर्याप्तकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्याप्तकानां सूक्ष्मनिगोदपर्याप्तकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः प० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदाः प० असंख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः प० [illegible] सूक्ष्माः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः । [illegible] सूक्ष्माणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्तकाः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगु[illegible] [illegible] सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अप्कायिका अप० पर्याप्तका सं[illegible]ख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मतेजस्कायपर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अप० पर्याप्तकाः संख्येयगु[illegible]णाः । एतेषां सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्तका वायुकायिकाः पर्याप्तका

ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुम आउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अणतगु

---

संख्येयगुणा । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या० पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः, एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मनिगोदा अपर्या०काः पर्या०काः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०णां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ताः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्या० संख्यगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्म

णा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे२ हितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बायरनिगोया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया असंखिज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! बादरापज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि

---

निगोदा [illegible] संख्येयगुणाः सूक्ष्मनिगोदाः पर्या॰ संख्येयगुणाः [illegible] सूक्ष्माः अपर्या॰ विशेषाधिकाः सूक्ष्म वनस्पतिकायिकाः पर्या॰ संख्येयगुणाः सूक्ष्माः पर्याप्ताः विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा बादरनिगोदा असंख्येयगुणा बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा बादराप्कायिका असंख्येयगुणा बादरवायुकायिका असंख्येयगुणा बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा विशेषाधिकाः । एवमेवं त्रयम् । बादरपर्याप्तानां बादरापर्या॰पृथिवीकायिकानां बादरापर्या॰ अप्कायिकानां

कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा वि
गोदा अपज्जत्तगाणं बादरतसकाइयाअपज्जत्तगाणय
ससाहियावा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज
गुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज
गुणा, बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा,
बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअप
ज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिणं भंते ! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तयाणं, बादरआउ
काइयाणं पज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्ज
त्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयापज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय
कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सब्बत्थोवा बादरतेउकाइया प

बादरापर्या० त्रसकायिकाना बादरापर्या० वायुकायिकानां बादरापर्या०वनस्पतिकायिकाना बादरापर्या० प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकानां बादरनि
गोदानामपर्याप्तकाना बादरापर्या० त्रसकायिकाना कतरे २ ग्याऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका बादरतेजस्काय
का अप० असंख्येयगुणा प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अप० असंख्येयगुणा बादरनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरपृथिवीकायिका
अपर्याप्तका असंख्यगुणा बादराप्कायिका अप० असंख्यगुणा बादरवायुकायिका अप० असंख्यगुणा बादरवनस्पतिकायिका अपर्या० अनन्तगुणा बा
दरापर्याप्तका विशेषाधिका । २ । एतेषां भ० । बादरपर्याप्तकानां बादरपृथिवीकायपर्याप्तकाना पर्याप्तबादराप्कायानां पर्या० बादरतेजस्कायिका
ना पर्याप्तबादरवायुकायाना पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाना पर्याप्तबादरनिगोदाना पर्याप्तबादरत्रस

णा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाण य कयरे २ हिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बायरनिगोया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया असंखिज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसि णं भंते ! बादरापज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि

---

निगोदाः पर्या० संख्येयगुणाः सूक्ष्मनिगोदाः पर्या० [illegible] सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः [illegible] अनन्तगुणाः सूक्ष्माः पर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्म [illegible] पर्या० संख्येयगुणाः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः [illegible] बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां [illegible] कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम । सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा बादरनिगोदा असंख्येयगुणा बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणा बादराप्कायिका असंख्येयगुणा बादरवायुकायिका असंख्येयगुणा बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । बादरपर्याप्तकानां बादरापर्या० पृथिवीकायिकानां बादरापर्या० अप्कायिकानां

बादरतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बादरआउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! बादरनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा । बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ।

---

यका पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्यगुणा । एतेषां भदन्त ! बादरतेजस्कायानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! बादरवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरनिगो

ज्जत्तया, बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असं
खेज्जगुणा। बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादर
आउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा। बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरवणस्सइकाइ
या पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरा पज्जत्तगा विसेसाहिया ३। एएसि णं भंते! बादराणं पज्जत्ता २ णं
कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा। बा
दरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो
अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा अ
संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा!
सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसि णं भंते!

---

कायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्याप्तबादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तबादरत्रसकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तप्रत्येक-
शरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादराप्कायिका अ-
संख्येयगुणाः पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः बादराः पर्याप्तका विशेषाधिकाः ।३। एतेषां भद-
न्त! बादराणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादराः पर्याप्तका अपर्या० असंख्येयगुणाः। एतेषां भद०! बा
दरपृथिवीकायिकानां पर्या०अपर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्तकाः १ बादरपृथिवीका
० अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त! बादराप्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा? गौतम! सर्वस्तोका बादराप्का

बादरतेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो ऋप्पाचा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया ऋपज्जत्तया ऋसंखेज्जगुणा । एएसिण नंते ! बाद
रवाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्ज
त्तगा । बादरवाउकाइया ऋपज्जत्तगा ऋसंखेज्जगुणा । एएसिण नंते ! बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण
कयरे कयरेहितो ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । बादरवणस्सइकाइ
या ऋपज्जत्तगा ऋसंखेज्जगुणा । एएसिण नंते ! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे
कयरेहितो ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरबादरव
णस्सइकाइया ऋपज्जत्तगा ऋसंखेज्जगुणा । एएसिण नंते ! बादरनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो
ऋप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा । बादरनिगोदा ऋपज्जत्तगा ऋसंखिज्जगुणा ।

---

र्यका: पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरतेजस्कायानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तो
का बादरतेजस्कायिका पर्याप्तका अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे क
तरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणा । एतेषां भदन्त ! बादरवनस्प
तिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवनस्पति
कायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्व
स्तोका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरनिगो

एएसि णं भंते ! बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा४ । एएसि णं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । बादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज० ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्ज

---

प्ताना पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरनिगोदाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ।-एतेषां भदन्त ! बादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तकाः बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । ४ । एतेषां भदन्त ! बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः १ बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः २ । बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्या०बादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्या०बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्या०बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ ।

त्तगा असखिज्जगुणा ८ । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइका
इया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । बादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । बादरपुढविकाइया
अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । बादरवाउकाइया
अप० असखेज्जगुणा १४ । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणतगुणा १५ । बादरपज्जत्तगा विसेसा
हिया १६ । बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १७ । बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ ।
बादरा विसेसाहिया २० । एएसि ण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउ
काइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादरपुढविकाइयाण
बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवण

---

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः ११ । अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगु
णा १२ । अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणा १३ । अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा १४ । पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १५ ।
पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १६ । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा १७ । अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १८ । बादरा विशेषाधि
का १९ । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिका
यिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायि
कानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्र
सकायिका १ । बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः २ । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३ । बादरनिगोदा असंख्यगुणाः ४ । बाद

एएसि णं भंते ! बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । एएसि णं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । बादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज० ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जा

---

दानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरनिगोदाः पर्याप्तकाः, अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तकाः, बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । ४ । एतेषां भदन्त ! बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः १ । बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः २ । बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्या० बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्या० बादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्या० बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्या० बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ ।

स्सगा असखिज्जगुणा ८ । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइका इया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । बादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । बादरवाउकाइया अप० असखेज्जगुणा १४ । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणतगुणा १५ । बादरपज्जत्तगा विसेसा हिया १६ । बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १७ । बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ । बादरा विसेसाहिया २० । एएसिण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाण सुहुमआउकाइयाण सुहुमतेउ काइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाण बादराण बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवाउकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाण पत्तेयसरीरबादरवण

---

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणा १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असख्यगुणाः ११ । अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असख्यगु णा १२ । अपर्या०बादराप्कायिका असख्यगुणाः १३ । अपर्या०बादरवायुकायिका असख्यगुणा १४ । पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १५ । पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका १६ । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणा १७ । अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १८ । बादरा विशेषाधि का १९ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिका यिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायि कानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्र सकायिका १ । बादरतेजस्कायिका असख्यगुणाः २ । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणाः ३ । बादरनिगोदा असख्यगुणाः ४ । बाद

स्सइकाइयाण बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा? ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५ । बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमाविसेसाहिया १ । एएसिण भंते ! सुहुमअपज्जयाण सुहुमपुढविकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुम आउकाइया अपज्जत्तयाण सुहुमतेउकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुहुमवण स्सइकाइयाण अपज्जत्तयाण सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाणं बादरा अपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः १ । बादराप्कायिका असंख्यगुणाः [illegible] । बादरवायुकायिका असंख्यगुणाः ७ । सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणाः ८ । सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः ९ । सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १० । सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः ११ । सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः १२ । बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १३ । बादरा विशेषाधिकाः १४ । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १५ । सूक्ष्मा विशेषाधिकाः १६ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां अपर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मवायुकायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मनिगोदानामपर्याप्तानां बादरापर्याप्तकानामपर्याप्तबादरपृथिवीकायिकानामपर्या [illegible] बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानामपर्याप्तबादरवायुकायिकानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तप्रत्येकशरीर बादर

ज्जत्तयाण बादरश्राउकाइयश्रपज्जत्तयाण बादरतेउकाइयाश्रपज्जत्तयाण बादरवाउकाइयश्रपज्जत्तयाण बादरवणस्सइकाइयश्रपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयश्रपज्जत्तयाण बादरनिगोदा श्रपज्जत्तयाण बादरतसकाइया श्रपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहितो श्रप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया श्रपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा । बादरश्राउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखे० ६ । बादरवाउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा , सुहुमतेउकाइया श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुहुमश्राउकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुहुमवाउकाइया श्रपज्जत्तगा विसेसाहिया , सुहुमनिगोदा श्रपज्जत्तगा श्रसखेज्जगुणा , बादरवणस्सइकाइया श्रपज्जत्तगा श्रणतगुणा , बादरा श्रपज्जत्तगा

---

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तबादरनिगोदानां अपर्याप्तबादरत्रसकायिकानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका अपर्याप्तबादरत्रसकायिका १ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणा २ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ३ । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणा ४ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ५ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणा ६ । बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः ९ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्येयगुणा अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा अपर्या०का विशेषाधिका अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा अपर्या०का सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपर्या०कानां

विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसि णं भंते! सुहुमपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादरआउकाइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असं० बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमतेउकाइ

---

सूक्ष्मपृथ्वीकायिकपर्याप्तकानां पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकानां पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकानां पर्या०सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०सूक्ष्मनिगोदानां बादरपर्या०कानां पर्या०बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०बादराप्कायिकानां पर्या०बादरतेजस्कायिकानां पर्या०बादरवायुकायिकानां पर्या०बादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०बादरनिगोदानां पर्या०बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरतेजस्कायिकाः पर्या०बादरत्रसकायिकाः असंख्यगुणाः पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः असंख्यगुणाः पर्या०बादरनिगोदाः असंख्यगुणाः पर्या०बादरपृथिवीकायिकाः असंख्यगुणाः पर्या०बादराप्कायिकाः असंख्यगुणाः पर्या०बादरवायुकायिकाः असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकाः असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्माप्कायिकाः विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्म

या पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३। एएसि णं भंते! सुहुमाणं बादराण य पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तगा असंखगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा असंखगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमपुढविकाइयाण बादरपुढविकाइयाण य पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तया बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! सुहुमआउकाइयाण बादरआउ

---

वायुकायिका विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा सूक्ष्मा पर्या०का विशेषाधिकाः ३। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माणां बादराणां च पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादरा पर्या०का अपर्या०का बादरा असंख्यगुणा सूक्ष्मा अपर्या०का असंख्यगुणा सूक्ष्माः पर्या०काः संख्यगुणा। एतेषां भदन्त! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका असंख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः संख्यगुणा। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माप्कायिकानां बादराप्कायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्या०बादराप्का

काइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तया बादरआउकाइय अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखगुणा । एएसिण भंते ! सुहुमतेउकाइयाण बादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयर कयरेहिंतो अप्पावा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्ज गुणा । एएसिण भंते ! सुहुमवाउकाइयाण बादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया असंखे० । सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया असंखगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाण बादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा१ ? गोयमा !

---

[illegible] पर्या०बादराप्कायिका असंख्येयगुणा अपर्या०सूक्ष्माप्कायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्माप्कायिकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मतेजस्का[illegible] बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरतेजस्कायिका अपर्या०बादरतेजस्का[illegible] सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मवायुकायिकानां बादरवायुकायिकानां च पर्या०प० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरवायुकायिका अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्येयगुणा अपर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्मवायुकायिका संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अपर्या०बादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा

सद्दत्योवा वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम
वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते!
सुहुमनिगोदाणं वादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सद्दत्योवा वाद
रनिगोदा पज्जत्तया, वादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा,
सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिणं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउका
इयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं वादराणं वादर
पुढविकाइयाणं वादरआउकाइयाणं वादरतेउकाइयाणं वादरवाउकाइयाणं वादरवणस्सइकाइयाणं पत्ते
यसरीरवादरवणस्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतस्सकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा
वा४ ? गोयमा! सद्दत्योवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १। वादरतसकाइया पज्जत्तया असंखगुणा २

अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः संख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त। सूक्ष्मनिगोदानां बादरनिगोदानां पर्या
प्ताऽपर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोका पर्या०का बादरनिगोदा अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मनिगो
दा असंख्यगुणा पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा संख्यगुणाः। एतेषां भदन्त। सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्म
वनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवा
युकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कत
रेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तका १। पर्याप्तबादरत्रसकायिका असंख्येयगुणाः २। अपर्याप्तबादरत्रसकायिका

बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १० । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता असंखे० १२ । बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखे० १३ । बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४ । सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १७ । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया असंखि० १९ । सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ । सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३ । सुहुमनिगो[illegible]

---

असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ११ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः १२ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणा १३ । अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधि

दा पज्जत्तया संखि० २४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणतगुणा २५। बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २७। बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८। बादरा विसेसाहिया २९। सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखि० ३०। सुहुमअपज्जत्तगा विसेसाहिया ३१ सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखे० ३२। सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया ३३। सुहुमा विसेसाहिया ३४ दार ४। एएसि णं भंते। जीवाणं सजोगीणं मणजोगीणं वयजोगीणं कायजोगीणं अजोगीणय कयरे २ हितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा। सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी वयजोगी असंखेज्जगुणा अजोगीअणतगुणा कायजोगी अणतगुणा सजोगी विसेसाहिया, दार ५। एएसि णं भंते ! जीवाणं सवेदगाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं नपुंसगवेदगाणं अवेदगाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४

---

का १८। पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका सख्येयगुणा १९। पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिका २०। पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः २१ पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः २२। अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्येयगुणा २३। पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणाः २४। पर्याप्तबादरवनस्पति कायिका अनन्तगुणा २५। पर्याप्ता बादरा विशेषाधिका २६। अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा २७। अपर्याप्ता बादरा विशेषाधि का २८। बादरा विशेषाधिका २९। अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा ३०। सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका ३१। पर्याप्ता सूक्ष्मवन स्पतिकायिकाः संख्येयका ३२। पर्याप्ता सूक्ष्मा विशेषाधिका ३३। सूक्ष्मा विशेषाधिका ३४ द्वारम्। ४। एतेषां भदन्त। जीवानां सयोगिनां मनोयोगिनां वाग्योगिनां काययोगिनां अयोगिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोका जीवा मनोयोगिनो वाग्योगिनोऽसंख्येय गुणा अयोगिनोऽनन्तगुणा काययोगिनो अनन्तगुणा सयोगिनो विशेषाधिका। द्वारम्। ५। एतेषां भदन्त। जीवानां सवेदकानां स्त्रीवेदकानां

बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसरीबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज गुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५ । बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउ काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १० । बादनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता असंखे० १२ । बादरआउका इया अपज्जत्तया असंखे० १३ । बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४ । सुहुमतेउकाइया अपज्ज त्तया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । सुहुमआउकाइया अप ज्जत्तगा विसेसाहिया १७ । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखि० १९ । सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३ ओर सुहुमनिगो[illegible]

---

[illegible] । पर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ५ । पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः ८ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्येयगुणाः ११ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः १२ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणाः १३ । अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधि[illegible]

सम्मामिच्छदिठीण य कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिठी, सम्म
दिठी अणतगुणा मिच्छदिठीअणतगुणा, दार ९ । एएसिण भते ! जीवाण आभिणिबोहियणाणीण
सुयणाणीण ओहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्व
त्थोवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असं० आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव
लनाणी अण० । एएसिण भते ! जीवाण मइअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभगनाणीणय कयरे कयरेहितो
अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणतगुणा ।
एएसिण भते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीण ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणी
ण मतिअन्नाणीण सुयअन्नाणीण विभगनाणीणय कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

---

ल्पोऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा सम्यग्मिथ्यादृष्टिस सम्यग्दृष्टिनोऽनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिनोऽनन्तगुणा द्वारम् । ९ । एतेषा भदन्त । जीवानामाभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मनःपर्यवज्ञानिना केवलज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विशेषाधिकौ केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणाः । एते षा भदन्त । मत्यज्ञानिना जीवाना श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा विभङ्गज्ञानिनो मत्य ज्ञानिन श्रुताज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषा भदन्त । जीवाना आभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मनःपर्यवज्ञा निना केवलज्ञानिना मत्यज्ञानिना श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा मनःपर्यवज्ञानिनोऽव धिज्ञानिनोऽसंख्यगुणाः आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विशेषाधिकौ, विभङ्गज्ञानिनो ऽसंख्येयगुणाः केवलज्ञानिनाऽनन्त

? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा , अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेदगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया , दार ६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोभकसाईणं अकसाईणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाई माणकसाई अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया, दार ७ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेसाणं अलेसाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखिज्जगुणा तेउलेसा संखिज्ज० अलेसा अणंतगुणा काउलेसा अणंतगुणा नीललेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया , दार ८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीणं

---

पुरुषवेदकानां नपुंसकवेदकानामवेदकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः पुरुषवेदकाः स्त्रीवेदकाः संख्येयगुणा अवेदका अनन्तगुणा नपुंसकवेदका अनन्तगुणाः सवेदका विशेषाधिकाः द्वारं ६ । एतेषां भदन्त ! जीवानां कषायिणां क्रोधकषायिणां मानकषायिणां मायाकषायिणां लोभकषायिणां अकषायिणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अकषायिणः मानकषायिणोऽनन्तगुणाः क्रोधकषायिणो विशेषाधिका मायाकषायिणो विशेषाधिकाः लोभकषायिणो विशेषाधिकाः सकषायिणो विशेषाधिका द्वारम् । ७ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सलेश्यानां कृष्णलेश्यानां नीललेश्यानां कापोतलेश्यानां तेजोलेश्यानां पद्मलेश्यानां शुक्ललेश्यानां अलेश्यानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः शुक्ललेश्याः पद्मलेश्याः संख्येयगुणाः तेजोलेश्याः संख्येयगुणा अलेश्या अनन्तगुणाः कापोतलेश्या अनन्तगुणा नीललेश्याः विशेषाधिका कृष्णलेश्या विशेषाधिकाः । द्वारम् । ८ । एतेषां भदन्त ! सम्यग्दृष्टीनां मिथ्यादृष्टीनां सम्यग्मिथ्यादृष्टीनां च कतरे कतरे

सम्मामिच्छदिठीण च कयरे कयरेहितो ग्रप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिठी, सम्म दिठी ग्रणतगुणा मिच्छदिठीग्रणतगुणा, दार ९ । एएसिण भंते । जीवाण ग्राभिणिबोहियणाणीण सुयणाणीण ग्रोहिणाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणय कयरे कयरेहितो ग्रप्पावा४ ? गोयमा । सव्व त्थोवा मणपज्जवनाणी ग्रोहिनाणी ग्रस० ग्राभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव लनाणी ग्रण० । एएसिण भंते । जीवाण मइग्रन्नाणीण सुयग्रन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो ग्रप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइग्रन्नाणी सुयग्रन्नाणी दोवि तुल्ला ग्रणतगुणा । एएसिण भंते । जीवाण ग्राभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीण ग्रोहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणी ण मतिग्रन्नाणीण सुयग्रन्नाणीण विभंगनाणीणय कयरे कयरेहितो ग्रप्पावा४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा

---

ल्पोऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा सम्यग्मिथ्यादृष्टिन सम्यग्दृष्टिमोनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिमोनन्तगुणा , द्वारम् । ८ । एतेषा भदन्त । जीवानामाभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मनःपर्यवज्ञानिना केवलज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिन श्रुतज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विशेषाधिकौ केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणाः । एते षा भदन्त । मत्यज्ञानिना श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा विभङ्गज्ञानिनो मत्य ज्ञानिन श्रुताज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषा भदन्त । जीवाना आभिनिबोधिकज्ञानिना श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिना मनःपर्यवज्ञा निना केवलज्ञानिना मत्यज्ञानिना श्रुताज्ञानिना विभङ्गज्ञानिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा मनःपर्यवज्ञानिनोऽव धिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विशेषाधिकौ, विभङ्गज्ञानिनो ऽसंख्येयगुणाः केवलज्ञानिनोऽनन्त

जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखिज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि
या विभंगनाणी असंखेज्ज० केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहि
या, विभंगनाणी असंखेज्ज०, केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणंतगु
णा, दार १०। एएसिणं भंते! जीवाणं चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदंसणीणं केवलदंसणीणय क
यरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंस
णी अणंतगुणा अचक्खुदंसणी अणंतगुणा, दार ११। एएसिणं भंते! जीवाणं संजयाणं असंजयाणं संज
यासंजयाणं नोसंजयाणं नोअसंजयाणं नोसंजया२ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा
जीवा संजयासंजया असंजया असंखेज्जगुणा, नोसंजता नोअसंजता नोसंजतासंजता अणंतगुणा, असंज
ता अणंतगुणा, दार १२। एएसिणं भंते! जीवाणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो

---

श्रुता ज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो द्वावपि तुल्यावनन्तगुणौ। द्वारम्। १०। एतेषां भदन्त! जीवानां [illegible]
दर्शनिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका जीवा [illegible] केवलदर्शनिनोऽनन्तगुणा अचक्षु
र्दर्शनिनोऽनन्तगुणाः। द्वारम्। ११। [illegible] संयतानामसंयतानां संयतासंयतानां नोसंयतानां नोअसंयतानां नोसंयतासंयता-
[illegible] गौतम! सर्वस्तोका जीवाः संयताः संयतासंयता असंख्यगुणाः नो संयता नो असंयता नो संयतासंयता अ
नन्तगुणाः असंयता अनन्तगुणाः। द्वारम्। १२। एतेषां भदन्त! जीवानां साकारोपयोगयुक्तानामनाकारोपयोगयुक्तानां च कतरे कतरेभ्योऽ
ल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका जीवा अनाकारोपयोगयुक्ताः साकारोपयोगयुक्ताः संख्येयगुणाः। द्वारम्। १३। एतेषां भदन्त! जीवानामाहार

ग्र्प्पाया४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, दारं १३ । एए
सिण नंते ! जीवाण आहारगाण अणाहारगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा
अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिण नंते ! जीवाण नासगाण अनासगाणय क
यरे कयरेहिंतो अप्पावा यज्रयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नासगा अना
सगा अणतगुणा, दार १५ । एएसिण नंते ! जीवाण परित्ताण अपरित्ताण नोपरित्ता नोअपरित्ताणय
कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणतगुणा
अपरित्ता अणतगुणा, दार १६ । एएसिण नंते ! जीवाण पज्जत्ताण अपज्जत्ताण नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता
णय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा
अणतगुणा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिण नंते ! सुहुमाण बादराण नोसुहुमाण नोबादराणय कयरे२

---

कानामनाहारकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा अनाहारका आहारका असंख्यगुणा । द्वारम् । १४ । एतेषां भद
न्त । जीवानां भाषकाणामभाषकाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा भाषका अभाषका अ
नन्तगुणाः । द्वारम् । १५ । एतेषां भदन्त । जीवानां परीतानामपरीतानां नो परीतानां नो अपरीतानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ।
सर्वस्तोका जीवाः परीता नोपरीता नो अपरीता अनन्तगुणा अपरीता अनन्तगुणा । द्वारम् । १६ । एतेषां भदन्त । जीवानां पर्याप्तानामपर्याप्ता
नां नोपर्याप्तानां नोअपर्याप्तानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा नोपर्याप्तका नो अपर्याप्तका अपर्याप्तका अनन्तगुणाः
पर्याप्तकाः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त । सूक्ष्माणां बादराणां नोसूक्ष्माणां नो बादराणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा

हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुहुमा नोबादरा, बादरा अणंतगुणा सुहुमा असंखेज्जगुणा, दार १८। एएसि णं भंते ! जीवाणं सन्नीणं असन्नीणं नोसन्नीणोअसन्नीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणंतगुणा, असन्नी अणंतगुणा। दारं १९। एएसि णं भंते ! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा, दार २०। एएसि णं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व

---

नो सूक्ष्मा नो बादराः, बादरा अनन्तगुणाः सूक्ष्मा असंख्यगुणाः। द्वारम् । १८। एतेषां भदन्त ! जीवानां संज्ञिनाम् असंज्ञिनां नो संज्ञिनो नो असंज्ञिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः संज्ञिनो नोसंज्ञिनो नो असंज्ञिनो अनन्तगुणा असंज्ञिनोऽनन्तगुणाः द्वारम् । १९। एतेषां भदन्त ! जीवानां भवसिद्धिकानाम् अभवसिद्धिकानां नो भवसिद्धिकनोअभवसिद्धिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका अभवसिद्धिका नोभवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका अनन्तगुणाः भवसिद्धिका अनन्तगुणाः। द्वारम् २०। एतेषां भदन्त ! धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया कतरे कतरेभ्यो अल्पा वा ४ ? गौतम ! धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयोऽपि तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुणः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणोऽद्धासमयो द्रव्यार्थतया अनन्तगुणः। एतेषां भदन्त ! धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्यो

ठयाए अणन्तगुणे धम्मत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दव्वठयाए अणंतगुणे । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाण पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुल्ला पदेसठयाए सव्व त्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणंतगुणे पोग्गलत्थिकाए पदेसठयाए अणंतगुणे अद्धासमए पदेसठ याए अणंतगुणा आगासत्थिकाए पदेसठाए अणंतगुणा । एएसिण भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठयाए पदे सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्म त्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वठयपदे सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोव एगे अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदे सठयाए असंखिज्जगुण। एतस्सण भंत ! आगासत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोव एगे आगासत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अनंतगुणा , एतस्सण भंते !

---

ऽल्पा वा ? गौतम । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायौ द्वावप्येतौ तुल्यौ प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकौ जीवास्तिकाय प्रदेशार्थतयानन्तगुणः पुद्गलास्ति काय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणो ऽद्धासमयः प्रदेशार्थतयानन्तगुण आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयानन्तगुण । अस्य भदन्त । धर्मास्तिकायस्य च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम सर्वस्तोक एको धर्मास्तिकाय प्रदेशार्थतया स एवानन्तगुणः । अस्य भदन्त ! अधर्मास्तिकायस्य द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम । सर्वस्तोक एकोऽधर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुण । एतस्य भदन्त ! आकाशास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतर कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोक एक आकाशास्तिकायो

जीवत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्व ठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा, एतस्सणं भंते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदसाभावा । एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएणं तिन्निवि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाएय एएणं दोन्निवि तुल्ला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सोचेव पदेसठयाए असंखेज्जगुणे

---

द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । एतस्य भदन्त ! जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवास्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्येयगुणः । एतस्य भदन्त ! पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्येयगुणः । अद्धासमयो [illegible] प्रदेशाभावात् [illegible] । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय [illegible] द्रव्यार्थतया सर्वस्तोकाः धर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थतया ऽसंख्येयगुणौ, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणः स एव प्रदेशार्थतयाऽसंख्येयगुणः । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणः स एव प्रदेशार्थतयाऽसंख्येयगुणः । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । [illegible]

अद्धासमए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसट्ठयाए अणंतगुणा दारं २१। एएसिणं भंते! जीवाणं चरिमाणं अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा दारं २२। एएसिणं भंते! जीवाणं पोग्गलाणं अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं सव्वपज्जवाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धासमया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दारं २३। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा

---

ना चरमाणामचरमाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका जीवा अचरमाश्चरमा अनन्तगुणाः। द्वारम् २२। एतेषां भदन्त! जीवानां पुद्गलानामद्धासमयानां सर्वद्रव्याणां सर्वप्रदेशानां सर्वपर्यवाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका जीवाः पुद्गला अनन्तगुणा अद्धासमया अनन्तगुणाः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणाः सर्वपर्यवा अनन्तगुणाः। द्वारम् २३। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका जीवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणास्त्रैलोक्येऽसंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकेऽसंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकास्त्रैलोक्ये अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोकेऽसंख्येयगुणास्त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्ये

तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखेज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०

---

गुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्याः त्रैलोक्ये [illegible] लोक [illegible] संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन [illegible] [illegible] लोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा [illegible] क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवाः ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा [illegible] अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा [illegible] क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके असंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेव्य ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके [illegible] संख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा

अहोलोए संखिज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ देवीओ उड्ढलोय उड्ढलोए
तिरियलोए असंखेज्जगुणाओ तेलुक्के संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाओ अहोलोए संखे-
ज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए
असंखेज्जगुणाओ तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा
अहोलोए असंखेज्जा०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासिणीओ देवीओ उड्ढलोए तिरियलोए असंखि०,
तेलुक्के संखेज्जगुणाओ अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जा०, तिरियलोए असंखिज्जा० अहोलोए असंखिज्जा०
खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जा०
अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जा०, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थो

---

अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वानव्यन्तरा देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोक-
तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो-
का वानव्यन्तर्यो देव्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके, असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्-
लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके
असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्क्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणास्त्रै-
लोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वैमानिका देवा ऊर्ध्व-
लोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः । देवाए

तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिणीओ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्जगुणाओ तिरियलोए संखिज्जगुणाओ खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ मणुस्सीओ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाओ उड्ढलोए संखेज्जगुणाओ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०

---

गुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या [illegible] लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्यः [illegible] लोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा [illegible] अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देव्य [illegible] असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकेऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोकेऽसंख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिन्यो देव्य ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोकेऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये संख्येयगुणा

सम्मुत्योषा एगिदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं खेज्जगुणा, तलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सम्मुत्योषा एगिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलायतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं खेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सम्मुत्थाया एगिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सम्मुत्थाया बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सम्मुत्थोया बेइंदिया अ पज्जत्तया उड्ढलोए । उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असं खेज्जगुणा, अहोलोए संखे०, तिरियलोए संखे० । खेत्ताणुवाएणं सम्मुत्थाया बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए उ ड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलो ए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सम्मुत्थाया तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

---

ऊर्ध्वलोके अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा तिर्यग्लोके संख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका त्रीन्द्रिया पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा अधोलोके संख्य

याऽ वाणमंतराऽ देवीऽ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाऽ तेलुक्के संखिज्जगुणाऽ अहोलोए तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए संखिज्ज० तिरियलोए संखिज्जगुणाऽ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए असंखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिणीऽ देवीऽ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाऽ तेलुक्के संखेज्जगुणाऽ अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज०, अहोलोए संखि० तिरियलोए असंखे० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाऽ वेमाणिणीऽ देवीऽ उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्जगुणाऽ अहोलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोयसंखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए असंखि० खेत्ताणुवाएणं

पार्श्व सर्वस्तोका वैमानिक्यो देव्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके [illegible] पाताले [illegible] गुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा [illegible] ... एकेन्द्रिया जीवा [illegible] ... विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया [illegible] ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा [illegible]

सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए। उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखे०, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

ख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणास्त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा अधोलोके संख्य

ए असं० । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं स
व्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व
त्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, अहोलो
ए तिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व
त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलो
यतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा
चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व

---

गुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोके सं
ख्येयगुणाः तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया अपर्याप्ताः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाश्चतुरिन्द्रिया जीवा अपर्याप्ताः ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अ

थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं०, तेलुक्के असं०, अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज० अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए असंखेज्ज०। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

---

अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाश्चतुरिन्द्रिया जीवाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रियाः अपर्याप्तका त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्ता ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोके संख्येयगुणा तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका पृथिवीकायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः, तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विससाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विससाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तलुक्के असंखज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउक्काइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

---

असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिकाः अपर्याप्ताः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिकाः पर्याप्तकाः ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाधोलोके विशेषाधिकाः [illegible] असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। [illegible] ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके [illegible] असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिकाः अपर्याप्तकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिकाः पर्याप्तकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः अधोलोकतिर्यग्

सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे
साहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि
सेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे
साहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,
तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखेज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणु
वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ता
णुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

---

लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तो-
का अप्कायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके अस-
ंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिका अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधि-
का तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका अप्कायि-
काः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्ये-
यगुणा अधोलोके विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके
असंख्येयगुणा त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः अपर्याप्तका

यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ता
णुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ
संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा , अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असंखेज्जगुणा

---

ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके ,असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके
विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः वायुकायिकाः पर्याप्तकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके, अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः, तिर्यग्लोके असंख्ये-
यगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः [illegible]
के अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः त्रैलोक्ये [illegible] विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः वनस्प-
तिकायिकाः अपर्याप्तकाः [illegible] तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके
असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः वनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशे-
षाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकाः

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया
उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगु
णा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्ज
त्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखे
ज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलुक्के
उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए
संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढ
लोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्ज
गुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहो
लोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगु

---

कायिका स्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणास्तिर्यग्लोके
असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तकास्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके
संख्येयगुणास्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तकास्त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्य
ग्लोके संख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः। द्वारम् २४। [illegible]। जीवानामायुष्यबन्धका
अबन्धकानां पर्याप्तानामपर्याप्तानां सुप्तानां जाग्रतां समवहतानामसमवहतानां सातावेदकानामसातावेदकानामिन्द्रियोपयुक्तानां नो इन्द्रियो

यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ता-
णुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ-
संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण
सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं
सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असंखेज्जगुणा

---

ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके
विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके, अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः, तिर्यग्लोके असंख्ये-
यगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका [illegible]
के अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः त्रैलोक्ये [illegible]

लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया
[illegible]माणुयाणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चत्थि-
मेण य दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छि-
मेणं असंखेज्जगुणा पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं
सव्वत्थोवा दव्वाइं तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए
असंखेज्ज० अहोलोए अणंतगुणाइं तिरियलोए संखेज्जगुणाइं दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा दव्वाइं अहोदि-
साए उड्ढदिसाए अणंतगुणाइं उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेणं दोवि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं दाहिण-
पुरच्छिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दोवि तुल्लाइं विसेसाहियाइं पुरच्छिमेणं असंखेज्जगुणाइं पच्चत्थिमेणं वि-
सेसाहियाइं दाहिणेणं विसेसाहियाइं उत्तरेणं विसेसाहियाइं। एएसि णं भंते। परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जप

---

विशेषाधिका उत्तरस्यां विशेषाधिका । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकानि द्रव्याणि त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणानि अधोलोकतिर्यग्लोके विशे-
षाधिकानि ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणानि अधोलोके अनन्तगुणानि तिर्यग्लोके असंख्येयगुणानि दिगनुपातेन सर्वस्तोकानि द्रव्याणि अधोदिशायां
ऊर्ध्वदिशायामनन्तगुणानि उत्तरपूर्वस्यां दक्षिणपश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यान्यसंख्येयगुणानि दक्षिणपूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यानि वि-
शेषाधिकानि । [illegible] । परमाणुपुद्गलानां संख्येयप्रदेशिकानामसंख्येयप्रदेशिकानामनन्तप्रदेशिकानां च स्कन्धानां द्रव्यार्थतया प्रदेशा-
र्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे २ । गौतम सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया परमाणुपुद्गला द्रव्यार्थतया अनन्तगुणाः संख्ये-
यप्रदेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका अनन्तप्रदेशिकाः स्क-

णा । दार २४ । एएसि णं भंते ! जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सातावेदगाणं असातावेदगाणं इंदियउवउत्ताणं नोइंदियउवउत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स बंधगा, अपज्जत्तया संखिज्जगुणा, सुत्ता संखिज्जगुणा, समोहया संखिज्जगुणा, सातावेदगा संखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता संखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असमोहया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया, दार २५ । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा अहो

---

पयुक्तानां साकारोपयुक्तानामनाकारोपयुक्तानां कतरे २ अल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? । गौतम ! सर्वस्तोका जीवा आयुषो बन्धकाः, अपर्याप्ताः संख्येयगुणाः, सुप्ताः संख्येयगुणाः, [illegible] संख्येयगुणाः, समवहताः संख्येयगुणाः, सातावेदकाः संख्येयगुणाः, इन्द्रियोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, अनाकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, [illegible] विशेषाधिकाः, [illegible] विशेषाधिकाः, असमवहताः विशेषाधिकाः, [illegible] जागराः विशेषाधिकाः, पर्याप्तकाः विशेषाधिकाः, आयुषः कर्मणः अबन्धका विशेषाधिकाः । द्वारम् २५ ॥ [illegible] सर्वस्तोकाः पुद्गलाः [illegible] अनन्तगुणाः अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकाः तिर्यग्लोके असंख्येयगुणाः [illegible] विशेषाधिकाः । [illegible] सर्वस्तोकाः पुद्गलाः [illegible] विशेषाधिकाः उत्तरपूर्वस्यां दक्षिणपश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या विशेषाधिकाः । दक्षिण पूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या विशेषाधिकाः पूर्वस्यां असंख्येयगुणाः पश्चिमायां विशेषाधिकाः दक्षिणेन [illegible]

कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पग्गला दव्वठ्याए असंखेज्जपएसोवगा ढा पग्गला दव्वठ्याए संखिज्जगुणा असंखिज्जपदेसागाढा पोग्गला दव्वठ्याए असंखिज्जगुणा पदेसठ्याए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठ्याए संखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठ्याए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसठ्याए असंखेज्जगुणा दव्वठपदेसठ्याए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठयपदेसठ्याए संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वठ्याए संखज्जगुणा तचेव पएसठ्याए संखेज्जगुणा असंखिज्जपएसोगाढो पोग्गला दव्वठ्याए असंखेज्जगुणा तचेव पएसठ्याए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगसमयठितीयाणं संखिज्जसमयठितीयाणं असंखिज्जसमयठितीयाणय पोग्गलाण दव्वठ्याए पदेसठ्याए दव्वठपदेसठ्याए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पोग्गला दव्वठ्याए संखज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वठ्याए संखज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठ्याए

---

प्रदेशार्थतया सङ्ख्यातप्रदेशावगाढा पुद्गला प्रदेशार्थतया सङ्ख्येयगुणा असङ्ख्यात प्रदेशावगाढा पुद्गलाः प्रदेशार्थतया असङ्ख्येयगुणा द्रव्यप्रदेशार्थ तया सर्वस्तोका एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सङ्ख्यातप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सङ्ख्यातप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्र व्यार्थतया सङ्ख्येयगुणा ते चैव प्रदेशार्थतया सङ्ख्येयगुणा असङ्ख्यातप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असङ्ख्येयगुणास्त चैव प्रदेशार्थतया असङ्ख्ये यगुणा । एतेषां भदन्त ! एकसमयस्थितिकानां सङ्ख्येयसमयस्थितिकानामसङ्ख्येयसमयस्थितिकानां पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्र देशार्थतया कतरे२ ? । गौतम ! सर्वस्तोका एकसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया सङ्ख्येय समयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया सङ्ख्येयगुणा अ सङ्ख्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्रव्यार्थतया असङ्ख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया सङ्ख्येयसमयस्थिति

देसियाण असंखिज्जपदेसियाण अणंतपदेसियाणय खंधाण दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे२ हिंतो अप्पा वा४ गो० । सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा सखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए परमाणुपोग्गला अणंतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए तेचेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वट्ठपदेसट्ठयाए अणंतगुणा संखिज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा तेचेवय पदेसट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगपदेसोगाढाण संखज्जपदेसोगाढाण असंखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाण दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए

[illegible]

अह भंते ! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया असं० सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे देवा असंखेज्जगुणा सणंकुमारे कप्पे

---

अथ भदन्त ! सर्वजीवाल्पबहुत्वं महादण्डकं वर्तयिष्यामि सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या मानुष्यः संख्यातगुणा बादरतेजःकायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा अनुत्तरोपपातिका देवा असंख्येयगुणा उपरितनग्रैवेयका देवाः संख्येयगुणा मध्यमग्रैवेयका देवाः संख्येयगुणाः अधस्तनग्रैवेयका देवाः संख्येयगुणा अच्युते कल्पे देवाः संख्येयगुणा आरणे कल्पे देवाः संख्येयगुणा प्राणते कल्पे देवाः संख्येयगुणा आनते कल्पे देवाः संख्येयगुणा अधः सप्तम्यां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः षष्ठ्यां तमायां पृथिव्यां नैरयिका असं० सहस्रारे कल्पे देवा असंख्येयगुणा महाशुक्रे कल्पे देवा असंख्येयगुणाः पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः लान्तके कल्पे देवा असंख्येयगुणाः चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः ब्रह्मलोके कल्पे देवा असंख्येयगुणाः तृतीयस्यां वालुकाप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः माहेन्द्रे देवा असंख्येयगुणाः सनत्कुमारे कल्पे देवा असंख्येयगुणाः द्वितीयस्यां शर्कराप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः सम्मूर्छिममनुष्या असंख्येयगुणाः ईशाने कल्पे देवा

असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोग्गला पएसठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए असंखिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिइया पुग्गला दव्वठपएसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए सखेज्जगुणा ते चेव पदेसठयाए सखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा ते चेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिण भंते ! एगगुणकालगाण संखिज्जगुणकालगाण असंखेज्जगुणकालगाण अणंतगुणकालगाणय पोग्गलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणियव्वा, एव सखेज्जगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वण्णरस गंधा भाणियव्वा, फासाण कक्खडमउयगरुयलहुयाण जहा एगपदेसोगाढाण भणिय तहा भाणियव्व अवसेसा फासा जहा वण्णा भणिया तहा भाणियव्वा दार २६ ॥ ॥ ॥ ॥

---

[illegible] पुद्गला द्रव्यार्थतया सव्वयगुणा असंख्येयसमयस्थितिका। पुद्गला: प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोका एकसमयस्थितिकाः पुद्गला द्रव्यप्रदेशार्थतया संख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा [illegible] पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणास्त एव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा । [illegible] गौतम । यथा परमाणु पुद्गला [illegible] तथा भणितव्या [illegible] भणितव्यं द्वारम् । २६ ॥

रिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पदिया पज्जत्ता विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्ता विसेसा। पंचिंदिया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

---

विशेषाधिका द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषा०। पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तकाः विशेषाधिका। त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका पर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरनिगोदा पर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० बादराप्कायिका पर्याप्तका असं० बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका असं० बादरतेजःकायिका अपर्याप्तका असं० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तका असं० बादरनिगोदा अपर्याप्ताः असं० बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असं० बादराप्कायिका अपर्याप्तका असं० बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० सूक्ष्मतेजःकायिका अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मतेजःकायिका अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्माप्कायिका पर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्तका विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असं० सूक्ष्म

देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० समुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ संखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० चउ

---

ख्ये० ईशाने कल्पे देवाः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवाः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देव्यः संख्येयगुणाः भवनवासिनो देवाः असंख्येयगुणाः भवनवासि-
नि देव्यः संख्येयगुणाः । एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः खचरपञ्चे-
न्द्रियतिर्यग्योनिकाः ( स्त्रियः ) संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ( स्त्रियः ) संख्ये०
जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ( स्त्रियः ) संख्ये० वानमन्तरा देवाः संख्येयगुणाः वानमन्तर्यो
देव्यः संख्येयगुणाः ज्योतिष्का देवाः संख्ये० ज्योतिष्का देव्यः संख्ये० खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य-
ग्योनिकाः नपुंसकाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तकाः

रिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पंदिया पज्जत्ता विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्ता विसेसा । पंचिंदिया अपज्ज
त्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया
अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्ज
त्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज
गुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरी
रबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढवि
काइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरताउकाइया अप
ज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

---

त्वेनाधिका द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका । त्रीन्द्रिया अप
र्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणा बादरनिगोदाः पर्याप्त
का असंख्येयगुणा बादरपृथिवीकायिकाः अपर्याप्तका असंख्ये० बादराप्कायिकाः पर्याप्तका असं० बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका असं० बादरतेज
कायिका अपर्याप्तका असं० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तका असं० बादरनिगोदा अपर्याप्ताः संख्ये० बादरपृथिवीकायिका अपर्या
प्तका असं० बादराप्कायिका अपर्याप्तका असं० बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्ये० सूक्ष्मतेजःकायिका अपर्याप्तका असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिका
अपर्याप्तका विशेषाधिका सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मतेज कायिका अपर्याप्तका असं० सूक्ष्म
पृथिवीकायिका पर्याप्तका विशे० सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तका विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असं० सूक्ष्म

देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० समुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ संखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्जगुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० चउ

---

कल्प० ईशाने कल्पे देवाः असंख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवाः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देव्यः संख्येयगुणाः भवनवासिदेवा असंख्येयगुणाः भवनवासि देव्यः संख्येयगुणाः । एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ( स्त्रियः ) संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषा असंख्येयगुणाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ( स्त्रियः ) संख्ये० जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ( स्त्रियः ) संख्ये० वानव्यन्तरादेवाः संख्येयगुणाः वानव्यन्तर्यो देव्यः संख्येयगुणाः ज्योतिष्का देवाः संख्ये० ज्योतिष्का देव्यः संख्ये० खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्येयगुणाः जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तकाः

ऊिसेयणाकाया पजवेहिकायाजेहियजिहिय ७ जोजोगउच्चपरिणामउच्चदसण चरित्तच्छेयारो ठठाणत्थपसरोवा
यि ८ मउजनायपरिणउ रागदोसघपयणएऊण तिविहेणउद्धरिज्जा गुरुपामूलेच्छगूहितो९ नवससत्थंत्रविसव दुप्प
ठतुम्हकुणइघपालो अतघतुप्पउम्र सप्पुम्हएमाइउकुहो १० जंकुणजायसम्र च्छणुहियउसमठकालंमि दुसहघोहीयत्त
च्छपतससारियत्तघ ११ तोउद्धरतिगारव रहियामूलपुणघलयाण मिच्छादसणसल्ल मायासल्लच्छयाणच१२ रागेणघ
दोसेणच जएणहासेणनइएमाएण रागेणायक्केणव घत्तीइयराजिउगेण१३ गिहिहिज्झायपाऊिएण ससयस्कपरघम्मि
उवसग्गेण तिरियाजोणिगएण मुहिमपुसोवसग्गेण१४उवहीयद्दघानियऊीयइ वसहसावपयातिएणघपरेण च्छप्पा
णजएण कयपरसलदाणुघत्तीए १५ सहसक्कारमणाजोग उच्चपवमाहिगारेण सन्निकरणेविसोही पुणागारोययव्व
सा १६ उक्कसमालोइसो करणपरिणामजोगपरिहरुो सोपयणुपइक्कम सुग्गइमग्गाच्छत्तिमुहेइ १७ उघहीनिय
ऊिपइठो साहिजोकुणइसोगइकायो साइपासिकुवसो करेइघतुल्लियमूढो १८ च्छालोयणाइदेसे दसदोगाइघपणे
परिहरमो तम्हाच्छाउाइज्जो सायमुतूणनिसोव १९ जेमेजाणंतिजाणा च्छवराहाजेसुठाणंसु तेहीच्छालोयमी उवहि
दुसहुजानेल २० एवठमाहिपस्साविकिच्छालोपठमिसुद्धजायस्स जाकिथिविविहमरियं आइसक्कारेणच्छुद्धंस, २१ च्छा
याइउतहविसो गारवपरिकुंचणामयात्रिकुणा जिणदेसियस्सधीरो सहुरगोमुत्तिमग्गस्स २२ च्छासेयणाचणमाणा

प जंदिठंधायरघसुहमध ठक्सहाउलग घक्कजणध्भुमसस्सेवी २३ घालोयणाहदोसे दसदुग्गहघहणायसुतूणं घालोइजसुतिहिठ गारथमायामयविक्कणो २४ततोपरियागघल घागमघकालकरणघ पुरिसजाघवतहा खित्त परिसवणविहिघ २५ जोगपायठित्ततम्मयत्थाठ णघतियध्यायरिया दसणनाणचरित्ते तवेयकुणमप्पमायति २६ घुगसणउमोयरिया यत्तिस्येउघ्मरसस्सपरिघ्माठ कायससपरिकिले सोठठोसलीणयावेघ २७ विणएवेयावच्चे पायछित्तेयिघगसज्झाए घतितरमवविहं घ्कठज्झाणवियाणाहि २८ घारसविहम्मितवे घतितरयाहिरेकुसलदिठे न विधत्यिनविय होहीसज्झायसमतघोकम्म२९जेपयणुजत्तपाणासुय हेउतेतवस्सिणोसमए योघतवोसुयहीणा घाहिरमोसोवुहाहारो ३० ठठठमदसमदुवाले सेहिघ्घघकसुयसजासोही तत्तोघकतरगुणिया हविजाजिनियस्सनाणस्स ३१ कत्तकक्षपियरघा हारोपरमितउघ्पसोघ नयस्समणोपारण पयक्कघकतरोयक्काविहोप ६२ एगाहेणतवस्स हविजनात्थिस्यससउकोह एगाहेगसुयहारो नहोइधतपितुरमाणो ३३ सोनामध्मपसणभघो जेणमणोमगुलनतेह जणनहदिपहाणीजे णयजोगानहायति ३४ जघ्मन्नाणीकमस्सवेह घक्कघ्याहुवासाकाफीहि तनाणातिहिगुत्तो खाघहऊसासमित्तेण ३५ नाणध्याउमाणनाणी णनाणजोगद्वाण कोनिजरतुलिज्जा चरणंयपरक्कमठाण ३६ नरपेणघजाणिज पजिजाइयकरणिज्जं नाणीजाणहकरण कज्जमकज्जपघज्जिठ ३७ नाणसहियचरित्त नाणसएघ्मागं

गुणसयाणं एगजिणावयणाणो नत्थिपरिष्ठगिणाणाए ३८ नाणसुसिक्कियय नरेणलङ्गणदुलहंमोहिं जोइत्थइनाउ
से जीवस्सविसोहणामग्ग ३९ नाणपसज्जनावाणअती सद्धजीवलोअमि तम्हानाणकुसलेण सिक्कियद्वपयत्तेण ४०
नक्कासङ्गामासउं नाणछरहवजासियलोए सेघन्नासेपुरीसा नाणायपरिसुज्जसाय ४१ यघमुरकगहरागयंच जीवा
यजीवलोयमि जाणतिसुयसमिद्धा जाणसासणचेइयविहणू ४२ जहंसुयकुसुयाणसहुए यत्थेसुपुत्थाणिसुजाण नाणे
पजोगवयरी सिद्धपिगसुसिद्धेसु ४३ किंइमालस्यर खठरयरवसुदरसरवा घदमियसहुलोगा सुकुसुयसुयसुइपा
सयति ४४ थंदाउनीइममहायज्ञ मुयमहानीइजिणवयण जवोऊणसुत्रिहिया मरतिससारकसार ४५ चउदसपुव
धारायं उहिमाणीणकयलोयंच लोगुत्तमपुरिसाणते सिनाणसुजिनाण ४६ नाणेणविणाकरण नहोइनाणपिकरण
हीणपु नाणेणयकरणेणपा दाहियिसुक्कयंहोइ ४७ दसठसुलमहाण मिविवरमेगोयिसुयसीलसपणो मोहसुयसी
विग्गो लकाहिसिमाणएवयणामि ४८ समहासुयमिलोगो कायवोहोइअप्पमत्तेय जेणपारपरपिय दुक्कसमुद्दाउ
भारेइ ४९ परमत्थमिसमिसुदिट्ठे पाविणठेसुयसजमगुणेसु उरयहगह्नयिसुद्धा सरीरसारेविणठामि ५० पाविर
दियंजसमक पंचहिसमिइहिंतिहिगुत्तीहिं वयकुसहुयागदोसे सस्सपरिसंहमहसुठा ५१ वज्जोसमरिमाविपपारि
मुठइमिभाणाकयइ किपुनसमदिठी मरणायमासिवहंसो ५२ तम्हायुमहादासु विफाउंजउकामपयत्तेण सम

म्मिचरित्ते करणमिच्छमाएमाएह ५३ जा अयसुहंनतासह जा अयजोगानतेपयपत्तेग सह्वावजावमहाय इंदियजो
गाअपरिहीणा ५४ जावयकंममुक्क आयरियाजावअखियनिजावगा इहीगारवरहिय। नाणचरणदसणमिरया ५५
ताऽस्समकाउजे सरीरनिक्खमणविउपसत्थ समयपक्कागाहरण सुविहियहठनियमजात्त ५६ हदियणछासद्धाजह
यजोगापहुदियाछम मम्हाणयनाउ विहरहतअसजमुजमा ५७ तातेएयनाऊण उवायनाणदसणचरिम धीरपुरीसा
णुचिन्न कारतिसोहिसुयमामह्वी ५८ अन्यमरयाहरिय अहत्तेकाऊगअप्पणो गहि मित्रिहेणतिविहकरण तिविहे
कालेंतियनत्ताशा ५९ परिमाजोगसुरुा उहिअिवगच्छगणयिसगोय सज्झायउवस्सयवजाणव विगइअिमेगच ६०
उग्गमउप्पायणए गणाअिसुहेवपरिहरणसुहि सहिहिसतिवयमि यतवंयाअसुकरणय ६१ एवकरतुसाहिनअसार
यसलिलतहमअवगलसत्ताआ कमकालदसपज्जव अत्तपरजोगकरणय ६२ तानकयासोहीया पाच्छित्तकासिएजहा
याम उप्फावश्विन्नगामिय तवमिजत्तामहासम्रा ६३ तोइंदियपरिकम्म करितोअसयसुहनिग्गहसमत्या जयणाह
अप्पमत्ता रागहोसयपणुयंता ६४ पुछमकारियजोगा समाहिकामोत्रिमरणकालमि नत्रवतिपरीसह सहाविसयसु
हपमोहगाअप्पा ६५ इंदियसुहसाउलहो घारपरीसहपराइयपरसो अकयघरिकम्मकीवो मुसहआराहणाकाले ६६
याईसिइंदियाइ पुछिनुसियामियप्पयाराई अकयपरिकम्मकीय मरणंसुअसपउत्तपि ६७ आगममयप्पत्तावप्र इंदि

पसहसहलोलुयापउहस्स जहाथिमरणेसमाही कालनसाहोइधक्कापाण ६८ असममपुपथिमुणी ०चिमुकपपरिकम्म परिहस्यो सणमानियमपहन्न सुहमसुहिउसमणेह ६९ नयपतिकिंचिकाउ पुबिसुकपपरिकम्म भोमम्म मोहपवीप इयमु घइयलपरायुयामरणे ७० तोनत्रिपुत्रुघरमा जयणाएओगसगहविहीहि मानेकर्मानरमण धारिनमहनाव णाहेउ ७१ आपुहनात्रियाकारहोह सुहघरणदमणेयक्कालाहा साहोहमीयनूपा कपपरिकम्मम्ममरणंमि ७२ स यिहिकजणेहि सहसुकसाएसु अनिग्गहपरमोसयाहेहिं ७४ सहेसेयपणीए निरुहेकणपेतलुकाहि अमयरेसुवहा पए संलिहअप्पगकमसो ७५ सलेहणायकुसिहा अजिंतरियायकम्मिराबेय अजितरियकसाएपाहिरियाहोइपसरीरे ७६ छम्मासठप्पायगए सपाविसुहेणासुकम्पपीवं मियविरसलुकलुहेणो सुबहुपुसुपुप्पाणि ७७ उसीणाली बेहि यिहिरविकम्मिया हृदियाविम्मियुतियाहेहि ७८ असुविहाइएसणाहिय विविहेहिं अजियहेहिं उग्गेहिं कमविराहि कोहीमसलिहसीरे ८० णविविहाहियपक्किमाहि वयलबीवियजहय वगहोहसुहलाउ विनकाहिंसीज उवहिंतमि ८१ कमासियाजहमा [illegible]

समतुयालसेहिं नमेहिंविगकठेहिं मियलज्झकंआहार करेहिआयंबिलविहिणा ८३ परिवठिउयहाणे रहाविछिंरा
चिअफासलिकडीअ सलिहियतणुसरीरो अप्परउमुणीनिच्च ८४ एवसरीरसलेहण। विहिबहुहाविहिपिफासितो
अवसाणविसुद्धि खणपिसोमापमाइओ ८५ अवसाणविसुद्धी विअज्जिय।जेतवस्सिगहमयि कुसुतियालतेसा न
होइसाकेवलसुठो ८६ एयसरागसलेहणा विहिंजईसमायरइ अप्पसजयमई सोपावइकेवलसुद्धी ८७ निस्सिना
फासघणा सरीरसलेहण।विहीए इत्तोकसायजोगा असप्पविहियरमगुठ ८८ कोहस्समाइमाण मद्दवयाअज्जवेण
मायच सतोसेणयलोह निज्जिणिचत्तारिविकस्साए ८९ कोवस्सयमागस्स यमायालोनेसुझानएएसिचहु ९० जाय
तिकेइठाणा उदीरगाझ्तिफुकसायाण तउसयाविज्झितो वियुमसगोमुणीविहरे ९१ सतोवसतधिइम पसहविहि
वसमाहियासतो निस्सगयासुविहिया सलिहमोहेकसाएय ९२ इट्ठाणिठेसुसयासद्द फरिसच्छगंधेहिं सुहदुक्खनि
स्विसेसो जियसगपरीसहोविहरे ९३ समिइसुयंचसमिउ जिणाहितएदिएमुठु तिविहिगारवेहि रहिउहोइतिगुत्तो
यदंडेहिं ९४ सन्नासुआसवे सुअइहेअतयिसुरूप्पो रागद्दोसपवचे निज्जिणिउसघुणोजतो ९६ कोदुक्खंपावि
ज्जाकस्सय सुक्खेहिविमहउझ्ज्जा कोविनलज्जिमुक्क रागद्दोसोअहनदुज्जा ९७ निघतकुणइअमितो सुठुविराहि
उसमत्थोवि जदोविअनिग्गहिया करितिरागोयदोसोय ९८ तसुयहरागदोसेयेय चितइअप्पणोनिच्च जंताहिंइ

पसुहपुहलोलुयापउरस्स अड्डयिमरणेसमाही डज्झनसाहोइयड्डयाण ६८ सुसमसमुपयिमुणी पहिसुकयपरिकम्म परिहस्यो सजमानियमपडन्न सुहमसुहिउसमवेइ ६९ नवयतिकिंचिकाउं पुव्विसुकयपरिकम्मजोगस्स सोइंपरीस हसमु घडमलपराइयामरणे ७० तोतनिपुव्वचरणा जयणाएजोगसगहविहीहि तोतेकरतिदसण चारित्तसझनाय णाहेउ ७१ जापुवनाणियाकारहोइ सुइचरणदंसणेघडलाहा साहोइथीपन्नया कयपरिकम्मस्समरणमि ७२ स फासहियरित्त नुमापसुहसीलयपडतेण सम्मपरीसहचत्त सुहियासमोधिइयलेण ७३ सहेरुवेगघरसेय फासेयमु च्छिइजणेहि सहसुकसाएसु सुनिग्गहपरमोसयाहेहि ७४ सहिसेयपणीए निरुहेउमयतलुक्किहि सुमयरे गुवहा णण सलिहसुप्पगकमसो अप सलिहणायुविहा सुजितसरियायकहिराधेय सुजितसियकसाए धाहिरियाहोइयसरीरे ७६ उग्गमसुप्पायमए सणासिसहं णसुणप्पणेवं मियविरसलुस्कलूहेणो दुसुलपुमससुप्पाय ७७ सहीणोहीणेहि य सुहयनग्गतयडुमाणेहिं सलिहसरीरमेय साहारविहिपयणुयंतो ७८ समोसुणपुव्वेगा हारंउवहिं तोकुडयएसेण विहतसोकमोहिय इदियविक्किपलिप्पियाईहि ७९ विविहाईएसणाहिय विविहेहिंसुजियहेहिंउमोरिंसु संजुमाहिमाहि सीसेहायडसलिहसीरि ८० विविहाहिंयपडिमाहिं यमलसीरियमज्झय संगाहीहमहि [illegible] जिनधाहमीज हक्कमस णुकुहतमि ८१ हुमासिमासहमा उक्कोसायारिसवनारसाइ सुायाबिलमहेसी तस्य पउक्कोसयावित ८२ सदहमस

समदुवालसेहि नसेहिंचिमकठेहि मियलञ्जकंआहारं करेहिआयथिलबिहिणा ७३ परिवठिउयहाणे रुक्खाविठिया
थियफासलिक्कीढ सलिहियतणुसरीरो असप्परउमुणीनिञ्च ८४ एवसरीरसलेहणा विहियञ्जाविहिपिफासितीं
अञ्जवसाणविसुद्धि स्वणपितोमापमाहत्यो ८५ अञ्जवसाणविसुद्धी विवज्जिय जेतवथिगहमथि कुञ्जतियाललेसा न
होइसाकेवलसुठो ८६ एयसरागसलेहणा विहिजईसमायरइ अञ्जप्पसजयमई सोपावइकेवलसुद्धी ८७ निस्सिता
फाउयञ्जा सरीरसलेहणाविहीए इत्तोकसायजोगा असप्पाथिहिंयरमगुठ ८८ कोहस्वमाइमाण मद्दवयाअञ्जवेण
मायय सतोसेणथलोइ निज्जिणिषत्तारिविकस्साए ८९ कोयस्सयमाणस्स यमायालोजसुथानएएसिवइ ९० जाघं
सिकेइठाणा उदीरगाझ्तिरूकसायाण तउसयाविज्ञतो वियुञ्चसगोमुणीविहरे ९१ सनोवसतधिइम पसइविहि
वसमाहिपाससो निस्सगयासुविहिया सलिहमोहेकसाएय ९२ इट्टाणिठेसुसयासद्द फरिसरूवगंधाहिं सुहदुक्खनि
व्विसेसो जियसगपरीसहोविहरे ९३ समिइसुयसामिउ जिणाहिसएदिएमुहु तिथिहिगारवेहि रहिउहोइतिगुत्तो
यदंडेहि ९४ सन्नासुआसवे सुआइदइअर्तथिसुरुप्पो रागद्दोसपयचे निज्जाणिउसञ्जगोजसो ९६ कोदुक्कपावि
ज्जाकस्सय सुक्काहिंविमइउज्जा कोविनलभिज्जमुक्क रागद्दोसोअइनदुज्जा ९७ मिघतकुणइआमितो सुहुविराहि
उसमत्योयि जदोयिअनिग्गहिया करिंतिरागोयदोसोय ९८ तसुयहरागदोसेयेय चिंतहअप्पणोनिञ्च जंतेहिह

यसुहसुहलोलुयापउमस्स जहृथिमरणेसमाही जाजनयाहोइयक्सयाण ६८ असमत्तसुयथिसुणी पद्धिसुकयपरिकम्म
परिहस्थो सजमानियमपइन्न सुहमग्गहिउसमणेह ६९ नयसिकिंचिकाउ पुन्निसुकयपरिकम्मजोगस्स स्रोहंयरीस
हयमु चहयलपराहयामरणे ७० तोनविपुन्नचरणा जयणाएजोगसगहविहीहि तोतकरासिद्धमण चरित्तसहनाव
योहिउ ७१ जापुन्नजाव्रियाकारहोइ सुहचरणदसणेधज्ञलाहा साहोसुमीयन्नया कयपरिकम्मस्सम्मरणमि ७२ त
फामेहिवरिसं नुमपिसुहसीलयपञ्जतेण समपरीसहचत्त अहियासभोधिइयलेण ७३ सद्देरूवेगधरसेय फासेयमु
यिहिअसणेहिं सव्वेसुकसाएसु अनिग्गहपरमोसयाहोहि ७४ सव्वेसेयवणीए निज्जाहेऊणयतलुज्जाह अभयरेसुयहा
येण संलिहेअप्पंगकमसी ७५ सलेहणायदुविहा अभितरियायबाहिराचेव अभितरियकसाए बाहिरियाहोइयसरीरे
७६ उग्गमउप्पायणए सणाविसुद्धं अहुणपुण्णेणं मियविरसलुक्खलूहेणो दुमलपुगलअप्पाण ७७ हसीणोझीणेहि
य अहिंयणगोतपरुमाणेहि सलिहसरीरमेय आहारविहिपयणुयंतो ७८ तसोअणुपुव्वेणा हारंववहिंतोसुवएसेणा
विहरंवाकम्मेहिय इंदियविक्कियलिंयाहएहिं ७९ विविहाइंएसणाहिय विविहेहिंअभिग्गहेहिंउग्गोहिं, सुसंजमविराहिं
ती बहुययंडसलिहसरीरं ८० यंचाविहाहिंयपुनिमाहिं [illegible] यिनयाहसीज हक्कमस
[illegible] ८१ [illegible] उक्कोसायारिसेव [illegible] अयवियलमहेसी तस्यपउक्कोसयायिसि ८२ छठठमद

समतुयालसेहि जसेहिंचित्तकठेहि मियलज्ञकथाहार करेहिंश्रायविलथिहिणा ७३ परिवठितयहाणे राहुरुविराँ
यियरुफासलिक्कीते सलिहियतणुसरीरो श्रुसप्परउमुणीनिम्न ८१ एयसरीरसलेहणा विहियजाविहिपिफासिसो
श्रम्भवसाणविसुद्धि स्वणपितोमापमाइल्यो ८५ श्रम्भवसाणविसुद्धी वियज्जिय।जेतवयिगहमयि कुसुंतियाललेसा न
होइसाकेवलसुद्धा ८६ एयसरागसलेहणा विहिजईसमायरइ श्रम्भप्पसजयमई सोपावइकेवलसुद्धी ८७ निखिना
फासयन्ना सरीरसलेहणाविहीए इत्तोकसायजोगा श्रुसप्पाविहिंयरमपुठ ८८ कोहरमाइमाण मद्दवयाश्रज्जवेण
मायथ सतोसेणयलोह निज्जिणिपसारिधिकस्साए ८९ कोयस्सयमाणस्स यमायालोनेसुयानएएसिपइ ९० जाय
तिक्केइठाणा उदीरगाक्कातिन्नकसायाण तउसयाविज्जितो वियुन्नसगोमुणीविहरे ९१ सनोवसतधिइम पसहविहि
वसमाइयासतो निस्सगयासुविहिया सलिहमोहेकसाएय ९२ इट्ठाणिठेसुसयासद्द फरिसन्नवगंधाहि सुहदुखनि
म्भिसेसो जियसगपरीसहोविहरे ९३ समिइसुयंचसमिउ जिणाहितएदिएमुहु तिविहिगारवेहि रहिउहोइतिगुत्तो
यदर्फोइ ९४ सन्वासुश्रासवे सुश्रष्ठेरुद्देश्रुतविसुद्धप्पो रागद्दोसपवचे निज्जिणिउसन्नुणोजतो ९६ कोदुरकपावि
ज्जाकम्मय सुस्कांईविमइउज्जा कोविनलन्निज्जमुरक रागद्दोसोजइनदुज्जा ९७ नियतकुणइश्रमित्तो सुठुविराह्रि
उसमत्थोवि जदोविश्रनिग्गहिया करिसिरागोयदोसोय ९८ तसुयहरागदोसेयेय चितहश्रुप्पणोनिच्च जतेहिह

य्यहगुण सधुक्कइघक्कतरंपत्या ११ इहलोएच्छायासच्छय सधकारिसिगुणविणासंच परसंतियपरलोए सारीरमणोगए
दुक्के २०० धिहीच्छहोच्छकज्जं नाणतोविरागठोसहि फलमउलकज्जुयरस तचेवनिसेवएजीवो १ तजइहठसिगतुती
र जसायस्सघोरस्स तोतघसजमज्जनसु त्रिहियागिणहाहितूरंतो २ अज्ञानयकरदोसाण समससंरिसगुणत्रिणासाम
नज्जघसमागतस्स रागद्दोसाणपावाण ३ जनलहइसमम्न लरूणविजनहोइवेरग्ग विसयसुहेसुयरज्जइ सोदोसोरागदो
साण ४ मनुसयसहस्सदुलहे जाइजरामरणसागरुम्मारे जिणवयणमिगुणा गरस्खमविमाकाहिसिपमाय ५ दसेहि
पस्साविहिय समससगाहिसुहुविजयच्छ निप्पणयपेमरा गोजइसम्मेइमुरकस्यं ६ एवकयसलस च्छज्जितरयाहिरामि
सलेइ संसारमुरुयुरो च्छनियाणोदोस्सविहराहि ७ एवक्काहियसमाही तहविहसस्सगकरणगजीरो च्छाउरपच्चक्का
णं अणुपालिसीहयलोमण ८ नज्जसपुणरुसविही जोसवेगकरेइजणती च्छापरपच्चक्काणे तेणकहाजोइयाजस्सो १
एसकाघेमिपणामति च्छरणच्छणुत्तगइगम सव्वसिघजिणाण सिद्धाणसंजयाणय १० जंकिंचिदुच्चरियंत महंनिंदा
मिसव्वाघेण सामाइयमचिविघिह तिविहेणकरेमणागारं ११ च्छज्जितरंचतह बाहिरंचउवहीसरीरसाहारं मणेणां
मुक्काणि ... ोहसिसिएकरमि १२ ... [illegible] ... रागिद्दोसवियिहीमक्रमसगन्नावचप
च्छहाम १३ रागेणवदोसेणव च्छहवा च्छकयेतुपडिनिसंघेण जामेकिंचिविजाणइ तमहंतिविहेणखामेमि १४ सव्वेसु

पदम्मेसुय हिउएहिंनिम्ममम्माए आलंबणचआया दसणनाणेचरित्तेय १५ आयापच्चक्खाणे आयामेसंजमेय जोगे पंचक्खाणे जोगेसोप चक्खाणेयम्मिय जोगापच्चक्खाणे आयामेसंजमेप जोगे निंदामी
मी जिणवयणविहिविलग्गा अवसंसुविहिंतुदंसेहिं १६ मूलगुणउत्तरगुणे जेमेनाराहियापमायण तेसव्वेनिंदामी
पडिक्कमेआगमिस्साण १७ एगोसयकलाइआयामे नाणदंसणलक्खो सजोगलक्खणाखलु सेसामेबाहिराभावा
१८ पजाणिदुहसयाइ संजोगस्सायएणजीवण तम्हासंजोगसंबंध १९ अस्संजममणाण मिच्छत्त
सव्वंभमम जीवेसुअजीवसुय तंनिंदेतंचगरिहामि २० परिजाणेमिठत्त सम्मअस्संजमअकरियम सव्वेवेधममत्त
म यामिसव्वसमेमि २१ जमेजाणतिजिणा अवराहाजेसुजेसुठाणेसु तहआलोएमी उवठिउसव्वभावेण २२ उ
प्पन्नाणुप्पन्ना मायाअणुमग्गउनिहतव्वा आलोयणनिंदणगरिहणा हिनपुणातियाबिइय २३ जहबालोजपंतो कज्ज
मकज्जंचउज्जुयंभणइ तंतहआलोयइ मायमुसूणविसस २४ कयपावोविमणुस्सो आलोइयनिंदियगुरुसगासंमि निस्स
संथार उवहुआराहउहाइ २५ अप्पपिन्ना असत्त जेणलोयंतिगुरुसगासंमि घतपिसुयमसिद्धा नकुंतआराहगाउ
ति २६ नवितत्रिसवत्थय उदुप्पउतुम्मकुणइवेयालो जतकुप्पउत्तस पुष्पसायउउवित २७ जंकुणइजावसल्लं अ
लुट्ठियउत्तमठकालंमि दुल्लहबोहीयत्त अणतसंसारियत्तच २८ तोउद्धरंतिगारवरहिया मूलपुणब्भवलयाण मिच्छादंस
णसल्लं मायासल्लंनियाणंच २९ कयपावोविमणूसो आलोइयनिंदियगुरुसगासे होइअइरेगलहुओ हरियभरुव्वभार

त्यइगुण सपुरुष्ठइयफ्रतरपत्था ११ इहलोएप्पायासस्थय सपक्कारिसिगुणविण्णासंव पवयंतियपरलोए सारीरमणोगए दुस्कि २०० धिठीप्पहोप्पफजनअं नाणतोविरागदोसहि फलमउलकदुयरस तचेवनिसेवएजीवो १ तजइइठसिगतुती र नवसायस्मघोरस्स सोतवसजमनफसु विहियगिणहाहितूरतो २ थन्नानयकरदोसाण समसपरिसगुणविणासाण नन्नयसमागतस्स रागद्दोसाणपावाण ३ जनलहइसमस लठूणविजनहोइवरम्ग विसयसुहेसुयरज्जइ सोदोसोरागद्दोसाण ४ नवसयसहस्सदुलहे जाइजरामरणसागरुत्तारे जिणवयणमिगुणा गरस्समविमाकाहिसिपमाय ५ दोहि पत्थावेहिय समसवगेहिसुहुविजयत्था निप्पणयपेमरागोजहसम्ममेइमुरुकत्य ६ एवकयसलस स्वजितरयाहिरामि सलेहि ससारमुरुकवुहो छनियाणोदोस्सविहराहि ७ एवकाहियसमाही तहविहसस्सगकरणगत्तीरो साउरपछुस्का णं भुणविवसीहायलोपण ८ नक्कसापुणरुत्तविहो जोसवेगकरेइनणत्ती स्थायरपछुस्काणे तणकहाजोइयाजत्तो ९ एसंझरेमिपणामति स्वराणस्पुत्तगइण सहुसिधजिणाण सिद्धाणसंजयाणय १० जकिंचविदुच्चरियंत महंनिंदा मिस्स्वावेण सामाइयचत्तिविह सिविहेणकरेमणागार ११ स्वाजिसरंघसह थाहिरयउवहीसरीरसाहार मणपा [illegible] १३ रागेणवदोसेणव अहवा मुकयणुपजिमिसयेण जोमेकिंचविभणिओ तमहंतिविहेणखामेमि १४ सवेसु

जिणपन्नत्तं सुहोउक्खियसन्नी पाउअगमपरीहामि ४६ संसारचक्कवालेसब्बे वियपुग्गलामएबहुसो आहारियाय
परिणामि यायनयतसुतिन्नोह ४७ आहारनिमित्तेण मत्स्याश्रस्यतणुत्तारतरय सचित्ताहारविहितेण उमणसाधिनि
च्छामि ४८ तणकट्ठेणअग्गी लवणसमद्दोनइसहस्सेहि नइमोजीवोसक्कातिप्पेउकामभोगेहि ४९ लवणयसुहसह
सामाणो दुप्पूरोघणउअपरमिओ नक्कसक्कातिप्पेउं जीवोसंसारियमुहेहि ५० कप्पतरुसंजवसुया देवुत्तरकुरुवसंय
सूणसु परिन्नागेणन नम्मा नरविज्जाहरमुरेसु ५१ देविंदचक्कवट्टित्तणाइ रज्जाइउत्तमाभोगा पत्तोअणतखुत्तो नय
हतितिन्निगउत्तेहि ५२ पयखीचुरसेसुय उसासमहोदहीसुयअसाविं उववन्नोनयगतहासि न्नासेसीयलजलेहि ५३
तिविहेणविसुहमतुल जम्हाकामरइसिंयसुक्काण अज्झोविसमणु ञ्पनयतुहन्हापरिक्खिमा ५४ जकोइयत्थणाउ
कमेण रागदोसवसएण पडिबंधेणबहुविहा त्तनिदत्तचगरिहामि ५५ हतूणयमोहजालछिंतूण यअट्टकम्मसंकलियं
जम्मणमरणरहट्टंभित्त भूणत्ताघाणमुच्चिहिमि ५६ पंचयमहव्वयाइतिविह ताविहेणआरहऊण मणवयणकायगुत्तो स
ज्झोमरणफिसियब्वा ५७ कोहमाणमयंलोह पिज्जतहेवदोसच चइऊणअप्पमत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ५८ कलहंअ
ब्भक्खाणपेसुन्नं पियपरस्सपरिवाय परिवज्जितोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ५९ किण्हानीलाकाउले सज्झाणाणि
अप्पसत्थाणि विपरिवज्जितोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ६० तेउपम्हसुक्कलेसा झाणाणिसुप्पसत्थाणि उवसंपन्नो

घहो ३० तस्सपायछित्तं मग्गविऊगुरुवइसंति तत्तहअणुचरियव्वं अणवत्थपसंगभीएण ३१ दसदोसविप्प
मुक्कं तम्हासव्वं अमग्गमाणेण जंकिंचिकयमकज्जं आलोएतंजहावत्तं ३२ सव्वपाणारंभं पच्चक्खामित्ति अलियवयणंच
सव्वमदिन्नादाणं अव्वंभपरिग्गहंचेव ३३ सव्वंअसणपाणं चउविहंजावओवहिराउवहिं अभिंतरचउवहिं जावज्जी
वंवोसिरामि ३४ कंतारेदुब्भिक्खे आयंकेवामहयासमुप्पन्ने जंपालियनभग्गं तंजाणसुपालणासुद्धं ३५ रागेणवं
दोसेणव परिणामेणवनदूसियजंतु तंखलुपच्चक्खाणं भावविसुद्धंमुणेयव्वं ३६ पीयंथणअच्छीरं सागरसलिलाउबहुयत्तरं
संसारंमिअणंते माऊणंअन्नमन्नाणं ३७ नत्थिकिरसोपएसो लोएवालग्गकोडिमित्तोवि संसारेसंसरंतो
जत्थनजाओमओवावि ३८ चुलसीकिरलोए जोणीणपमुहसयसहस्साइं इक्किक्कंमिअइत्तो अणंतखुत्तोसमुप्पन्नो ३९
उड्ढमहेतिरियंमिअ मयाइंबालमरणाणि बहुयाणि तोताणिसंभरंतो पंडियमरणंमरीहामि ४० मायामेत्ति पियामे
भगिणीभायाय पुत्तधूयाय एयाणिसंभरंतो पंडियमरणंमरीहामि ४१ मायापिइबंधूहिं संसारत्थेहिंपूरिओलोगो बहु
जोणिनिवासीहिं नयतेताणंचसरणंच ४२ इक्कोजायइमरइ इक्कोअणुहवइदुक्कयविवागं इक्कोअणुसरइजिओ जर
मरणचउगइगुविलं ४३ उव्वेयणयंजम्मण मरणनरएसुवेयणाओय एयाणिसंभरंतो पंडियमरणंमरीहामि ४४ इक्कं पं
डियमरणं छिंदइजाईसयाणिबहुयाणि तंमरणंमरियव्वं जेणमओसुम्मओहोइ ४५ कइयाणुतंसुमरणं पंडियमरणं

हपराहजीवो ७६ पुव्विकारियजोगो ऋनियाणोईहिऊसुहनावो ताहेमलिकसाहं सञ्जोमरणपडिच्छिज्जा ७७ पुव्वि
कारियजोगोसमाहि समाहिकामोयमरणकालंमि होइपरीसहसाहोवि सुयसुहनियारिऊजीवो ७८ पावाणंपावा
णकम्माण ऋप्पणोसकम्माण सक्कापलाइउ जेसम्मेणसमपउत्तेण ७९ इक्कंपडियमरणं पडिभज्जइसुपुरिसोअसत्तं
तो खिप्पसोमरणाण काहइअणत्तअणताण ८० कितपडियमरणकाणिव आलंबणाणिजणिआणि एयाइनाऊण
किं आयरियाणपसंसंति ८१ अणसणपाउवगमण आलंबणसाणजायणाइं अएयाइनाऊणपडिय मरणपसंससि ८२
इंदियसुहसाउलउं घोरपरीसहपराइयपरज्झो अकयपरिकम्मकीवो सुसड्ढआराहणाकाले ८३ लज्जाइगारवेणयज्ज
सुमयेणणावाविदुच्चरिय जेनकहितिगुरुण नज्जतेआराहगाजत्ति ८४ सुसड्दुक्करकारीजा णइमग्गतिपावएकित्ति
विणिगूहितोनिंदत म्हाआलोयणासेय ८५ अग्गिमियउदयासियपाण सुयपाणठीयहरियमु होइमउसथोरो पडि
यज्जइजोअसजंतो ८६ नावक्कारथतणमंठ अथोरोनावियफासुयानूमी अप्पोखलुसथोरो होइविसुद्धोमरन्तस्स ८७
जिणवयणमणुगया मोहोउमअऊणजोगमज्झीणा जहतामिदसकाले अमूढसन्नोवएदेह ८८ जाहहोइपमत्तोजिणय
र वयणरहिअअणायत्तो ताहवियघोर करविसवसजमविलोम ८९ जिणवयणमणुगमंह जवेलहोइसवरपविट्ठो
अग्गीयवायसहिउं समूलजालकइकम्म ९० जहजहइवायसहिउं अग्गीहरिएविरुक्कसघाए तहपुरिकारसहिउं नाः

त्रभी रस्कामिमहव्वएपव ६१ पंचविहएसवरण पवेसनिक्खनिऊणामगुणे सज्झायपाविरतो रस्कामिमहव्वएपव ६२
सत्तनपविप्पमुक्कोषमा रिनिक्खनिऊणवकसाए सठमपठाणजढो रस्कामिमहव्वएपव ६३ मणसामणसच्चयिऊ
वायासच्चेक्करणसच्चेण तिविहेमच्चप्पमसा रस्कामिमहव्वएपव ६४ एवतिदंडविरतो तिकरणसुद्धीतिसल्लनिसल्लो
तिविहेणप्पमत्तो रस्कामिमहव्वएपव ६५ समसेसमित्तगमी उनावणा उनाणव उयसपज्जो जसो रस्कामिमहव्वए
पंच ६६ सगंपरिजामिसव्व पियउज्झामितिविहेण गुमीउसमिइउस तायकसरणस ६७ जहखुहियचक्कवालो पोय
र्योमत्तरियरसुक्कमि लज्जामयाधारिता कपरयमायुक्खसपक्षा ६८ तवपोच्युगुणनरिय परीसहसम्मगाहियणियमाइ
ठसहचुमाहितियिऊ उयएसवलयगाधीरा ६९ जहमायससुपुरीमो सारोपवियजरानिरकयरका गिरिकुहरकंदर
गया साहसियसप्पणोहं ७० जहतायंसापपाकुल गिरिकदरविसमदुग्गमग्गेसु धिइघणियपयघगठा साहसिया
सुमरठ ७१ किंपणसुपमगारसहोयगोपा धरमगसंगहघलेण परलोपणयक्काल सारमाहोदहिसरिठ ७२ जिणवयण
पसमसमेय मजरक्खामयंसुगताय सक्कोकसोकामसी साहेसप्पणोसठ ७३ धीरपुरिसपवत्तं सप्पुरिसतिसेवि
यपुरिसघोर घत्तासिलातलगया साहिंचीसप्पणोअठ ७४ साहेहइस्थिपुरिहं पुठमकारियपइठवारिस सकयपारि
कम्मधीर मरणसुसुसपाउत्तामि ७५ पुठमकारियजोगी समाहिकमोयिमरणकालमि ननवइपरीसहसहोवि सयस

धंमरणं ६ जइपत्थिममिकाले पच्चिमतित्थयरदेसियमुयार पत्योनित्थयपत्थउवेइ ध्यासुन्नयंमरण ८ उच्चीसमैयहिं
याहिय कमभोगीसगइथलेण उम्रमिऊथारसविहे यतमनियमश्रायेण ९ ससाररगमसेधिइ थलसनठ्ठयठकल्यांठ
हतूणमोहमम्न हराहिध्याराहणपन्नाग १० पोरागयचकम्मखधेइ ध्यक्कनयघायाइ कम्मकलकलायलि ठिदइसयार
माक्कठो ११ धीरपुरीसेहिकहिण सपुरीसनिसेवियपरघोर उम्निरुपामिक्करग हरामिध्याराहणपन्नाग १३ धीरप
न्नागाहरणकरमि जहतमिदसेकालमि सुमत्थमगगुणितोधिइ निम्नुलयठ्ठकल्याठं १४ चम्नारिकमाए तिन्निगारवे
पचइंदियग्गामो जिणिउपरीसहसहेइ राहिध्याराहणपन्नाग १५ नयमणसंघितिज्जाऊांश्रा मिथिरमरामियलंक्कासि
जइइघसितरिउजेस सारमहोध्युहिमरण १६ जइइठाँसिनीसरीउ सवेसियेथपावकम्माण जिणवयणनाणदंसण चरि
त्तनाधुज्ञउअग्गा १७ दसणनाणचरिम्नेतवे ध्याराहणाचउरुकधाउ सोचेयहोइतिविहा उक्कोसामसिमहअहणा १८
ध्याराहेउणयिऊउक्को साराहणचउस्वध घम्मरयविप्पमुक्को तेणेवजवेणसिसिझा २० ध्याराहेऊणयिउमसि मध्या
राहणचउस्वंध उक्कोसेणयचउरो जमेसगतूणसिसिज्जा २१ धीरणविमरियम्न काउरिसेणाविध्यथस्समरियम्न म्न्हा
ध्यघसमरणेयर खुमधीरम्नणेमरिउ २२ एयंपच्चुस्काणध्यणुपले ऊणसुविहिउसम्मं समाणिठम्नावयोइ विम्नश्राविसि
सिप्पा २३ एसोसवियारकउठ सक्कमीउम्नमठकालमि हस्रोठपुणोयुल्य चोसकमोहोइध्यचियार २४ साहुकंपसंठे

पीकम्मंखयं ११ जइ छम्मिंसित्रपचल खन्पूलियसिप्पमेघसामेइ तहनाणीविसकम्मसये छऊसासमित्तेण १२ न
ज्ञमरणंमिउवमोस झायारसयिहीमुयखयो सझोछणुधितेठघत पिसमत्थविमेण १३ इक्कामिविअमिपए सवेगऊ
पहुधावरागमए पच्छमरोछठिग्गस मपसेणमुहुत्त १४ इक्कामिविजंमिपए सवेगकुणइवीयरागमए सोतेणमोह
जालं स्पिंदइच्छाप्पउगेण १५ जेणविरागोजायइत्ततसहायरेण कराणिज्जसमणोहितियपढम बीयसहुज्जसअठमि
तिसहुंबयो सिरामाअिपोहिजजपाठिकुट १६ मणसायिचिपणिज्ज सहजासइजासणिज्जघ काएणयकारिणिज्ज य
पठिरिविधिहेणसोयम्म १८ खस्सजमयासिरण उयहिविवेगोमहाउवसामोच्च पठिज्जयक्कोगविरहं खणीमुभीवेगमे
पर्१९ एयपद्मकाण खाहरअपच्छावइसुजाजेण खन्ससरपठिअन्तो जपसीपावइसमाहिं १०० गममगलमरिहंसा
सिद्धासाऊसुयंसधम्मोय तेसिंसरणोवगहं सायकणोसिरोमिसि १ सिरुउवसपन्तो स्पविहत्तेकेवलीपनासेण इच्चेए
शत्तरणविए एणाराहउहोइ २ समुइज्जवेमणोपुणसमणो हियर्थमिकिनयेसिज्जा खालंपणवकाइं कालम्मुणीदु
इसहइ ३ नरएसुणमरेसुप्प खणुसेयावेयणा उपसाठ यहसेणपसाएसा उविसच्चसोपत्तो ४ पचसियकुयसिटिपाम
क्कमपुराण्यणपत् पियईपमभुग्गमीक्कण मिसत्तजियेसिज्जा ५ नाणाक्षि पट्टकोडिय समुइत्तोहिउस्समसहाणज्जा नप
वीवाछज्जीवो क्रमपुक्कोयमाइइ ६ जम्पुष्पायहारहत्थ जिणदासिपविठपसत्थ नाउमहापुरिससेविय जमजुज्ज

राजाउपागमसरीरो किच्चाहियपरिहच्चो परिहरइकलेवरजाहे ४० पच्चक्खाइयनाहे अमहसमाहिय्यत्तियमिति
त्तिविहेणाहारविहि दियमुग्गइकायपगइए ४१ इहलोएपरलोए निरासउजीविएअमरणेय भायाणुजावेजोगी जि
इसयअभुवुणाइए ४२ निम्ममनिरहंकारो निरवेयायाकिंचणोअपडिकंमो वोसट्टविसट्ठगो चत्ताधियत्तेणदेहेण ४३
हेणयिसहमाणो परिसहेहूसहेअउवसग्गे विहरिह्युवीसयगहा रयमलमसुज्जविक्कणमाणो ४४ नेहक्खहद्धीवोजहखमु
वणइदीववट्टिमि खीणाहारसिणो होसरीरयाहितहखवइ ४५ एवपरज्जाअवहय रक्कामोपुहुन्नाणियमूरीण पासंमि
वसमहे कुज्जासोएसपरिकम्म ४६ आगरसमुट्ठियतह अज्जुसिरयागतणपत्तकरुएय कठामिलाफलगासिव अणज्जि
ज्जियनिप्पकप्पंमि ४७ निस्सविणोतणामिवसुइ पडिलेहेगजहपसत्येण सथारो० कायव्वो उत्तरपुव्वस्सिरीवाविं ४
८ दोमुत्थवप्पमाणे अधकारेसमंमिअणिसह निरुवहयमिगुणमणे वणमिगुत्तयसथारो ५१ ऊत्तंपमाणरहहे उन
हकालपडिलेहणासुद्धो विहिवविहिवसथारो आरुहियवोतिगुत्तेण ५० आरुहियचारिमन्नरो अवस्सुउपरमगुरुव
गावमि दवेसुपज्जवसुय खिस्तेकालेपवद्दमि ५१ एहसुवेवठाणेसु चउसुसदाचउअनाहारो सवसजमसुसिकिहावो
सिविपञ्चातिगुत्तेण ५२ अहवासमाहिहेउं कायव्वोपाणगस्सआहारो वापाणगमिपच्छायो सिरियञ्जहाकाले ५३
सिसिरिज्जाअप्पावसव्वगुणसमाचिय्यामिविज्जवए सथारगसनिविठो अनियाणोचेववविहरिज्जा ५४ इहलोएपरलो

ह्रोषि जियपरीसहक्सायसत्तो निजवएमम्गिज्जा सुयरयणसहस्सनिम्माए २५ पंचसमिएतिगुत्ते सत्थासिवए रागदोससयरहिए कडजोगीकालण्णू नाणचरणदसणसमिद्धे २६ मरणसमाहिकुसलो गियपत्तियसज्जावयेभारो वयहारविहिविहण्णू अम्मुज्जयमरणसाहरिओ २७ उवएसहेउकारणगुण निसणापकारणविहण्णू ग्गिपाणनाणकरणो ययारसुयधारणसमत्था २८ एगतगुणरहियाउ ठीइ सउविहाइउचवेया छन्नूपन्नइया पञ्चक्खाणमियविहण्णू २९ दुग्गच्छायरियाण वाधेयाथसकरणसिगुत्ता पाणगवेयाथन्नेे तत्थरिसणायक्खिदोपन्ना ३० उज्झमपपरिवपप उद्धारु ऐज्ञासकरणजोगेसु देशायगासिपजोम्प सुमकरणेजहन्नेण ३१ अउवहणयेयणाए पायच्छित्तेपडिकम्मणाएय जोगा पकडाजोगे पञ्चक्खाणपज्ञापरिहं ३२ कप्पोकप्पविहन्नू दुअालसगसुपसारही बत्तीसगुणोयेया पच्चिछमावियारिया धीरा ३३ एएहिमिज्झयपापरिरकहिया उठउसमठंमि जोसिगुणसत्ताण नवमस्याणतयपायुत्तं ३४ परिसयणसेसु पीष्म पयपमप्पयाण पडियाविहुमहयव मणोपमुच्चयमरण ३५ आयरियसवसाए सीसेसाइकिमएकुलगणीहि घेम किंपाकसाया उठेतिमिहेणआमेमि ३६ पञ्चुपमणघस्स नायपजालिकरेसीसे खग्गसमावक्तो खमासिमुहेसुम हर्षपिक ३७ असविसाल्पसाण अपुसक्काएपडिक्कमिसुणाणसाएमिदसउमि अथरिम्माजोगाइयारियं ३८ तोसीलगुण समिम्मो अणुवइयारकेवलपयामव विहरिसुतवसमग्गो आनियाणोआगमसहाओ ३९ मयसोमियगमगीव विवि

जोसुबिसस्याविहीमिहि॥ञ्जूणीसंसमासकाम ७० जोसुबिस्याविहीमिहि ऋणीसंसमासकाम
ख्रवस्सन्नायंउअद्वियंजणा जोव्वइयद्दहकालो ञ्जूणगउहस्यञ्जासिनहा ७० जेसुबिस्याविहीमिहि ञ्जूणीसंसमासकाम
ख्रवस्सन्नायंउअद्वियंजणा जोव्वइयद्दहकालो ञ्जूणुबिपीममायदेसंण हाजीयञ्जुद्धवेनि
मीकरो देहेनिस्सदेहेपिए त्रिसुममपनत्थि ७१ उअरुह्मेसिरुिपहोनय ञ्जूणुबिपीममायदेसंण हाजीयञ्जुद्धवेनि
य नक्कमेएयंनतप्पिहिह ७२ नत्थियतमययणघाराय परीसहाञ्जहेसिरया ससारोयञ्जसारो ञ्जद्दप्पमाउञ्जतंजीञ्ज
७३ कोहाहकसायारवलुञीय ससारजयदुहाण तेसुयमत्तसुसया कसोसुस्कायसुरकोया ७४ जाउपरवसेणं ससारेये
यणाहघोराउ पभाउजारगत्ते ञ्जक्कणासाउञ्जिवितिज्ञा ७५ इन्हिसयवसिस्सउनिरुय ममुस्कावसाणमूहकडूयं क
ह्मागमोसहपिम परिणासुहनतदुस्क ७६ सयधियधवेसुञ्जनय ञ्जूणुराउखणपिकायह्मो सिह्मियज्ञसिञ्जमिसा जहज
पणोयंजदमस्स ७७ वसिउणवसुहमिसेवम्मुह पगाणिउडमाजीयो मुतूणसरीरधोर जहकयहामरणकालमि ७८ ह
गिहयमुक्कसण गोसोयसुएयञ्जइरसेवा अस्सनदक्काइवेला कद्दिवसगठउजीयो ७९ एवमणुचिंतयंता जावणुजाया
पुरमासियलेसो तद्दिवसमरिउकामो घडोहकाणमिउक्कमो ८० नरगातिरिस्कगइसुय माणुसदेयमणेयसंतण जंसुह
दुस्खपत्त ञ्जञ्जणुचितिज्ञसधारे ८१ नरपसुयेपणाह ञ्जूणोयमासीयउराहंवराह कायनिमित्तंपसाण ञ्जतसुसोयह्मा
विहाह ८२ देवत्तेमाणुस्सेपराहिउ गम्तणउवगएण दुस्कपरिकेसविहा ञ्जूणसखुसोवमणुनूया ८३ जिनदेसपयि
द्वियतिरिय एक्कायमिणेगट्ठाणे ञ्जमणमरणपरहहुं ञ्जूणतञ्जुसोगउजीयो ८४ सुणिहियञ्जइकाले ञ्जूणएगाएसुवे

एछनियाणो जीविपयसरणोय धासीवदमकप्पो समोयमाणावमाणेसु ५५ सहमङ्गारफुठवियठं तहप्पसायकराणि
छविसयकयं इकंकहनिक्कवोसुहं समल्लाहरणसेउं ५६ इहलोएपरलोए नाणचरणदसणमिय सुवायदसेइनिया
णं मियमायामिव्यिमसत्तेण ५७ धाउमरणेस्सावायतइ यउवायस्सयाठमरणमि उस्सासरज्जवेय हाणसेयतहगठप
ठेया ५८ अहपवणठुयसत्तो सत्तसमरणमकोइमरिऊण दसणनाणविज्झण मरंतिसुसमाहिमरणेण ५९ जहसायर
सेगिदाहठिय सुहकारपायसुयमझा उसत्तधाठमरणा नमासिससारकंतार ६० सुहमिठसुससत्ता मामासत्तेणज
हसत्तापा जहनियाणसतममरति सुसमाहिसरणेणं ६१ जहतुयणावसहामरति अएकेइइंदियसहा जइपकसय
सहा मरंतिसुसमाहिमरणेण ६२-अहखिडिमगढुमाह सगागाठमोढणाणिमरणाणि मरिऊणकेइसिठिउवितिसु
समाहिमरणेण ६३ एयपज्झप्पयारेसु सुञ्चायंउसमहकालमि दसतिसुयायणू पाउरुपोसुयिह्निमणं ६४ दिविसि
उयएसगुरुणो नाणथिहेहिहेकाइं जेणसुगइजयतोस धारसअहुउहोइ ६५ जिज्ञासेसुमेयपसलु सुहासिदासिदा
लुणकस्स सहणिजंदेइण भत्रसएयंथिमिविज्ञा ६६ ...सुहक्कयस्सपायस्सुआएधुवे जोरसुसुस्ककाले
नमोविठाणतिकासत्तो ६७ तिससिकृणोदीवोतसिर दिस्सजगमिपसस्के नयजठराइउमत्यो जिसुउ।वरंनवपउ
साइ ६८ सत्वंइमसरीरं समोहइमणमिठाविडा असविरेणविमोस देहकोतसपाठयपो ६९-कूरत्वविषियाव

यरंजह्वा संसारमिच्छणत्ते माहंपम्मणमणाण १०० नयणोदगंपिवासि सागरसलिलाउबहुयरहज्जा, गलिमसूयमा
णीण माइंगच्छणमणाण १ निस्थिजयमरणसम जमणसरिसनिविज्जएदुक्ख तम्हाजरमरण करछिदममत्तसरीराउ
२ अन्नइमसरीर अस्योजीवुत्तिनिछियमईउ दुक्खपरिकसकर छिदममत्तसरीरउ ३ जावइयकिंचिदुहं सरीरंमाण
सम्नसंसारे पत्तअणसखुत्तो कायस्समममंदोसेण ४ तम्हासरीरमाइ अभिंतरबाहिरंनिरविसेस छिदममत्तंसुवि
हियजइ इच्छसिमुच्चिउदहाण ५ सव्वेउवसग्गापरीसहेय तिविहेणनिज्जिणाइ हिलज्जएमुनिसिए मुहोहिसिआराहउ
मरणे ६ माणुसरीरसंतावेउ अतिकाहिअदुरुदहाइ सुहुविरूवियलिगो वियदुरुद्दाणिस्रवति ७ मित्तसुयबंधवाइं
इट्ठाणिठेसुइदियाठेसु रागोआदोसोआइं सिमणेणनकायव्वो ८ ऐंगायकेसुपुणो विउलासुयवेयणासुइन्नासु सम्म
अहियासंतोइ पमोहियएणावितिज्जा ९ अणुपालियसागराइ सठाणिमेनरयतिरियजाईसु किंपुणसुहासाणइ पमो
सारनरदुहति १० सोलसरोगायकासहिया जहाविक्किणाचउत्थेण वाससहस्साउसउसा गणधरवचठगएण ११ तहउ
वमरणकाले देहेनिरवक्कयउअथाएण सिलच्छिइसलावगाइ बम्भायकाविसहियव्वाउ १२ पारियद्वायगत्तसो रायाण
ठीइंसठिणोमूहो अणुगईपरमवदा सीयसुकोवियमणुस्सा १३ सायसलिलउल्लोहिय मसवसापेसिवग्गलाधितु स
म्माइयापडीवं माइजइरक्कसयज्जाइ १४ वणपनिछियणगतूण तुसुविहिअसगाउं आराहियचरित्तजरो सीहरोमिर्य

पज्जीवेण जम्मणमरणमरतं मज्जलवगहपसमणुभूय ८५ घोरम्मिगब्भवासे कलमलजवालअसुइवीभत्थे वसिअउ
पतक्खुभो जीवोकम्माणुभावेण ८६ जोणीसुहनिग्गत्थ सेणसंसारेहमेणजीवेण रसियपक्खुहवीभत्थ कलोकलाहलरग
एण ८७ जम्मासिपवीभत्थ असुइघोरम्मिगब्भसमि ताघितिऊणसयसुरक मिमहूनिवेसिक्खा ८८ वमिऊणविमाणे
सुपजीवा पसरातिमणिमकोहसु वसिउणोविसुद्धिय जोणिसहस्सधयारेसु ८९ वसिऊणदेवेलोए निसुक्खोएसयए
सजीवा वसहजलवेगकलम विउलघलयामुहेघोरे ९० वसिऊणसुरमरी सरवमोपरारिद्धिमणहरेसु तासिउनरगनि
रत रठयनरमपजरजीवो ९१ वसिऊणविविहेसु थायमाणमज्जवपसोज्जासिहारमु वसहसितिरिएसुगिरिगुह विव
रमहाकंदरदरीसु ९२ जुतूणवज्जोगसुह सुरनरखपरेतुपुमयमाएण वियहनरएसु नेरवकलकलसउतपपाणाह ९३
सोऊणमुहयणरवह जवेसजयसहमगलरवोघं सुणहनरएसुदुह परसक्कुदाहसद्दाइं ९४ निहणहपागिरहदह पय
गविधयधरुधाहि फालेलोछेघोलघूरो क्खारोहसमत्त ९५ वयराणिमाकालिमल वेसछकसछकयकुडेसु वसिउनरय
पुसि उहणहणघायापसहेसु ९६ तिरिपसुधनेरव सम्रपक्कपत्थणवएसु वसिउउग्गिपमाणो जीवोकिलिडमिससारे
९७ सपुष्पाणविमिइमिहविघिववाणसहस्सजेसणघणंसि जोणपिअमाणगुहे वसिउनयपंजरेजीवा ९८ वसिवद
सुसमसिप गिरिसुवसिमम महुमेवेसु रम्मगोसुपवसिय संसारेसंसरत्तेण ९९ पीयपणुखीर सागरवलिलाक्क

परंजम्हा ससारंमिष्ठाणत्ते माईणस्थणमणाण १०० नयणोदगंपिताास सागरसलिलाउबउयरंजम्हा गलियसूममा
णीण माईगस्थणमणाण १ निस्थिजयमरणसम जमणसरिसनिविजएदुख तम्हाअरमरण करछिदममत्तसरीराउ
२ ष्वइमसरीर स्थस्योजीवुम्रनिछियमईउ दुक्कपरिकेसकर छिदममत्तसरीरउ ३ जावइयकिंचिदुइ सरीरंमाण
सव्वससारे पत्तष्ठणतसुत्तो कायस्समममदोसेण ४ तम्हासरीरमाइ ष्यन्तिरबाहिरनिरविसेस छिदममप्तसुचि
हियजइ ष्ठसिमुच्चिउदहाण ५ सव्वेउयसगापरीसहेय तिविहेणनिज्जिणाइ हिलऊएमुनिष्ठिए मुहोहिसिष्ठाराहछ
मरणे ६ माजपसरीरसताविउ ष्यतऊाहिष्यहरुद्दाइ सुठुविरूयियलिगो वियहरुद्दागिजवम्रि ७ मिमसुयबधवाइं
इठाणिठेसुइदियाछेसु रागोवादोसोवाई सिमणेणनकायव्वो ८ ऐगायकेसुपुणो विउलासुपवेयणामुइन्नासु सम्म
ष्यहियासतोइ णमोहियएणविसिजा ९ थजपलियसागराइ सहाणिमेनरयतिरियजाईसु किंपुणसुहासाणइ णमो
सारंनरदुइति १० सोलसरोगायकासहिया जहविक्किणाचउत्थेण वाससहस्सासमउसा गणधरचवउगएण ११ तइउ
ममठकाल देहेनिरवरकयउमघाएण सिलच्छिमलावगाइ वष्ठायकाविसहियम्राउ १२ पारियम्रायगजमो रायोप
ठीइचठिणोमूढो ष्युगहपरमजदा सीयसुकोवियमणुस्सा १३ सायसविलुम्रलोहिय मसवसापेसिधिग्गलघितु उ
प्याइयापदीउ मात्रजहरस्कसयजाइ १४ वणयनिम्रियणगतूण तुसुविहियसगासे ष्याराहियचरित्तजरो सीहेवमिमं

समाऊदो १५ तंमियमहिहरसिहरे सिलायलेमहाजागो वोसिरइत्रिरयहुन्तो सम्रोहारमहतणुय १६ तिविहोवस गासहइ पडिमधाणहमासियधीरो पाइयपुत्राजि सुहोसमधिइजन्नसजुमो १७ सायएगलंतलोहिय मेयवसामसलप रीपहो खज्जइसगेहिदूसह मिसरुधुपुप्पहाराहिं १८ मसएहिमठियाहिय कीडिहिविमसपलगाहि खज्जतोविनक पह कम्मविशागगणेमाणो १९ घत्तिचपयहुविह सियसियालियाहिं निरणुकपाहिंउयसग्गिज्ञपधीरो नाणाविह ज्ञवधारीहि २० वितइयसरकयशासी पजरसगामगारपहाउ णमोनज्ञकठयरंदुक्क मिरयग्गिदुस्कात २१ एयच गडपस्कोधीउपस्को यडाहिणविसाए ममरेणथिपस्काविय समइक्कतोमहोसिस्स २२ तहउवणपरकजगयं ख्विक पमाणसोसहइ पडिपउडुमासने नमोभिधोतुजिजिदाण २३ कयणपुरमिसिठी जिणधम्मोनामसाधउप्पासि तसइ मधरियपयं सउपयकिम्रिममुणिस्स २४ नणविमत्यमुणिणाउ धसग्गापरमदूसहासहिया सहउवसगोसुविहिय सु हाउहियसहाउममहमि २५ निप्पकंपियाणिदुग्गिघिसी साधेदणजस्सअत्थीणि सवसजमाउचलिउ मेधुज्ञासुदगि गिधु २६ खोकुथगाविराहे पाणिदयाकुथगापमाड कजीवियमणुपेहं संमेपज्ञाडिजिनमुसामि २७ जोताहिंपएहिंध म्म समगइसंवसमसमाऊहो यवसुमेविइगधवरकज्ञिडाउपुत्तेनमंसामि २८ साएहिस्सइगयाउ लोहियगंधेणजस्स कीडीउ सायतिउममग तंदुक्करकारयवदे २९ देहापिपिलियाइ विलोइपुव्वसावलणिहकड तणउविमणुएणो न

यजाउतस्सताणुवरिं ३० धीरीयिलाइपुत्तस्स वालणिग्गकढं णवयधम्माउवलिदं तदुक्करकारयवंदे ३१ गयसुकुमा
लमहसी जइदढीपिइवण मिणमुरेणनयधम्माउवलि तदुक्करकारयवदे ३२ सुईहिनन्तसेणच्छागतूण तिरसीसपइम्मू
पईणीपोरे० ३३ जोयम्मसमातइयाजो न्नावीजायदुक्करापक्किमा त्तथ्यणगारगुणा गरसुमपिहियणणचिनहि ३४
सोऊणमिसासमए नलिणिविमाणस्सवण्णधीरा सन्नरियादेवलोढं उज्जोणिच्छवतिसुकुमालो ३६ यितूणसमादिक्के
निपमुक्किपसद्धविवच्छाहारी घाहिवसकुक्कगेया यवगमणातियवाढं ३७ घीसहनिसहुगोनहि सोजुलुकियाइखइ
उउ मवरगिरिनिक्कंप सदुक्करकारयवंदे ३८ मरणमिजस्समुक्क सुकुमुमगधोदयचदेविहि च्छज्जवियगघवइ सात्तव
कुक्कगीसुरठाण ३९ अइम्मेणतत्थमुणिणा सम्मसमणेणइगिणीतिरहा तहसरइउम्मइ त्तचमणसानिवसेइ ४० जी
म्सित्यएणगिणहइ देहम्माएविनच्छठियकुणइ सोसाहेइसकहऊ जहचदवक्किवउराया ४१ दीवाभिग्गहधारीहूसइ घ
णसिणयनिच्छलनगिदे जहसोतिन्नपइणो तहतरहतुमपइन्नमि ४२ जहदमदसमहेसीपक्कय कोरवमुणीयघूयगरहि
तं च्छासिसमोदुरक्कपि क्कणवसमाढहसयस्य ४३ जहखदगसीसेहसुक्क महासाणसियमाणहि नकउमणप्परसो
पीठिज्जतसुजताप ४४ सहघन्नसालिरयच्छणगारा दोवितवमाहिइाया वन्नीरगिरिसमीवे नालदाएसमीवंगि ४५
जच्छलसिलासयारेमय घगमपउग्गयाजगयं सासच्छणूणगंते यासहविसहसम्भुंगा ४६ सीयायवझक्कियगाढं सुठि

समारूढो १५ समियमाहिहरीबहरे सिलायलेमहाभागो वोसिरइवियरयइन्तो सव्वोहारमइतणुय १६ विविहोवस
गासह पडिमंसाहुसुमासियधीरो बाहयपुव्वाजि सुहोसमधिइजनतसजुत्तो १७ सायएगलतलोहिय मेयवसामसलप
रीपहो सउणइखगोहिदूसह निवडतुखुष्पहारेहि १८ मसएहिमछियाहिय कीडिहिविमसपलगाहि सउणतोखिनक
पइ कम्मविवागगणेमाणो १९ खत्तिसपयहयविह सियसियालियाहि निरणुकपाहिंउवसग्गिज्जपधीरो नाणाविह
नयधारीहि २० विलिहयमसरकपच्छाखी पजरखगामगारपहाउ णमोनक्कठयरंदुक्क निरयग्गिदुक्काठ २१ एघच
क्कोधीउपसको यदाहिणविसाए छावरेणविपसकाविय समइक्कतोमहोसिस्स २२ सहठअणयरकलगव छविक
सहइ पडिपउदुमासते नमोजिणोमुजिजिदाण २३ कयणपुरमिसिठी जिणधम्मोनामसाधउच्चोसि वुसइ
यं तडपयकिंसिममुणिस्स २४ नणंविमत्यमुणिणाउ चसग्गोपरमठूसहासाहिया सहउयसगोसुविहिय स
ग्गाठममठामि २५ निप्फेकियाणिदुणिविसी छाविहेणजस्सअत्थीणि सवसजमाउवलिठ मेघ्घुक्कोमिद्दरागि
जोकुवगाहिराइ पाणिइयाकुवगापिमाह कोजीविममणपेइ समेयक्कारिसिनमसामि २७ जोविहिपएहिय
स्संममसमारूढो यवंसमायिघगुसवर खिणाइपुत्तनमसामि २८ साएहिच्छइगयाउ लोहियगंधेणजस्स
विकमगा तंदुक्करकारयवदे २९ देहापिपिलिमाइ विलोइपुव्वसायलणिहक्का तणउविसमएएसो न

यजाउतस्ससताणुवरि ३० घोरीयिलाइपुन्नस्स वालणिम्मुकउ णवयधम्माउचलिउ तदुक्करकारयवंदे ३१ गयमुकुमा
लमहसी अइदठोपिइवण मिसमुरेणनयधम्माउचलि तदुक्करकारयवंदे ३२ सुई हिननसेणछ्यागमूण तिरत्तोसपइस्स
पइणोचोरे० ३३ जोयम्मस्समातइयाजो जावोजायदुक्करापडिमा सत्थगगारगुणा गरतुमपिहियणणाचिनहिं ३४
सोऊणनिसासमए नलिणिविमाणस्सवणणधीरो सन्नारियादेवलोउ उज्जेणिअवंतिसुकुमालो ३६ चितूणसमदिक्खं
नियमुज्झियसमुदिग्घाहारो वाहियसकुडगेया यवगमणतियमाउ ३७ योसहनिसहुगोनाहि सोजुलुकियाइखइ
उउ मदरगिरिनिक्कप सदुक्करकारयवंदे ३८ मरणमिजस्समुक्क सुकुमुमगधोदयचदेवेहि अज्जविगधवइ साचव
कुडगीसुरठाण ३९ जइप्रेणतस्यमुणिणा सम्मसमणेणइगिणीतिरहा तहतरहउम्मइ त्तघमणसनिवसेइ ४० सो
सिस्यएणगिम्महइ देहम्मिएवनस्सठियकुणइ सोसाहेइसकहउ जहचदवडिसउराया ४१ दीवाजिगगहधारीढूसह प
यत्तिणयनिम्मलनागिदे अहसोतिल्लपइणो तहतरहसुमपइक्कामि ४२ अइदमदत्तमहेसीपडय कोरवमुगीयघूयगरहि
उ घ्यासिसमोदुरहपि जएवसमाउहसयस्य ४३ जहस्सदगसोसिहसुक्क महासाणसवियमागहिं नकउमणप्पउसो
पीलिजतसुजताप ४४ तहधन्नसालिरयणगारा दोविसवमहिंयाया वत्तोरगिरिसमीवे नालदाएसमीवगि ४५
जद्युलसिवासयारेणय घगमपंउयगयाजगव सासम्मूणगते यासहविसहसहुगा ४६ सीयायवसंकियंगाउंसुठ

यसवपहारुणिविणठा दोविस्सुसरवासी महेमिणारिद्धिसपणा ४७ छत्येरयंथलोएता णुतिहिंदेवयाणुनावेण छ
विधाठिनिवेस पाछिन्नसनामगाहत्थी ४८ अहतेसमसचमो दुवालविलमोविणोयपलिया सेसतवोकिलतंवी सामेक
णविषयवग्गाग उथलठपुणपाथा फासुयसुमईकरेसीह ५० सुगहियसावगधम्मा जिणमहिमाणेसुजिणयसोहया
छसहरमुणिणोपासे निक्कतातिम्नसवगा ५१ सुगिहियजिणवयणा मयवरिपुठासीलसुरहिगघठा विहरियगुरुस
गास जिणवरवसुपुच्छतित्थमि ५२ कणगाव लिमुत्तावलि रयणावलिसीहक्कीलियकलता काहीयससवेगा छायंबि
लवहमाणच ५३ छासरियायमणोहर सिहरवरयंमपुक्करछय छाहकरचणपकयसिर सेविषमालहिमवत ५४
रमणिज्जहरयहवर परज्जुसिजमरमज्जरायविलोलो छयरगिरिविसयमण हराजिणवपणसुकाणुहेस ५५ तंमि
सिलायलपुहवी पववदेहठिईसुणियस्था कालगपाउवगणा पंचविसपराजियविमाणे ५६ ताऊबहऊणहई नारह
सुगहसुससरिह पहुमराहिववणया जायाजयलछिनमारो ५८ तेकहमरणकूसह दुक्कममुप्पन्नतिव्वसवेगा सुहिय
सेसगोसे निक्कताकायक्किचीय ५९ जिठोषउदसपुवी चउरोइक्कारसगवीयासी विहरियगुरुसगासे जसपाठिह
णरातिजियलोए ६० नविहविकुगुणिहिणा जयरिमुरठंकसेणसमन्ना सोउंजिणतित्थाण [illegible] करेसीमु ६१ घो
रातिणगाहसारीनीमो झतुगागाहिपुजिसाठं सतुकसुलासिहरे पाउयंगयठगजाओघो ६२ पुवविराहियवतर उप

सगसहस्समारुयमिगिदो स्थविकंपीसादिमुणी जाईणइक्कपासमि ६३ दोमासेसपुणेसम्माधिइ धणियथेठकत्याठे
नाघउवसग्गिठत्त सोजावउपरिनिवुउत्तगय ६४ सेसाविययुपत्तापाउ वगयाउनिवुयासह्वेए वधिइसपन्ना स्थणेवि
वुहाउमुच्चति ६५ दवियफ्रोस्थणगारो स्थायायणज्ञूमिससिउधीरो सहिउणपाणपाय समपरिनिवुउत्तगय ६६ सेल
मिथिलपूरे कोसलोमुठिउउपडिमाए नियजणणीएस्वइ उवग्गीजावंउवगपाए ६७ पडिमागठस्थमुणी लायेसु
थिउयफ्रसुयाणेसु नहवियअउलडुणत्तायो साजस्वमासह्वसाहूण ६८ एयपरिसुफ्रपावड ररिसीपच्छपइयाथम्बे मुतू
पसुहुगकिरस्स जगिरिमम्मिउसुजसो ६९ तत्थयसोथउलतलेपगा गीधीरनिठयमईठ बोसिरिऊणसीररं उहमि
ठिउयियप्पाणो ७० तसोस्थइसुकुमालोदिग यराकिरणग्गिसावियसरीरो हविपिदुव्वविलीणो उववणोदेयलोयपि
७१ तत्थस्सयसरीरपूयकासीय ररहेहिलोगपालाठ तेणरहावत्तगिरी स्थक्खाविसोविसुउलोए ७२ जगवंपिवहइरसा
मीपिइ यगिरिदेसयाइक्कइ पूठसपूडउठमरण कुपरजणिएणसक्काण ७३ पूइयमुथिहियदेहो पयाहिणेकुजरेणतं
सेल कासीपसुरयरिदा तम्हासोउकुअरावत्तो ७४ तत्तोयजोगसगहउ वहाणस्वाणयमिकोसथी पोहगमवलिसेम्मो
रुकिमणिप्पजोजासो ७५ धम्मगसुसीसजयल धम्मजसेतत्थरणदेसगि जन्नपञ्चस्काइय सेसमिठवठलातीरे ७६
निम्ममनिनिरहकारो पगागीसेलकंदरासिलाए कासीयउत्तमठं सोजावीसहसाहूणं ७७ उयाहमिसिसावहेजहुत्तं स्थ

यसवयद्दारुण्णिवणठा दोविस्सपुसरयासी महेमिणारिद्धिसपणा ४७ सुरसेरयंचलोएता पुतिहिंदेवयाणुनावेण सु

विस्सठिनिवेस पच्छिन्नसनामगाहत्थी ४८ अहतेसमसचमो तुवालविलग्गेविणोयपलिया सेसतवोकिलंतयो सामेक

णाविणय४म्नाग उवलठपुणपाया फासुयसुमईकरेसीह ५० सुगहियसावगधम्मा जिणमहिमाणेसुजिणयसोहया

जवहरमुणिणोपासे निक्कतातिन्नसवगा ५१ सुगिहियजिणवयणा मयवरिपुठासीलसुरहिगघठा विहरियगुरुव

गाव जिणवरवसुपुक्कसित्थमि ५२ कणगावलिमुत्तावलि रयणावलिसीहकीलियकलता काहीयससवेगा सुायंघि

उवहमाणव ५३ सासरियायमणोहर सिहरत्तरवरंनपुक्करहय सुाहकरचणपकयसिर सेवियमालहिमवत ५४

समविसहरयणवर परक्कसिजमरमक्कयरविलोलो सुयरगिरिविसयमण हरतिणवयणसुकाणणुहेस ५५ समि

सिलायलपुहवी पचविदेहठिहसुणियस्या कालगयाउवत्रणा पंचविस्सपराजियविमाणे ५६ ताळवडठणहह नारह

माससुससरिज पकुनराहिवसणया जायाजयलठिनधारो ५८ तेकहमरणदूसह दुक्कमसुप्पन्नतिव्वसवेगा सुहिय

धीरसगोसे निक्कंताकायकिच्चोय ५९ जिठोचउदसपुव्वी चदरोइक्कारसगवीसासी विहरियगुरुसगाव ज्जसपक्किह

नरुग्गियलोए ६० तविहरिकुशयिहिणा जवरिमुरठंकुमेणसपन्ना चोउजिणजिनाण जमपुरिन्तंकरेसीय ६१ घो

रातिगाहयारीजीमो कंवगागहिजिसाई सतुसुसीलासिहरे पाउयगयइगजाजोयो ६२ पुव्वविराहियजत्तर उम

णगाराधिजाइयाह कोसविसोगदमाउ पाउवगयाणदिणो सिज्ञाएसगरोत्पूढा १४ मज्ञाराइमज्ञारखमढ [illegible]
सपरीसाहउससिसेसो धीउरायगिहमिढ सुसणमालारादियत्तो १५ कुनकारकफेनगरेखदं [illegible]
या एवविहेकरिज्ञहजह सहियंमसमीसेहि १६ तहसागन्नाणधुम गीएसठियस्ससमुयाण [illegible]
कोइंनिज्ञिपेकन्हे १७ मज्ञाराइमुज्ञारखमढ सुक्कोसपरीमहेउसायिसेसो धीउरोयगिहंमिउ सुसणमोलारादिठतो १[illegible]
सुंनकारकफेनगरसावत्थी जियससतणउनिस्कमणपाढि कमतणफासिवारियपायियक पणकुसलेसणकहणस[illegible]
११ चपामुणदगविपसाज्ञ दुगुत्याज्ञमसउरगे कोसायिजसयनिरकमण वेयणसाज्ञपाफियाए १ मज्ञाराइ[illegible]
सक्कारोपायठयणठा अमाहसुसकालग सागरखमणोयदिठतो २ नाणसुसमफताढ खजगुनोघी[illegible]
जह्ना दसणपरीसहम्मिढ सासाफनूईउसुापरिया ३ यरियापमरणमिउसमुद्द णपारोसहोमुमणी[illegible]
पाजिण मयउधएसमुहइसुप्पाण ४ उससगासपयाणमणहस्थि खिसयसुमारियमणस [illegible]
गहद ५ एएउसुहायूरामहिहि उकोमनाणिउससत्तो किंवातिमूवमाएजिण [illegible]
णी सम्मट्ठिठीकरति तउत्याहिसिरिएहि विदुरणुवराकहिविसुणुपाढघम्मो [illegible] सुहियास
हुमि होपगाहिउासिकालो समन्निसवेगमावणो ८ सुम्माणतिदं[illegible] धसाहकायसेवियसुमा
[illegible] सवुमहविल्हीह सवुविपरी

पहणएणसुकुमाल विग्यारियसरीर खणुचिंतिज्ञानमुठाइ ७८ गुरुरयाउवगहंसुसुद्धि णाणिगिग्रणेणवाणक्कंदयो
नयसवलिउसाक्क घिइचितणिआठ ७८ अहसोविसप्परासीवा सहुनिसिहुवसाठं वसीपुन्नाहिविनिगा एहिष्ण
गसमुक्किमो ७९ अहसावमोसघफाबो सठअसादेहगोधीरा वापणउदायण्ण विगलमिउलहया ८० जतेणफस्क
पणय सत्येहियसायणहिविधिहेहि दहेविहुस्ससेहासिवि शुकप्पणाममगो ८१ पफणीययाइकेसि सम्मसखीलहाहि
मिहणिमा मझ्वयमक्किपदेह पिपलियामसादिक्काहि ८२ जेणविरागोजयइ ततसह्मायरेणकरणिज्ञ मुहुइहसस
यगो हत्याघिलाइपुमविठता ८३ समुश्णेसुयसुथिहियघोरे सुपरीसत्यसमम्गोषणमिकठेण पायहरोसवरण विह्नगात्ति
क्काबणसुरेसु ८५ सत्येवघणमिमा वेह्नगमरणनहहतन्हाए थित्यिणेसुणजस विठयविस्सारणकासि ८६ मुणि
वदिणयविदिणस्स रायगिहपरीसहोमहाघोरो अत्तोहरिवसथिक्क जणस्सयुत्यजिणिदस्स ८७ रायगिहनिग्गपास्सलु
पफि पफिवन्नगामुभीवडरो सायविह्नकामेण पहारेपहरेगयासिढिं ८८ उसिणतगररहंनगवं पावसएसुसमणन्न
हरिसी समसमणस्सारक्किया उस्सुषलउज्जेणी ९९ सुरहयआयमूय करोकानवोसुवुलहायाहीउ कोसवीएक्क
पिठ हत्यिएपूजनहरिसी १००कुसक्करामियहमो वरियाइसहेसमक्काठ खिद्धिसुपविमुत्यणत्यम सुगलुदीवोयवास
सिं १२ गामप्रकुसम उनिधी ...... गोयिकुयिएणवहागइ सुकुमाणोजहाजगम १२ सोय

णगाराधिज्ञाइयाइ कोसंबिसोगदभाउ पाउवगयाणदिणो सिज्ञाएसगरोत्पूढा १४ मज्जाराइमज्जारस्वमहं श्वक्को
सपरीसाइउसविसेसो थीउरायगिइमिहं श्रसणमालारादिवत्तो १५ कुत्तकारकफेनगरेस्वद गसासाणजतपीलरणा
या पवयिहेकरिज्जइजइ सहियमरससमीसेहिं १६ तहसाणन्नाणवुत्त गीएसठियरसमसमुयाण तसोश्चलाजगमिजइ
कोईनिज्ञिपेकन्हे १७ मज्जाराइमुज्जारस्वमहं श्वक्कोसपरीमहेउसयिसेसो थीउरोयगिइमिउ श्रसणमालारादिठंतो १८
श्वंनकारकफेनगरसावत्थी ज्ञियसत्ततणउनिस्कमणपाफ कमतणफासियारियपयियक चणकुसलेसणकहगसहेण
१९ वपामुणदगवियसाज्ञ दुगुत्याज्जहस्वउरगे कोसंबिजसथनिस्कमण वेयणसाज्ञपफिवाए १ मज्जाराइदवदशो
सक्कारोपायठयणठहा अभाइश्वसकालग सागरस्वमणोयादिठतो २ नाणंश्वसगफसाहं स्वजगनोधीश्वणिहियामणे
नहो वसणपरीसहम्मिहं श्वासाफजूईउश्वापरिया ३ घरियापमरणमिउसमुइ णपारोसहोयमुणीपंना विज्ञविउ
पज्जिण मयउथएसमुहंइश्वप्पाण ४ उस्सगासपयाणमणहत्थि विसयसुमरियमणत नाणकुसेणधीरो घरेइदित्तंपिथ
गइद ५ एएउश्वहापूरामहिहि उकोमज्जाणिउससत्तो किथातिमूश्रमाणजिण गणधरश्लेरववियेमु ६ किंचित्तंजइनो
णी सम्मदिठीकराति तउत्याइतिरिएहिं यिदुरणुभराकहिग्निश्वणुपाठधम्मो ७ श्वरणसियट्टुणं श्वित्योसणीमहामुहं
दुमि होणगाहिठासिकाले सबन्विसयेगमायणो ८ श्वप्पाणनिक्खोउक्तारिउण गाहवाजलाहं श्वायजाजोगविरसं

रइपएणसुकुमाल विग्गारियसरीर सुणुविंतिजानमुणइ ७८ गुणरयाउयगढसुयुद्धि पाणिगिहयेपयापक्केदयो
नयठवलिउसाह्न पिइपितापिआत ७८ जइसोविसप्परासीया सहुनिसिहुचताढ पसीपुन्नाहिंपिनिगा एहिस्रा
गसमुस्किमो ७९ जइसायमोसघफावो सठग्रसादेइगोधोरा पापणउदापणप विगसामिउसहया ८० असंपकक्क
पणव सत्येहिघसावणहिविधिहेहि दहेविहइस्मतेइसिपि छुकप्पपाममणो ८१ पफपीपपाइफेनि पम्मत्तवीलइहि
निहाणिमा मफघपमस्किपदेइ पिपणियाणमाढिऊाहि ८२ जेणविरागोजयइ ततंसहायरेणकराणफ मुच्चइटसव
ग्गा इत्थपिलाइपुमाठिसा ८३ समुइपेछुयसुविहिपयारे सुपरीसत्यसमग्गोवपामिकठेप पापइरोसवरप विद्रमाति
स्कायपणहुरेहु ८५ तत्थेवपधमिग्गा घम्मगमरपमइहसन्हाए थिस्यपेहुणजद्व विठपविस्वारपकासि ८६ मुणि
वदिपाविदिणस्स रायगिहपरीसहोमहाघोरो अत्तोहारिवसमिह्न नणस्तघुस्याखणिदस्स ८७ रायगिहनिम्मापास्सु
पछि पछिघलगामुणीवउरा सायविह्नकामेप पहारेपहरेगयासिद्धि ८८ उसिपसगररहंनयपे पायसएहुसमपत्ते
हरिसी ख्रमसमपस्सरणिकपा ठस्सपचलपउझेपी ९९ घरडेपजायमूय करोझनवोस्सटूउहायाहीउ कोसबीएक्कु
हिठउलियपूउजइपिसी १०० कुसइयमयदमी घरियाइसहेसमक्काढ सिद्धिसुपात्तिमुसुप्रसुपू अंगुलद्दीओपवासे
अमि ११ गमपुक्कुरसुसमुडानिछी हिपूछिफायिदेसपहिमाए गोविकुविएपदहागइ सकुमाठोजहाजगप १२ तोप

णगाराधिज्जाइयाइ कोसविसोगदमाउ पाउषगयागदिणो सिज्जाएसगरीत्यूढा १४ मज्जाराइमज्जारखमठे थुक्कोर
सपरीसाइउसयिसेसो थीउरायगिहमिठ छुसणमालारादिषत्तो १५ कुनकारकफ़ेनगरेखद गसासागजंतपीडयणा
या णषविहेकारिज्जाइजइ सहियंम्रस्समीसेहिं १६ तइसागत्नाणथुम्र गीएसठियरुमसमुयाण तम्रोछुलाजगमिजइ
कोईनिज्जिणकन्हे १७ मज्जाराइमुज्जारखमठे छुक्कोसपरीमहेउसयिसेसो थीउरोयगिहमिउ छुसणमालारादिठंतो १८
छुनकारकफ़ेनगरसावत्थी ज्जियससतणउनिस्कमणपाफ़ कमसणफासिघारियपयियक चणकुसलेसणकहगसहणं
१९ चपामुणदगविपसाज्ज दुगुत्याजम्रखउरगे कोसयिजसथनिस्कमण थेयणसाज्जपफ़िबाए १ मज्जाराइछदसो
सक्कारोपायठयणठहा अम्राइछुसकालग सागरथमणायदिठतो २ नाणछुसमफ़ताह खजगनीथीछुणिहियामणं
जह्मा दंसणपरीसहम्मिठ छासाफ़जूईउछायरिया ३ यरियापमरणमिउसमुइ णपारोसहोयमुणीधंना थिज्जविठ
णजिण मयउषएसमुइइछुप्पाण ४ उस्सगासपयाणमगइस्थि विसयसुमारियमणत नाणकुसेणधीरो घरेइदित्तंपिय
गइद ५ एएउछहापूरामहिहि उकोम्रजाणिउससत्तो किवासिमूथमाएजिण गणधरछेरघविएमु ६ किंचित्तजइना
णी सम्महिठीकरंति तउस्याहिसिरिएहि विदुरणुघराकहिश्रिछुणुपाठधम्मो ७ छुरणसिवदूण्ण सत्योसणीमहामुठे
हुमि होणगाइउत्तिकालो ससन्निमथेगमायणी ८ छुम्पाणनिदंसोउत्तरिउणं गइन्नम्रजलाठे सायज्जोगविरस

जसपरिन्नकरेसीय ९ खगसुकजिन्नदेहोह सहमूरगिया विपसरीरा कालंकाऊणसुरो उयवसोपयवहिण्णिउं १० सेवोजरुक्तहसहकतारे मुणिहिपाणुपाए नासुरयरयुदिघरो दवोग्गमाणिउ जाह ११ तसीहसेणगपधरयरिय छोऊण दुस्करएण कोहणुतवेपमायकर छजाउमणुस्सेसु १२ जयगपुराहियउक्कोराया मरिऊणसहस्सयपमि सुपसत्यपंथ हत्थी यक्कजयजलभोआह ३१ सोमीहपदमुणिवरपासि मापासघाहिउसुसगो पाणयहालियायोरिय छज्जंनयस्यि हमियमो ४१ रागद्दोसनियमा ठठक्कमसस्सपारपेताहो घासासिऊपपकु छाययत्तसहलपासी ५१ सममगसपानि क्कसोयवणि सिराजालसुसयसरीरो विहरियसप्पणामो मुणिउयएसाविवित्तंतो १६ सोसुन्तपाणिसाहो पकोस घोयमनिवसाहा विरघेरिएणादिठो कुकुहसप्पेणघोरेण १७ जिणवयणमणुगाणिसो साहेसह्लचउविहाहार योसि रिऊणगह दोनायेपाणिणेनमसोय १८ तस्ययणयसुरवर यिन्हिपसीरतपूपसक्कारो मणुजोसासोकिर कठहेमु पुसक्कारिजंते ११ पमंसहिऊपपमहो कालगउसहससमिकपमि सिरितिलरमिवमाणे उक्कोसविईसुराआह २० सुप हिठियायकाहिय एयंसुक्कायजिसामिचा पंठियमरपंमिनहं दढयसिप्पजायण २१ जिणवयणसमुरसहा धीमि जुपगामहाणिसघोरा कासीसक्कोसिण अयसपमुत्तचमुट्ठगापा २२ एगोपाशिमाणवासीजा उवरायिजयंजरसरीरो पीउनंदपक्कूलेसु सिजसक्कमहाहठ २३ हिपवूठमुरुपहीजहग हिसोयपूठजंहम वेराव वसमेकाहणा सुरजावेदवपे

समणो २१ मासीसमाणुपुव्हिं तिरक्कमणुयायिजिसणहाए विसयाणुकंपस्स णरिज्जदेवाउठवमग्गं २५ संघयणम्मि
हजम्मो नवदसपुव्वीसुएणवगाथा इगिणिपाउवगम पडिवज्जइपरिसोसाए २६ निग्गासिप्पाडिकम्मो निरिखवएज-
जाहिज्जहाण्णग पयपाउवगमंस निहारिआणीहारि २७ पाउवगमज्जणिय समवि नमपायपुव्वजहपडिज नवरचरं
प्पउगा कपिज्जजहाफलसरुच्च २८ तसपाणबीयरहिए विच्छिणविरायरथगिलयिसुद्ध एगंतनिद्दोसे ण्णाविग्गिष्णप्र
ज्ञायमरण २१ पुव्वज्जवियवरण दवोसाहरइकोविसायाले मासोचरिमसरीरो नवेसुणाकिविपाविज्जा ३० उप्पन्नेउ
वसग्गे दिव्वेमाणुस्सएतिरिक्खेसु सव्वेपराजिणित्ता पाउवगयाएविहरंति ३१ जहनामअणीयकोसो अमीविखलुअ
न्नोइयमअन्नोसीओ अन्नोदेहाज्जिविज्जाए ३२ पुव्वावरदाहिण उत्तरेणआएहिआवडंताहि जहनविकपइमेज्ज व
हजणाउनविचलंति ३३ पढमम्मियसंघयणे वट्टंतसलकुसमाणा तसिपियवुच्छेउ चउदसपुव्वीणवुच्छेज्ज ३४ पुढवि
दगअगणिमारुअ् वणेसुकोइसाहरइ वावठचत्तदेहो अहाउअंतपरिखिज्जा ३५ देवोनेहेणउदेजा मरणवट्टदमग
णधा जाहयइठीकसा वत्तुसुहाज्ञातिसुहजाया ३६ उवसग्गेतिविहोविय अणुकूलेचेवघहयपडिकूले सम्मंअहियास
तो कम्मखयकारउहोइ ३७ पयपाउअगमइ गिणिपाडिक्कमवा।।यसुत्ते तित्थयरगणहरे हिंयसाहूणायसेवियसुया-
र-३८ सव्वेसुठाए सत्तुयक्खयमाणुसीइ-सव्वाणसव्वहिया अवमेज्जणाहिंसिच्चो ३१,-सव्वमहिविवस्सीह-सव्वेविपरी-

सहेपराइत्ता सव्वेसिंपतिस्यपरा- पाउपगयाउसिद्धिगया ४० एवमेसाउपगारा सीपपउप्पन्नपोगया सद्धिकेंप्पा
उवगया पव्वक्काण्णितिणिकह ५१ सव्वेसिंपउक्कोउ सव्वेसिंपपरमउपपणसङ्गा सव्वेपदेसपिरया पव्वक्काणिमयम
रति ५२ सव्वसुहप्पनाय हं जीवियसासरसव्वमणगार्ड आहाराउरयण नव्विउहृउमममसेय ५३ यिमाहमपपसि
हेसु जलगामिमतिपाजीवा सव्वसव्वाबसह्-आहारङ्गाविसुाउत्ता ५५ तमासिगरयपं सारमनहुमोपपाउं सव्व
सपिडइमा पाउंपगहयाएविहरति ५५ एयपाउयगमनिप्पाउ क्कमासिणाइपन्नसं सेवाकप्पेमयमनु यपमायपरक्कम
समकूपहु ५६ धीरपुरिसपन्नव ? सप्पुरिसनिसेवियएयपरमपम्म धणासिलायलयया निरावयकाणियसाणि ५७ उ
वसिअवापगारा सुजयसियासुत्थनम्मासु गिरिकुहरकंदरासुय विजणसुपसकहंसु ५८ धीयापयपउप्पयान्नी
सासङमयरसजसपयमाय सेलसिलासमपत्या-साहसिउसमठाइ ५९ दीवाउसिरपेसुपसाहिया रायहियासुपुण
सविपत्तासु कमउसिंमहिलादिसुपम्मसिलाकपाधीसु ५० अइमायपाकुउमिरि कंदरसिसमक्कायासु-साहिविउम
इट्ठयिर-धणियसहायगाधोरा ५१ किंपुमसपगारसहाय सेणसपुचसंयहयसम परलोपसक्कमा-सुउसमपो
सट्ठ ५२ सुमहम्मेसुंपसुसिटिउ ....पसुपिसिद्धेसु मियुत्तु ....निसिपसहुगमगो ५३ विज्जा
सिजहूमउ ...एगागिं पाणी ...सिंदुसिरि....पुसुएगागिंडरपे ५४ पावउणसिजपमङ्ग वसहुएगागिउ

हुमोजीवो मूलूणसरीरयाहम तुमुह्मकह्नि उमर्संते ५५ जहवीहातिह्मजीवा। थिविहाणविवगा। वीतइमसंसारगएहि
कोत्रा हविहिासयाह्यत्ने ५६ सायपज्जया निमूर्उ धह्मसु ह्मफ्सोसुनिरंजिरामासु पह्मरिहरिणमहि सपूमह्मकर लोहि
मस्कठायासु ५७ गयगवयखग्गगफय वागहमरस्यस्यजह्मवरियासु तिहुकिककदीविय सनवसभ्याग्रकिणासु ५८
समगहदनिवाफिय निह्मपुलिडाम्रकुफियविणासु यसिउक्षतिरिपत्ते ? जीसणससारचारमि ५९ कत्थयसुहमिगसेथ
ह्म सोह्मफवीसुवयहु।मनमासु वग्घमहावफियण रसियह्महम्नीयएण ६० कत्थ छुह्महदुघ्यस्को जीसणविगरा
छघोरम्रप गोह ह्मासिमहविपघोर रुमहिसवराहविहुघहं ६१ कत्थिहदुहिम्मिकि पक्कसवपालनूपह्मेहि ठालि
उवाहिउयह्मुह मणस्सजम्ममिनिम्मारो ६२ वयहकुफिलमिकत्थह ससारपायऊणनूप्रत्त घह्मसोउह्मियमाणो मय चे
थोइ।विपासिन्तो ६३ विरसह्मारसमाण कत्थहरणसुघाहउह्महय सावयगहेणमिवण जेयजीहम्सुजियधिम्रोह ६४
पह्मविचितविरस दुक्कससारसागरगयण रसियवह्मसरणण कयसदह्मतरगाण ६५ तह्नं पावपगहणमिवक्की सनहा
पहवीयो जहेयासुसागमामिहजलुकिककवायससाहिए सुहोकिजाएदेह ६६ तान निज्जिणिक्खं दे हमुतूणवह्मएजीयो
ह्मयिणासावणिह संलुक्कोदसीहि ६७ तजहवायनमुह्मइ जीयो मरणस्सउह्मियसोवियग्रासोयि तम्हममज्जवजज्जह
धाऊणवस्सअह्मस्सण ६८ एवसगुणित्तयताषु अेरिह्मपजरमरणजावियसइया पावतिकायमयसा मरणसमाहिं इह्मा

नागा ६९ एवंनाविवयविसो सयारवरमुविहियवयावि नायोहिनावणाउ यारसाविषयवयणदिठाउ ७० इहइसोव
ज्झगोवउत्थ मगज्झसुसाज्झयमामि तत्वइनावणाउ यारसिमोयारसगविऊ ७१ समगोयपसाग्रपयया आसनिश्च
पिनावाणिअउ ददसवेगकरीउ ग्रिवेसउउग्नमइ मि ७२ पढमज्झाणिम्मनाग्र सुसरणपणगयग्गुछयत्त ससारमसनया
पिय विविहलोगसहावय ७३ कम्मस्सभासव सवरवनिज्झरणमुसमेयगुण जिणसासणमिवोहिय दुम्नहाविमणम
इश्च ७४ कहठाणाइसुसासणाइ इहचेयद्रलागेव सुरय्युसुरनराइण रिहिविसवासुइवो ७५ म यापिइ इमहहव
ठिएहिपुव्वदाराइ एगयउसहयासोवीइ एगउविसुसाणिस्सा ७६ जयणोइउयपाहिय सपमासपमाणवाइ गहाहि
सजोगाविसाणसो तहपरलोगिहिसहसाहि ७७ वलयिरियफुस्सोसुण सामगोसुसगयावपूसाना इदइस्सघाय
मां सुसासयंजीवियंवव ७८ अस्मणजरामरणजए सुजिएविविहयाहिव सहेसोगामिमसि सरणविमिद्रवरसासणं
मुतु ७९ सासिहियहत्थीहि पस्सुयमिसोहिनिसुमिसेहि सायरणपहरकेहिय वलयपमसेहिओहेहि ८० महपायठ
सठगरण कारणसावयकवाहिणामवू नपजिणपुसोक्केणइ नीइयलेणायिलोगसि ८१ वियिकेइ हिमयलहिय विउा
सुयोमशीवसगेहि नविसझासाउठ मरणाएविऊणसोएइ ८२ पुम्वासिसायपियासयणो वयवसमोसुसयोगा
तमसमुसासएठ मझसिवपिउसयणा ८३ सयमसससयाइ ठाणाजिइमकिठसमहेगोसयगसाविसायठाणे

रयईनेवनाविह ८३ मणुंमिथघवाणह ज्ञोमरइकलुणसयसाण नयणंसुन्नेतिसड चंघुजणोयदाणाइं ८४ इक्कोकरेइ
कम्म फलमविभस्सेकठ समणुहवइ इक्कोजायइ मरइपरलोयं इक्कउजायइ ८५ पत्तेयपत्तेयनियम कम्मफलमणुह
वताण कोकस्सजणसयणो कोकस्सपरजणोजणिठ १६ कोरकेणसमजायइ कोकेणसमयपरभवजायइ कोयाकरेकिं
पा कस्सयकोकंनियत्तेइ ८७ मणुसोअइसणजण सुन्नजयनरगहतुयालजणो नविसोयइसप्पाण किलिस्समाण
जवसमुद्दे ८८ सुन्नइमसरीरअन्नोइ यघयाविमेसुन्ना एयन्नाऊणखम कुसलस्सनजसमकाउ ८९ हाजहमोहिय
मइणा सुग्गइसग्गअजाणमाणेण जीमेनयसमारे सुचिरघाविमियनयकरामि १ जोणिसयसहस्सेसुय सुसयजाय
मयघणगासु सजोगठिप्पउगो पत्ताउस्काणिपयक्काणि ११ सग्गेसुयनरगेसुयमाणु स्सतहातिरिस्कजोणीसुजायम
यंघअकुसोस सारसयरतम १२ निरयतुणायमाणण वहयवमरुधणावणविणा णगायरोगसोगा पत्ताआइसहस्से
सु १३ सोनत्थिइहोगासोलोए यालग्गकोकिमिम्मोवि जम्मणमरणाणय हा सुणेगसोजत्थनयपत्ता १४ सव्वाणिस
हलोए ऊणीदत्ताणिपन्नपुत्ताणि देहोवस्करयरिजोगयाउ दुस्केसुयकासु १५ सयधियघयतसम्म जीवासुणंगसोमसं
विघइयइवेरजणया दासासामीयमेत्तासी १६ लोगसहावोधीधीजत्थ यमायामयाहयइघूया पुत्ताविपयाहोयिपियो
पियाविपुत्ततमणुवेइ १७ जत्थिपिअपुत्तयस्सवि मायाठायालवतुरगयस्स सुठासाइमसइ सोकिकइयरमंग ९८

घेप्पइ जोगाहिय अवाअ गपाउ परमत्थं मारिकण जो पङ्किमी वत्थे सकलेस्सनियम ११ पञ्चमो पुण्णमहं
सइंपकालंमि सम्म दुक्काइ पाविसिइपुणो दुक्क नकराइ जो जणो धम्म १०० धम्म पयिणासइदाणय पनस्वन्न छवि
क्किसमइ ठाणयाक्कमाम दवामणु पावरेओ १ सत्यधम्मकाम आभिय कत्ता पावातन्नमिठाति ममम्म पक्राकउ
वपुनम्मियरा पिस्सुजापि २ सायासकिलेसाण वेराम्मागरोन्न रकावि पङ्कराण दुम्म करा छन्नोसमसुणल्लाण
३ अकिस्याहि यिमपुजे पमायङ्गानपाकिलेसकरा तस्कममुहावजा दुहा सकारायपहुणकामा ४ पन्तिसुहसमाइ हाण
किं नितिकरुहुयनाम ससुरासुरेसुमाणुम निष्पसुविरिस्कजाणीए ५ पञ्चसुरूपीलयाण महसुठायछणप्पयसभाय
तिरिमाणतत्थिमुह नरइयायछ्दवम ६ इच्चासुयासजम्मण वाहि जराजरणरोगसंगोइ अणिनुसमाणले पङ्का
मंखिनसुमत्थि ७ सयाठयसपाए अणुसुरीसाचारियनविठिहे सुहुइमरिस्तसइपुरसरीरम्मिकेच्चाल्य ८ इहमय
सिप्पसप्पो पवणसयपसवेवंठेकणम्मे अप्परिसाविसणो देवायिनुवाणपासेवि ९ पुरिसमदोहपमय कोहकोहदोसे
मिहसमाइंक्के देवा विसमजिनूया तेसु नयसस्सह सुत्थि १० सुरसयदोसेपुणो सुचो सामासपरे जीभो अणुहा विर
किलेसह तया समइंसु सम्म ११ आगइसमलोइ दिपयसवकरा कम्माइ सावद्दारी हूमम गइतिविहेणकर
एणं १२ पिहीलो रेडे पिइरिय कालो समयासम्म समसप्पु मझणावसइहम यिवसमाजोग्रवियोवम्मा १३ रागस्स

मद्दे सस्सय धिरत्थु अनामसद्दहसोवि मायेसुकुमणझनय स्पाउरसिकाच्यणिमसु॥१४॥लोजेणमाणमहयत्यो कज्जनंगणेइ
स्पापसाहियापि च्छइलोहेणलिप्पस्सह सनुमजहागलगलिन्ते १५ च्छयधम्मकामंतिण वियुत्ताअणोपरिच्चयइ साइंक
सहजाहिउ किलस्सइइहपरिजवेय १६ ज्ञतिसछज्जवरसाविणासगाणिपविद्दियाणिपुरिसेस्स उरगमइघउगखिसा गहि
यामसोसहीहाविणा १७ छसयद्वारेहिसधा हिसाइएहिकम्ममासवइ जहनावाइविणा सलियंहिजलउयहिमसे १८
कम्मासवदाराइ निरूम्भियठइइंदियाइय हस्सद्दायकसाया तिविहतिविहेणमुस्कत्थ १९ निग्गहिणकनोएहिं छास
समूलउपाज्ञति च्छहियारेमुक्को रोगाइपच्छाउरजणस्स २० माणेणयसामेणय तम्रोवलेणयवलानिसज्जति इंदिय
विसयकसाया घरियातुरगायरज्जूहि २१ ज्ञतिगुणकारगाइ सुइरजूहिधाणियंतियमियाइ नियगाणिइंदियाइ जइ
णोतुरगोइवमुदता २२ मणवयणकायजोगा जेजाणियाकरणसावियी तिणिवेअतस्सगुण कराज्ञतिसुणमस्सदोसफ
रा॥२३ सम्मत्तमाइपासइ सूएसुसुप्पतूएय कम्ममलेणनलिप्पइ सोसवरियासयक्कुमार २४ घणासमाहियाइसुणंसि
घणाकरमुत्तिगियाइ घणोसुसाइमरग मरतिधम्मागयासिद्धि २० घणाकलत्तनियलेहि विप्पमुक्कामुसत्तसजहा या
ड्डीउवासम्मराम रयरीउविलिज्झाठिय २६॥ घणानकरतितवसं जसजोगेहिकम्ममठविहइ तवसालिलेणमुणिणो॥ घु
अवितिपोराणयकम्म ॥ च्याणस्सपसायसहि उसीलुघजाति उमोमहप्पाणो॥ अमार्कणधीयं ववहारमगोत्रमणरासिंह

इणमीसुगइपहोसु देसितउक्कउजिणवरेहिं तेघन्नाजेपयपइ मणयञ्जपवञ्जति २९ फेइयमायियपहं इहपरलोएयं होइकल्लाण तापयजिणकहियं पडियञ्जइनाणउधम्म ३० जहजहदोसोवरमो जहजहविसएसुहोइवेरग्गं तहतह विणय झासन्न सएयपरम ३१ दुग्गोजपकप्पारे नममाणेहिसुचिरपहेहि दिठोजियइठोणोइसुगइमग्गेकहायिसठो ३२ माणुस्सदेसकुलकाल जाइदियबलायपाणय विन्नाणसिद्धादेसणय दुलहसुसाहूण ३३ पत्तेसुयिपएसु मोहस्सुदएण दुसहोबुपहोकुपहमहापहमेणय विसयसुहणवळोजण ३४ सोयपहोउथलहो जएमाहिरोमहोयहाउ सपासियिपत्थिर वम्होनसमोपमाउमे ३५ जहजहदढप्पइणोसमणोपेरग्धनाविणकुणइ तहतहदुसुत्तत्थाव यहपसमीसएपमु ३६ एगप्पहोरमेपवियद्द परिणामाइगुणपज्जति फरिउपुफट्ठि झहरगईउहग्गसणेसु ३७ध्यारूहायिनाविणाव एवसमेयहसमप्पाउ नाचेमाणोमीसो झावसमायइयेरग्ग ३८ नाविअज्जाणपोहपालिज्ञपपाइरयणमारिसाइ पडिपुण्णपावसमणे झइरायिडिनिपाएहिहि ३९ मुहसुरवसक्कज्ञ निरुवमइमइ दुरूककच्छइतिरियसरित्थ माणुसमाईमज्जयिति ४० ब्रह्मणोयिच्छप्पमुइमाणुस्स पोगटोइसजंत्त सुहुयिउयिमुयइठ कम्मेनमुणोउमुवजणा ४१ जइनामिपहणगठ पत्तेसुसिमिमूढनाविण मलइतिनराडाह माणुस्सजावतइपमा ४२ वपहेमलाविरपस च्यायपरिस्कपहगामत्ती जलइवियोहिडाज दसगइममावपावति ४३ अम्मापियरोजाया मज्जापुत्तावरीरस्सोय जमवा

गरंमिघोरे नज्ञातिताणवसरणव ४४ नविमायानविपपिया मपुत्तदाराचेवयधजणो नविघधणनविघत्ते दुक्कसु
इल्लउवसमति ४५ जहयासयणिज्जगउ दुरकन्नोसगणवधपरिहीणो उम्नत्तइपरियत्तइ उरगोजहझग्गिमझंमि ४६
सुसुइसरीररोगा जम्मणसयसाइणवुहात णहाउरुइसीयवाउए हानिघयोयणगविहा ४७ सोजरामरणाइपरिक्क
म्मोदीरणयायदारिद तहयवेपियविप्पमाउ झुप्पियजणसपउगाय ४८ पयाणियहोसोणिमाणुस्स घज्ञविहाणिह
स्काणि पम्नस्कापिरकत्तो कोनमरहुताविचितन्नो ४९ दद्रूणविाणुससुदुत्तह कइकम्मवोसेण साहासुणमणुरत्ता मरी
णसमुद्देविगाहिनि ५० तेणउहहलोगसुह सुनूणम्माणसासियमहत्त विरातिरकमरणन्नोउ फलोगमूईकरणदोगुच्छ
५१ दारिद्दुरकवेयणघज्ञ विहतन्नान्हखुप्पिवासाण झुरइन्नयसोगसामिय तक्कुरदुन्निरकमरणाइं ५२ एएसितुदुह
ण जपाण्डियस्कसुहतितलोए जपुणझम्मनसुहत्तस्स परुकोसयालोए ५३ जम्मनवुहाहतज्ञासीउ बहपिघदुरकमुक्कि
ठ नयझसुइयसरीर तस्ससणाइंसुकिकज्ञा ५४ जहनिघदुमुप्पन्नो जंजोकफुपापमन्तएमज्ञर तहमुरकसुहपरुक्का
ससारदुहसुहयिति ५५ जेकफुयदुमुप्पन्ना कोझायरकप्पपायवपरुक्का तेसिविसालवझीयि ससग्गाग्रमुरकोय ५६
तहपरतित्थियकीझावि सयविसकुराविमूढदिठीया जिणसासणकप्पतहयर पारुरकासाकिलिस्सवि ५७ तस्सामु
स्कमहातरुसासय सिवफलयसुरकसहेण मुतूणलोगसण पढियरणेणमरियव्व ५८ जिणमयवाविस्साचित्तो लोगसु

हणमीसुगहपहोसु देसिउउस्कउजिणवरेहिं तेघन्नाजेपयपह मणयब्भंपवज्जति २९ जेहेपधाविपव्व इहपरमोव्व
होइक्खाण सापयजिणकहिय पज्जियब्भइजावउपम्म ३० जहजहओओसुरमो जहजहविमणसुहोइधम्मं तह २ वि
पय ष्मामन्नसएयपरम ३१ दुग्गोजपक्मार जममाणेहिमविरपहिं दिठोजियहठोओइसुम्माहमम्मोकहविमहो ३३
माणुस्सदं मकुलकाल जाइदियबलायपाणय विन्नाणसिद्धाइसुमणय दुलहंसुणाइणय ३३ पसनुयिपवज्ज मोहम्मुदएण
तुम्हहोसुपहोकुपज्जमज्जपमपपय विसयसुहण्यलोनप ३४ सोपपहोउब्लहो जएणाहेसो ब्भसोपज्जनु मयाणेविपन
थिर सम्होमसमोपमाउमे ३५ जहजहदट्ठपहुणोसमणपेरग्गजायणकुणह सहतम्हणसुजणाव वहपयर्धायवअपमु
ह३६ एगस्सहोरमेणविहुउ परिणामाज्झणुभरअति कहरिउपुहरिहं ष्मुहरगहइहगमणेसु ३७ धारहयिलायणास
एवसकेभउसमप्पाउ जावेमाणोजीवो जाउसमायहवेरग्गं ३८ जाविअजायपाठ पालिज्जपयाईरपयसरिसाइं प
ठिपुणपावस्समये ष्मुइरासिठिविपाघहिहि ३९ मुहंसुरधमण्णकुह मिरउयमहयहु दुक्ककहइतिरियसरिसं सुणं
सणाईयक्कविलिसा ४० दहुणेविसम्मसुहंमाणुस सेगदोसजणं सुहविसिसमुयहंकु गुम्मेनमुणोइमंदजणा ४१
सुतामपहुणगहं सवेसुसुंसिमुहजाणेपुसुलहविनुराअहंमाणहुसन्नामेतहापमा ४२ सपसेमलाविरपस ज्वायपरि
क्कपुंष्मगणंती नजहाविपोहुहुज नरगइममावपावति ४३ अम्मापियरोजाया जज्जापुत्तासरीरसत्थोव जवसा

गरंमिघोरे नज्ञातिताणयसरणच ४४ नविमायानविपपिया मपुत्तदाराचेत्रबधजणो नविधणनविधन्ने दुक्खसु
गरंमिघोरे नज्ञातिताणयसरणच ४४ नविमायानवियपिया मपुत्तदाराचेत्रबधजणो उम्मत्तइपरियसइ उरगोजहच्छग्गिमसांमि ३६
हुन्तउवसमति ४५ जइयासयणिज्जगठ दुक्खत्तोसयणबधुपरिहीणो उम्मत्तइपरियसइ उरगोजहच्छग्गिमसांमि
च्छुसुहसरीररोगा जम्मणसयसाइणवुहात णहाउराहसीयवाउए हाणिघयोयणगविहा ४७ सोजरामरणाइपरिक्खु
म्मोदीरणयायदारिद्द तइयवेपियविप्पमाउ ञ्जाप्पियजणसपउगाय ४८ पयाणियहोसोणिमाणुस्स यञ्जाविहाणिहुं
रकाणि पञ्चस्कापिरकन्नो कोनमरइतविचितन्नो ४९ दहूणविाणुसंसुहमइ कइकम्मवासेण साहासुणमणुरत्ता मसी
णसमुहेविगाहिति ५० तेगउहहलोगसुह सुतूणम्माणसासियमहठ थिरतिरकमरणन्नोउ ञ्जलोगमूईकरणदोगुच्छ
५१ दारिद्दुक्खवेयणयञ्ज विहतन्ञन्हखुप्पिवासाण ञ्जरहन्नयसोगसामिय तञ्जरदुन्निरकमरणाइ ५२ एएसितुदुह
णं जयफियक्कसुहतितलोए जपुणञ्जाम्नसुहत्तस्स परुस्कोसयालोए ५३ जम्मनवुहाहतञ्जासीउ वहंपिवदुक्खमुक्ति
ठ नयञ्जसुइयसरीर तस्सवणाईसुकिकञ्ज ५४ जहानिमदुमुप्पन्नो जंजोकञ्जुपापिमन्नएमञ्जर तहमुरकसुहपरुक्खा
ससारदुहंसुहथिति ५५ जेकञ्जुयदुमुप्पन्ना कोञायरकप्पपायवपरुका तेसिविसालवल्लीधि सएगोश्रमुरकोय ५६
तहपरतित्थियकोञावि सयविसकुरविमूढदिठीया जिणसासणकप्पतइयर पारुफरासाकिलिस्सवि ५७ तञ्जामु
स्कमहातरुसासय सिवफलयसुस्कसलेण मुतूणलोगसण पञ्जियरणेपमारियहा ५८ जिणमयतावियञ्जाचिही लोगसु

इमलविरेष्वप काउधम्ममिम्मसापे मुक्तेपमत्तविवेसेह ५९ सुगइमहाणिज्जिणप्रयणामपत्तायिव एपसाणकाय
करापिह्रोसमणेप जाणेणेमुसायह्र ६० इतिश्रीमरणविजशीपइन्नकनस्त ॥ सयत् १९१२ पोप शुक्र १ तृतीय
सिथौ कात्या जैनप्रज्ञाकरनाम्नियन्त्रे मुद्रित ।

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बाहादुरस्य आगमसंग्रहे ३३ भाग समाप्त ०



५१ सुणह जहभिजिणत्रयणामयजावियं एणसाण्णाय
[illegible] पइन्नासमत्त ॥ संवत् १९४२ पोप शुक्ल १ पूर्णोप

श्री महावीर सुधर्मा स्वामि

[illegible] श्य आगमसंग्रहे ३६ भाग समाप्त ॥

श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादु

चउसरणपयन्नो २४ देविंदथुय २५ मरिण
आउरपच्चक्खाण २६ भत्तपरिन्नाण ३० चन्दावि

५३८

# ॥ इति दशपयन्न

[illegible]

[illegible]



श्री मखचर सुपमो

श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर

तदुलवयाली २४ देविंदथव २५ पयिन्न का

१३५

॥ इति दशपयन्ना मूलसूत्र समाप्तः ॥

बनारस जैन प्रभाकर प्रेस ] संवत् १९४२ ।